दीपिका:
दशकुमार चरित्रसार

लेखक:-
श्री मंगल देव शास्त्री
साहित्य रत्न

ASHOK BOOK DEPOT, SAHARANPUR

मूल्य १॥।=)

दशकुमारचरितसार

लेखक—

मङ्गलदेव शास्त्री तथा शिवचरण शास्त्री

(साहित्यरत्न) (विशारद)

श्री सनातन संस्कृत विद्यालय, सहारनपुर

प्रकाशक—

हुलाशचन्द जैन

अशोक बुक डिपो, सहारनपुर

सन् १९६०] [मूल्य १॥=)

दशकुमारचरितसार

पृष्ठ १ पैरा १ अस्ति........बभूव।

शब्दार्थ—समस्तनगरीनिकषायमाणा = संसार के सब नगरों की कसौटी के समान। मगधदेशशेखरीभूता = मगध देश का केन्द्र। विरचितारातिसन्तापेन = शत्रुओं के दुःख को उत्पन्न करने वाले। प्रतापेन = ताप से। सतततुलित वियन्मध्यहंसः = दोपहर के सूर्य के समान। घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्य हृद्यनिरवद्यरूपः = अत्यधिक घमण्ड वाले कामदेव के रूप के समान सुन्दर तथा निर्दोष। घनदर्प = अत्यधिक अहङ्कार। कन्दर्प = कामदेव। सौन्दर्य = सुन्दरता, रूप। सोदर्य = समान। हृद्य = सुन्दर। निरवद्य = निर्दोष। सुमती = अच्छी बुद्धि वाली। कुलशेखरमणी = कुल की मुकुट मणि। रमणी = स्त्री। बभूव = थी।

सन्दर्भ—इस गद्यांश में पुष्पपुरी नगरी, राजहंस तथा राजहंस की पत्नी वसुमती की विशेषता दिखाई है।

भावार्थ—विश्व के समस्त नगरों की कसौटी के समान मगध देश का केन्द्र पुष्पपुरी नाम की नगरी है। वहाँ राजहंस नाम का राजा हुआ था जो शत्रुओं को सन्ताप करने वाले प्रताप में मध्याह्न के सूर्य के समान था तथा जिसका रूप सौन्दर्य का घमण्ड करने वाले कामदेव के समान मनोहर एवं अनिन्दनीय था। उस राजा के बड़ी बुद्धिमती एवं विलासिनियों के कुल की मुकुटमणि के समान वसुमती नाम की स्त्री थी।

समासः—समस्तानां नगरीणाम् निकषायमाणा समस्तनगरीनिकषायमाणा (षष्ठी तत्पुरुष)। मगधदेशस्य शेखरीभूता मगधदेशशेखरीभूता (षष्ठी तत्पुरुष) विरचितः अरातीनां सन्तापो येनासौ तेन विरचितारातिसन्तापेन (बहुव्रीहि)। सततम् तुलितः वियन्मध्यहंसो येनासौ सः सततुलितवियन्मध्यहंसः (बहुव्रीहि)। घनः दर्पो यस्य सः घनदर्पकन्दर्प (बहुव्रीहि)। घनदर्पकन्दर्पस्य यत्सौन्दर्यं तस्य सौन्दर्यं हृद्यं निरवद्यम् रूपं यस्य सः घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपः (बहुव्रीहि)। लीलावतीनां

शस्त्रों के बदले शास्त्रों से तथा हाथों के बदले हाथों से युद्ध होने लगा।

समास—परस्परस्य अभिहतं सैन्यं यस्मिन तत् परस्पराभिहतसैं (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २ पैरा ७ तत्र·········प्रतिष्ठापयामास।

शब्दार्थ—तत्र = युद्ध में। प्रक्षीणसकलसैन्यमण्डलम् = जिस समस्त सेना मारी जा चुकी है। जीवग्राहमभिगृह्य = जीवित को प कर। प्रतिष्ठापयामास = बैठा दिया।

भावार्थ—युद्ध में मगधराज राजहंस ने समस्त सेना के जाने पर बचे मालवेश्वर मानसार को जीते हुये को पकड़ कर कृपा क फिर भी उसको अपने राज्य पर बैठा दिया।

समास—प्रक्षीण समस्तं सैन्यमण्डलं यस्य स तं प्रक्षीणसमस्तसै मण्डलम (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २ पैरा ८ ततः·········अर्चयामास।

शब्दार्थ—रत्नाकरः = समुद्र। मेखला = तगड़ी, सीमा। इला पृथ्वी। अनन्यशासनाम् = अपने अधीन करके। शासद् = शासन क हुआ। अर्चयामास = पूजा की।

भावार्थ--उसके बाद वह मगधराज समुद्रपर्यन्त पृथ्वी को अपने अ करके शासन करता हुआ अनपत्य होने के कारण सम्पूर्ण संसार के आ कारण भगवान नारायण की निरन्तर सेवा करने लगा।

समास—रत्नाकरो मेखला यस्या ताम रत्नाकरमेखलाम् (बहुव्रीहि न विद्यते अन्यस्य शासनं यस्यां सा ताम् अनन्यशासनाम् (बहुव्रीह)

पृश्ठ २ पैरा (९) अथ·······································

शब्दार्थ—अग्रमहिषि = पटरानी। कल्पवल्लीफलम् = कल्प वृक्ष फल। आप्तुहि = लेवो। दयितमनोरथपुष्पभूतम = पति के मनोर्थ का पु के समान हुआ। सम्पन्न्यक्कृताखण्डलः = सम्पति से इन्द्र को तिरस्कृत कर दिया जिसने। व्यधत्त-किया। गुणौहीन = गुणी। व्यज्ञा आवेदन किया। देवसन्दर्शनलालसमानसः = आप के दर्शनों के लिये विरञ्च्यार्चनार्हो यतिः–पूजा करने के योग्य सन्यासी। अध्यास्ते–खड़ा है

प्रश्न—इस गद्यांश में राजवाहन के जन्म से सम्बन्ध रखने व

सुमति के स्वप्न का वर्णन है।

भावार्थ—एक दिन उसकी पटरानी ने ब्राह्ममुहुर्त में "हे देवी? राजा ने तुम कल्प वृक्ष के फल को लेवो" ऐसा स्वप्न देखा। उसके बाद उसने पति के मनोरथ के पुष्पभूत गर्भ को धारण किया। ऐश्वर्य में इन्द्र से भी बढ़े हुए राजा ने भी मित्र राजमण्डल को बुला कर अपनी सम्पत्ति एवं मनोरथ के अनुरूप रानी की सीमान्तोत्सव किया। एक दिन गुणी मगध-राज अपने हितकारी निज मन्त्री, एवं पुरोहितों के साथ सभा में सिंहा-सन पर बैठा था उसी समय द्वारपाल ने हाथ जोड़ कर तथा मस्तक झुका कर आवेदन किया। हे देव ? आपके दर्शन के लिए पूजा के योग्य कोई सन्यासी द्वार पर खड़ा है।

समासः—दयितस्य योमनोरथः दयितमनोरथः (कर्मधारय) सम्पदा न्यक्कृत आखण्डलो येनासौ सम्पन्नक्कृताखण्डलः (बहुव्रीहि) सुहृदां नृपाणां मण्डल सुहृन्नृपमण्डलम (षष्ठी तत्पुरुष) ललाटनेह न्यस्तोऽञ्ज-लिर्येनासौ ललाटतटन्यस्ताञ्जलिः तेन (बहुव्रीहि) देवस्य दर्शनं देवर्शनम (षष्ठी तत्पुरुष) देवर्शने लालसं मानसं यस्य सः देवदर्शनलालसमानसः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३ पैरा (१०) तद्.......................अनायि।

शब्दार्थः—संयमी = सन्यासी। अनायि = ले आया।

भावार्थ—आज्ञा पाकर द्वारपाल उससन्यासी को राजा के पास ले आया।

पृष्ठ ३ पैरा (११) भूपतिः.......................इति।

शब्दार्थ—आयान्तम = आते हुये को। विलोक्य = देख कर। सम्य-ग्ज्ञातः = अच्छी तरह समझ लिया। तदीयगुढचारभावेः = उससे सम्बन्ध रखने वाले गुप्तचर का भाव (गुप्तचर)। निखिलम् = सम्पूर्ण। अनु-चरनिकरम् = नौकरों के समूह को। विसृज्य = हटा कर। मन्त्रिजनसमेतः = मन्त्रियों के साथ। प्रणतम् = प्रणाम करते हुये। अभाषत = बोले। सपदेशम् = कपट वेश से। भ्रमन् = घूमते हुये। अभिज्ञातम् = जाना। कथयतु—कहो।

भावार्थ—राजा भी उसको आते हुये देख कर यह कोई गुप्तचर है ऐसा समझ कर, सब नौकरों को हटवा कर मन्त्रियों सहित प्रणाम करते हुये यति को हंस कर बोला, हे तापस ? इस कटपवेश से देशों में घूमते हुये आपने कोई बात जानी हो तो कहो।

समासः—सम्यग्ज्ञातः तदीयः गूढचरभावो येनासौ सम्यग्ज्ञाततदीयगूढचरभावः (बहुव्रीहि)। अनुचराणां निकरम् अनुचर निकरम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ३ पैरा (१०) तेन.................प्रत्यागमम।

शब्दार्थ—अभाषि=कहा। देवस्य=आपकी। आदाय=स्वीकार करके, शिरोधार्य करके, निर्दोषम्=अशंकनीय। प्रविश्य=प्रवेश करके गूढरम्=अत्यन्त गुप्त। उदन्तजातम्=वृत्तान्त समूह विदित्वा-जानकर प्रत्यागमम्=आया हूँ।

प्रसंग—राजा के पूछने पर सन्यासी वेशधारी गुप्तचर ने राजा को मालव देश के गुप्त समाचार सुनाये।

भावार्थ—सन्यासी बोला देव ? आपकी आज्ञा शिरोधार्य कर और अशंकनीय इस वेश को स्वीकार करके मालवेन्द्र के नगर में प्रवेश कर वहां छिपकर उस राजा के सब समाचारों को जान कर आया हूँ।

समासः—मालवेन्द्रस्य नगर तस्मिन् मालवेन्द्रनगर (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ३—४ पैरा (१३) मानी ....इति।

शब्दार्थ—मानी=अभिमानी। पराजयमनुभूय=पराजय का अनुभव करके, पराजय से लज्जित होकर। समाराध्य—अराधना करके, पूजा करके तपः प्रभावसन्तुष्टात्—तप करके प्रभाव से सन्तुष्ट करके। अस्मात्—शङ्कर से। एकवीरारातिघ्नी=प्रधान वीर को मारने वाली। भयप्रदाम्=भय प्रद। आत्मानम=अपने को। अप्रतिभटम=योद्धाओं में बेजोड़ मन्यमानः=मानता हुआ। अभियोक्तुम्=लड़ने के लिये। उद्युङ्क्ते =उद्योग कर रहा है। निश्चिततत्कृत्यैरमात्यैः=विचारधारा द्वारा एक होकर मन्त्रियों ने। निरुपातेन=उपाय रहित। दैवसहायेन=देवता की

हायता से। अराति:=शत्रु । असाम्प्रतम्=असामयिक। दुर्गसंश्रत:
=दुर्ग का श्रश्रय। कार्य:=करना चाहिये।

भावार्थ—महाभिमानी मानसार आपसे पराजय का अनुभव करके हाकाल निवासी एवं तप से संतुष्ट करके प्रधान वीर को मारने वाली यप्रद गदा को प्राप्त करके अपने को योद्धाओं में बेजोड़ मानता हुआ ापसे लड़ने के लिए उद्योग कर रहा है। इसके बाद क्या कर्त्तव्य है ाप जानें। इस कथन को सुनकर विचार द्वारा एक होकर मन्त्रियों ने जा से आवेदन किया देव ? शत्रु निरुपाय होकर देवता की सहायता प्त कर लड़ने के लिये आ रहा है अत: इस समय हम लोगों का युद्ध सामयिक होगा। इस समय तो दुर्ग काही आश्रय करना चाहिये।

समास:—तपस: प्रभाव: षष्ठी तत्पुरुष; तेन संतुष्ट तस्मात् तप: भाव-सन्तुष्टात् (तृतीया तत्पुरुष) निर्नास्ति उपयोयस्त स: तेन निरुपायेन बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४ पैरा (१४) तै:········· ···············बभूव।

शब्दार्थ—बहुधा=अनेक प्रकार से। विज्ञापितोऽपि=समझाने पर ी। अखर्वेण=अत्यधिक। अकृत्यम्=परवाह न करके। अनादृत्य=स्वीकार करके। प्रतियोद्धु मना=युद्ध की इच्छा वाला।

भावार्थ—इस प्रकार अमात्य वर्ग के बहुत समझाने पर भी अखर्व र्व से युक्त राजा उनके कहने की परवाह न करके लड़ने के लिये तैयार गया।

पृष्ठ ४ पैरा (१५)मानसार:·········प्रविवेश।

शब्दार्थ—लोद्धृ मनसामग्रीमूय=यौद्धाओं में मुखिया होकर। ामग्रीसमेत=युद्ध सामग्री के साथ। अक्लेशम=बिना क्लेश के। विवेश=घुस गया।

भावार्थ—मानसार भी योद्धाओं में अग्रणी होकर युद्ध सामग्री के ाथ बिना क्लेश के मगध देश में घुस गया।

पृष्ठ ४ पैरा १६ तदा···············निवेशयामासु:।

शब्दार्थ—कथंचिद्=किसी प्रकार। अनुनीय=मनाकर। असाध्ये

=अगम्य। अवरोधान्=रानियों को। मूलबलरक्षितान=प्रधान से
की रक्षा में। निवेशलामासु:=भेजवा दिया।

भावार्थ—मानसार के आने की बात को सुनकर मन्त्रियों ने भू
के इन्द्र मगधेश को किसी प्रकार मनाकर अन्तःपुर की रानियों को प्र
सेना की रक्षा में शत्रुओं से अगम्य विन्ध्याटवी में भेजवा दिया।

समास—मूलबलेन रक्षितान मूलबलरक्षितान् (तृतीया तत्पुरुष)

पृष्ठ ४ पैरा १७ राजहंसः...............रुरोध।

शब्दार्थ—प्रशस्त=अत्युत्कृष्ट। वीतदैन्यः=दैन्यरहित। तीव्रगत्या
शीघ्रता से। निर्गत्य=युद्ध के यिए निकल कर। अधिकरुषम्=अत
धिक क्रुध हुए। द्विषम्=शत्रु को। रुरोध=घेर लिया।

भावार्थ—राजहंस ने भी अत्युत्कृष्ट एवं दैन्यरहित सेना को स
लेकर बड़ी शीघ्रता से युद्ध के लिए निकल कर अत्यन्त क्रोधी शत्रु
घेर लिया।

समास—प्रशस्तैः वीतदैन्यैः सैन्यैः समेतः प्रशस्तवीतदैन्यसैन्यस
(तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४ पैरा १८ मालवनाथः..........................प्राज्यम्।

शब्दार्थ—विजयलक्ष्मीसनाथः=विजयलक्ष्मी को प्राप्त करके सम
प्राज्यम्=प्रजा को।

भावार्थ—मालवेश्वर भी विजयलक्ष्मी को प्राप्त करके समस्त म
राज्य को आक्रान्त करके पुष्पपुर में राजा बनकर बैठ गया।

समास—जयलक्ष्म्या सनाथः जयलक्ष्मीसनाथः (तृतीया तत्पुरुष)

पृष्ठ ४-५ पैरा १९ तत्र...................अस्थायि।

शब्दार्थ—समन्तादन्वीक्ष्य=चारों तरफ खोज करने पर भी अ
वलोकितवन्तः=न देखकर। दैन्यवन्तः=दीनता के साथ। देवीम्
महारानी। अवापुः=पास गये। क्षतिं=नाश। उद्विग्ना=व्याकुल
शोकसागरमग्ना=शोक सागर में डूबी हुई। रमणानुगमने=पति
पीछे जाने में, सती होना। मतिंव्यधत्त=निश्चय करना। भूरमणः
राजा। सार्वभौमोऽभिरामः=सम्पूर्ण विश्व में सुन्दर चक्रवर्ती। उत्
हीनया=उत्सव शून्य। तुष्णीमस्थायि=निश्चेष्ट होना।

पृष्ठ ५ पैरा २० अथ..................आह्वयत्।

शब्दार्थ—अर्धरात्रे=आधी रात। शोकपारावारम्=शोक समुद्र को। [illegible]रम्=दुस्तर। उत्तर्तुम्=पार करने में। अशक्नुवती=असमर्थ। [illegible]रीयार्धेन=ओढने के वस्त्र से। बन्धनम्=फांसी। विरच्य=बनाकर। [illegible]कामाभिरामा=मरने के लिए उद्यत। साश्रुकण्ठा=आंसुओं से कण्ठ वाली। व्यलपत्=रोने लगी। लावण्योपमितपुष्पसायकः=[illegible]दरता में कामदेव के समान। पुष्पसायकः=कामदेव। भाविन्यपि=[illegible]गे आने वाले। निश्चिन्वानः=निश्चय करके। आह्वयत्=बुलाया। [illegible]तेसाधनम्=मरने का चिन्ह।

संदर्भ—इस गद्यांश में वसुमती के विलाप का वर्णन है।

भावार्थ—इसके बाद आधी रात में शोक के समुद्र को पार करने असमर्थ ओढने के वस्त्र से फांसी बनाकर मरने को उद्यत होकर [illegible]ांसुओं से अवरुद्ध कण्ठ वाली वसुमती विलाप करने लगी। सुन्दरता कामदेव के समान राजा आप ही मेरे अगले जन्म में पति बनो। [illegible]गधेश्वर विलाप को सुनकर देवी का ही यह विलाप है ऐसा निश्चय [illegible]रके धीरे से उसको बुलाया।

समास—मृतेः साधनम् मृतिसाधनम (षष्ठी तत्पुरुष)। लावण्येन उप[illegible]तः पुष्पसायक येनासौ सः तत्सम्बोधने लावण्योपमितपुष्पसायक [illegible]बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २ पैरा २१ सा..............दर्शयत्।

शब्दार्थ—ससम्भ्रमम=शीघ्रता से। आगत्य—आकर। अमन्द-[illegible]दानन्दः—अत्यधिक हर्ष। सम्फुल्ल—खिल गया। अविकस्वरेण—[illegible]स्पष्ट स्वर से। आहूय—बुलाकर। तम्—राजा को। अदर्शयत्—दिखाया।

भावार्थ—रानी ने शीघ्रता से आकर अत्यधिक हर्ष से खिले हुए [illegible]वदनारविन्द वाली ने स्पष्ट एवं उच्च स्वर से मन्त्रियों एवं पुरोहितों को बुलाकर उन्हें राजा को दिखाया।

समास—अमन्देन हृदयानन्देन सम्फुल्लं वदनारविन्दं यस्याः सा [illegible]न्दसम दयश्र नहृद्‌ फुल्लवदनारविन्दा (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ५ पैरा २२ राना..............................इति ।

शब्दार्थ—अभाणि=कहा, निवेदन किया । रथ्यचय:=घोड़े सारथ्यपगमे=सारथि के न रहने से । रभसात्=तेजी से । अनयत् ले आये ।

भावार्थ—मन्त्रियों ने राजा से निवेदन किया कि राजन् ! माल होता है घोड़े सारथि के न रहने से रथ को वेग से बन में ले आये ।

पृष्ठ ५ पैरा २३ तत्र..............................अकथयत ।

शब्दार्थ—निहतसैनिकग्रामे=सम्पूर्ण सेना के मारे जाने पर । ग्र =समूह । संग्रामे=युद्ध में । दयार्हानेन=दया रहित होने से । ताडि =मारी । मूर्च्छामागत्य=बेहोश होकर । निशान्तपवनेन=प्रा कालीन वायु से । बोधित:=जगा । अकथयत्=कहा ।

भावार्थ—युद्ध में सम्पूर्ण सेना के मारे जाने पर मालव नरेश निर्दय होकर गदा मारी, जिससे मूर्च्छित होकर इस वन में आ प्रात:कालीन वायु से जगा हूँ यह राजा ने कहा ।

समास:—निहत: सैनिकानां ग्रामो यस्मिन् तस्मिन् निहतसैनि ग्रामे (बहुव्रीहि) । निशान्तस्य पवन: तेन निशान्तपवनेन (षष्ठी तत्पुरुष

पृष्ठ ६ पैरा २४ तत:..............................अकारि ।

शब्दार्थ—मन्त्रिनिवहेन=मन्त्रियों के समूह से । शिविर=विश्र स्थान, तम्बू । अपनीताशेषशल्य:=जिसके सम्पूर्ण बाण निकाल दिये विरोपितव्रण:=मरहम पट्टी करना । अकारि=किया ।

भावार्थ—उसके बाद मन्त्री वर्ग राजा को शिविर में ले आ तथा वहाँ पर उसके शरीर से बाण निकाल कर और मरहम पट्टी कर उसको शीघ्र अच्छा कर दिया ।

समास:—अपनीतानि अशेषाणि शल्यानि यस्य स: अपनीताशे शल्य: (बहुव्रीहि) ।

पृष्ठ ६ पैरा २५ तया..............................समबोधि ।

शब्दार्थ—मत्याकलितया=बुद्धि युक्त । समबोधि=समझाया ।

भावार्थ—वसुमति ने अपनी बुद्धि से राजा को समझाया ।

५ ६ पैरा २६ देव..................इति ।
ार्थ—तेजोवरिष्ठः=श्रेष्ठ । गरिष्ठः=प्रतापी । जलबुद्बुद्
= जल के बुलबुले के समान । सम्पत्=राजलक्ष्मी । तडिल्लतेव=
की तरह । सहसा=अकस्मात् । उदेति=आती है । विनश्यति
जाती है, नष्ट हो जाती है । दैवायत्तमेव=भाग्याधीन ही ।
म्=जानना चाहिये ।
र्थ—इस गद्यांश में वसुमती राजा को समझाती हुई कह
—
ार्थ—हे देव ! संसार के राजाओं में श्रेष्ठ एवं प्रतापी आप
न्ध्यवन में पड़े हुए हो । इससे यह सिद्ध होता है कि राजलक्ष्मी
ुलबुलों की तरह बिजली के समान अकस्मात् आती है और
चली जाती है । इसलिये सब बातें भाग्य के अधीन हैं ।
सः—तेजसा वरिष्ठ तेजोवरिष्ठः (तृतीया तत्पुरुषः) । जलस्य
जलबुद्बुदम् (षष्ठी तत्पुरुष) जलबुद्बुदेन समाना जलबुद्-
ा (तृतीया तत्पुरुष) ।
६ पैरा २७ ततः.....................इति ।
ार्थ—सकलसैन्यसमन्वितः=सम्पूर्ण सेना से युक्त । तपो-
ानम्=तप से देदीप्यमान, चमकता हुआ । तपोधनम्=
निज=अपने । अभिलाषा=मनोरथ । वाप्तिसाधनम्=पूर्ण
ा । कृतातिथ्य=अतिथि सत्कार किया हुआ । निजराज्या-
=अपने राज्य की इच्छा वाला । मितभाषी=कम बोलने
ोमकुलावतंसः=चन्द्र वंश का भूषण । अभाषत=कहा ।
=जीत कर । अनुभवति=भोग कर रहा है । उन्मूलयिष्यामि=
ाड़ दूँगा ।
—इस गद्यांश में राजहंस का वामदेव के आश्रम में जाने का
राजहंस वामदेव के आश्रम में गया तथा वामदेव से अपनी
है ।
र्थ—उसके बाद राजहंस समस्त सेना को साथ लिये हुए अपने

मनोरथ को पूर्ण करने वाला समझ कर तप से देदीप्यमान वा
आश्रम में गया। वहाँ पहुँच कर मुनि को प्रणाम करके तथा मुं
अतिथि सत्कार किये हुए अपने राज्य की अभिलाषा वाले, क
वाले चन्द्रवंश के भूषण राजहंस ने मुनि को कहा कि भगवन्
सार प्रवल सेना से मुझे जीत कर मेरे राज्य का भोग कर रहा है
प्रकार मैं भी आपकी कृपा से उग्र शत्रु को उखड़ दूँ इसी कारण
वान होकर आपके पास आया हूँ।

पृष्ठ ६ पैरा २८ ततः.................इति।

शब्दार्थ—शरीरकार्श्यकारिणा=शरीर सुखा देने वाले।
=तप को रहने दो। वसुमतीगर्भस्थः=वसुमती के गर्भ में
सकलरिपुमर्दनः=सम्पूर्ण शत्रुओं को नष्ट करने वाला। सम्भ
=उत्पन्न होगा। कञ्चन=कुछ। तुष्णीमास्व=शान्त रहो।

भावार्थ—राजा की बात सुनकर तपस्वी बोला सखे!
सुखा देने वाले तप को रहने दो वसुमती के गर्भ से सम्पूर्ण श
नष्ट करने वाला पुत्र अवश्य उत्पन्न होगा। अतः कुछ
शान्त रहो।

पृष्ठ ७ पैरा २९ गगन.................अतिष्ठत।

शब्दार्थ—गगनचारिण्यपि वाण्या=आकाश वाणी ने भी
मेतत्=यह सत्य है। अवाचि=कहा।

भावार्थ—आकाश वाणी ने भी "यह सच है" ऐसा
भी मुनि के वाक्य को मान गया।

पृष्ठ ७ पैरा ३० ततः.................अवर्धत।

शब्दार्थ—सम्पूर्णगर्भदिवसा=गर्भ के दिन पूरे होने पर
=शुभ मुहूर्त में। सकल लक्षण लक्षितम्=सम्पूर्ण लक्षणों
सुतम्=पुत्र को। असूत=उत्पन्न किया। ब्रह्मवर्चसेन=ब्र
तुलितवेधसम्=ब्रह्मा के समान। पुरोधसम्=पुरोहित को।
आगे करके। कृत्यवित्=समय के अनुसार कार्य करने वाला
=पुत्र। समजायन्त=उत्पन्न हुए। बालकेली=बालक्रीड़ा,

खेल। अवर्धत=बढ़ने लगा।

सन्दर्भः—जब आकाश वाणी ने भी यह कहा कि वसुमती के गर्भ से सम्पूर्ण शत्रुओं को नष्ट करने वाला बालक उत्पन्न होगा तो राजा ने मुनि की बातों को मान लिया तथा समय आने पर वसुमती ने पुत्र उत्पन्न किया।

भावार्थ—उसके बाद गर्भ के दिन पूरे होने पर वसुमती ने शुभ मुहूर्त में सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त पुत्र उत्पन्न किया। ब्रह्मतेज में ब्रह्मा के समान पुरोहित को आगे करके अर्थात् पुरोहित से संस्कार करा करके कृत्यवित् राजा ने सुकुमार बालक का नाम राजवाहन रखा। उसी समय सुमति, सुमित्र, सुमन्त्र, मन्त्रियों के भी प्रमति, मित्रगुप्त, विश्रुत नाम के पुत्र उत्पन्न हुए। राजवाहन अपने मित्र मन्त्री पुत्रों के साथ खेलता हुआ बढ़ने लगा।

समास—सम्पूर्णाः गर्भ दिवसा यस्याः सा सम्पूर्णगर्भदिवसा (बहुव्रीहि)। सकलैः लक्षणैः लक्षितम् सकललक्षणलक्षितम् (तृ० तत्पु०)।

पृष्ठ ७ पैरा ३१ अथ.................................विलोकिता।

शब्दार्थ—रसेन=अनुराग से। नयनानन्दकरम्=आँखों को अच्छा लगने वाला। समर्प्य=समर्पित करके। कुशसमिधानयनाय=कुशा और लकड़ियों को लाने के लिये। अशरण्या=असहाय। व्यक्त-कार्पण्या=दीन, जिससे दीनता प्रकट हो रही हो। अश्रुमुञ्चन्ती=रोती हुई। वनिता=स्त्री। विलोकिता=देखी।

भावार्थ—इसके बाद एक दिन कोई तपस्वी अनुराग से नयनों को सुहावना मालूम होने वाला एक सुकुमार बालक को राजा को समर्पित करके बोला हे भूवल्लभ! कुशा और समिधा लेने के लिए मैं बन में गया था वहाँ पर एक असहाय दीन एवं रोती हुई स्त्री को देखा।

समास—नास्ति शरण्यं यस्याः सा अशरण्या (बहुव्रीहि)। व्यक्तं कार्पण्यं यया सा व्यक्तकार्पण्या (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ७-८ पैरा ३२ निर्जने.................................अभ्यगात्।

शब्दार्थ—किन्निमित्तम्=क्यों। रुद्यते=रो रही हो। पृष्टा=पूछने पर। करसरोरुहैः=कर कमलों से। प्रमृज्य=पोंछ कर। निजसुहृदः=

अपने मित्र की। सीमन्तिनी=स्त्री पुत्र के साथ। योद्धुम्=युद्ध करने के लिये। अभ्यगात्=आगया।

भावार्थ—मुनि बोला कि मैंने पूछा तुम इस निर्जन बन में क्यों रो रही हो तब उसने अपनी अँगुलियों से आँसू पोंछ कर कहा कि हे मुनि! कान्ति में कामदेव के समान मिथिलेश अपने मित्र मगधराज की स्त्री के सीमन्त महोत्सव के लिए स्त्री पुत्रों सहित आकर पुष्पपुर में ठहरे हुए थे। इसी बीच में शिव की आराधना करने वाला मालवेश मगधराज से युद्ध करने के लिये वहाँ आगया।

समासः—लावण्येनजितः पुष्पायको येनासौ तस्मिन् लावण्यजित पुष्पसायके (बहुव्रीहि)। पुत्राश्च दाराश्चपुत्रचयदाराः (द्वन्द) तैः समन्वितः तस्मिन् पुत्रदारसमन्विते (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ पैरा ३३ तत्र ....अध्यलीयत।

शब्दार्थ—प्रख्यतयोः=वीरता में प्रसिद्ध। संख्ये=युद्ध में। सुहृत्-सहाय्यकम=मित्र की सहायता। कुर्वाणः=करता हुआ। विदेहेश्वरः=मिथिलेश। जयवता=विजयी। अभिगृह्य=पकड़ कर। विसृष्टः=छोड़ा हुआ। हतावशेषेण=मरने से बची हुई। शून्येन=शस्त्रों से शून्य होकर दुःखी। गच्छन्=जाते हुए। अधिकबलेन=अत्यधिक शक्तिशाली। शबरबलेन=भीलों की सेना से घिरा हुआ। पलायिष्ट=भाग गया। तदीयः=उसके। अर्भकयोः=लड़कों की। यमयोः=जुड़वा, धात्रीभावेन धाया। मद्दुहिता=मेरी लड़की। अनुगन्तुम=पीछे चलने में। अक्षमे=असमर्थ। विवृतवदन=मुँह फैलाये हुये। आघ्रातुम्=खाने को। आगवतान्=आया। उदग्रग्राविण=ऊँची नीची। स्खलन्ती=लड़खड़ाती। मदीयपाणिभ्रष्टः=मेरे हाथ से छुट कर गिरा हुआ। कपिलाशवस्य=कपिला शव की। क्रोडम=गोद में। अभ्यलीयत=छिप गया।

प्रसङ्ग:—मुनि राजहंस को उस बालक की वह कथा सुना रहा है जो उसे उस रोती हुई स्त्री ने सुनाई थी।

भावार्थ—वहाँ पर वीरता में प्रसिद्ध दोनों योद्धाओं में युद्ध होने

गा। मित्र की सहायता करते हुए मिथिलेश प्रहारवर्मा को विजयी
त्रु ने पकड़ लिया। तब पुण्य के बल से उत्पन्न शत्रु की कृपा से छुट
र बची खुची एवं दुःखी सेना को साथ लेकर अपने नगर की ओर
ल दिया। इसी बीच में दुर्गम वन मार्ग से जाते हुए अधिक शक्ति-
ाली भीलों की सेना का सामना करना पड़ा किन्तु प्रधान सेना की
क्षा में अन्तःपुर की स्त्रियों की रक्षा करते हुए उपद्रव से बचकर भाग
ये। उनके ही जोड़ले लड़कों की धाय मैं और मेरी पुत्री तीव्र गति से
ाजा के पीछे जाने में असमर्थ हो गई। वहाँ पर साक्षात् क्रोध के समान
ोई व्याघ्र मुँह फैलाये हुए मुझे खाने के लिए आगया। डरी हुई मैं
ँची नीची भूमि पर लड़खड़ाती गिर पड़ी। मेरे हाथ से छुटकर गिरा
'आ बालक किसी कपिलाशव की गोद में छिप गया।

तीव्रा गतिर्यस्य सः तम् तीव्रगति (बहुव्रीहि) विवृतं वदनं येनासौ
वेवृतवदनः (बहुव्रीहि)। कपिलायाः शवस्य कपिलाशवस्य (षष्ठी तत्पु०)

पृष्ठ ८-९ पैरा ३४ तत्.............................निरगात्।

शब्दार्थ—शवाकर्षिणः=शव को खींचने वाले। अमर्षिणः=क्रुद्ध
ुये। वाणासनयन्त्र=धनुष से। मुक्तः=छुटे हुए। अपाहृत=हरण
कर लिये। लोलालकः=चञ्चल केश वाले। उपानीयत=ले गये।
कुमारमपरम्=दूसरे राजकुमार को। उद्वहन्ती=लिये। मोहगता=
मूर्च्छित अवस्था में। वृष्णिपालेन=ग्वाले ने। आवेश्य=लाकर प्रवेश
कराके। विरोपितव्रणा=औषधादि से चिकित्सा की हुई। क्षमाभर्तुः=
राजा। अन्तिकम्=पास। उपतिष्ठासुः=जाने की इच्छा। असहाय-
तया=अकेली होने से। अनभिज्ञतया=लापता होने से। व्याकुली-
भवामि=दुखी हूँ। निरगात्=चली गई।

भावार्थ—उस शव का आकर्षण करने वाले क्रुद्ध व्याघ्र का धनुष
से छुटते हुए वाण ने काम तमाम कर दिया और चञ्चल केश वाले
बालक को शबर न जाने कहाँ ले गये। बालक को लिये मेरी लड़की भी
न जाने कहाँ चली गई। मुझे मूर्च्छित देखकर कोई कृपालु ग्वाला
अपने घर ले आया तथा उसने मेरे घावों की मरहम पट्टी की। अब मैं

स्वस्थ हो गई हूँ और राजा के पास जाना चाहती हूँ किन्तु अकेली औ लड़की के लापता होने से दुःखी हूँ। पर जो हो मैं अकेली स्वामी पास जाऊँगी। इस प्रकार कहती हुई वह चली गई।

समास—बाणासनयन्त्रात् मुक्तः बाणासनयन्त्रमुक्तः (पञ्चमी तत्पु०) लोला अलका यस्य सः लोलालकः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ६ पैरा ३५ अहमपि..............................प्रागाम्।

शब्दार्थ—विपन्निमित्तम्=विपत्ति से। विषादमनुभवन्=दुःख अनुभव करता हुआ, दुखी हुआ। अन्वयांकुरम्=वंश के अँकुर अन्विष्यन्=खोज करता हुआ। प्रागाम्।

भावार्थ—मैं भी आपके मित्र विदेहनाथ की विपत्ति से दुः होकर उसके वंश के अँकुर की खोज करता हुआ चला तो एक सुनसं देवी के मन्दिर में पहुँचा।

समास—विपत् निमित्तं यस्य सः तम्। अन्वयस्य अँकुरम् अन्वय कुरम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ६ पैरा ३६ तत्र..............................अमच्छम्।

शब्दार्थ—देवतोपहारम्=देवी के लिये बलि चढ़ाना। किराताः भील। किरोत्तमाः=श्रेष्ठ किरातों। घोर प्रचारे=चलने के भयङ्कर। कान्तरे=बन में। स्खलितपथः=रास्ते में भटक कर। विरम् सुरोऽम्=बुढा ब्राह्मण। निक्षिप्य=बैठा कर। मार्गान्वेषणाय रास्ता खोजने के लिये।

भावार्थ—उस काली मन्दिर में कुमार को देवी की भेंट करते किरातों को मैंने कहा। हे श्रेष्ठ किरातो! मैं बुढ़ा ब्राह्मण इस भय बन में जाते समय रास्ता भूल गया हूँ। अतः इस बालक को एक की छाया में बैठा कर रास्ता खोजते हुए मैं कुछ दूर निकल गया।

समास—घोरः प्रचारो यत्र तस्मिन् घोरप्रचारे (बहुव्रीहि)। स्खलि पथो यस्य सः स्खलितपथः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ६ पैरा ३७ स..............................इति।

शब्दार्थ—कुत्र=कहाँ। गतः=गया। केन=किस ने। गृहीतन

लिया। परीक्ष्यापि=खोजने पर भी। न वीक्ष्यते=नहीं देख रहा नहीं पा रहा हूँ। अदर्शि=देखा।

भावार्थ—वह कहाँ गया, किसने उसे पकड़ लिया, खोजने पर भी पा रहा हूँ। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, आप लोगों ने भी नहीं देखा।

पृष्ठ ६ पैरा ३८ द्विजोतम.................................व्यतरन्।

शब्दार्थ—द्विजोतम=हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ। एष=वह। तव=... नन्दनः=बालक। गृहान=लो। व्यतरम्=दे दिया।

भावार्थ—हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! एक बालक यहाँ है। क्या सचमुच तुम्हारा बालक है। तब तो इसको लो। ऐसा कहकर भगवान की ...सुनसे उन्होंने मुझे यह बालक दे दिया।

पृष्ठ ६ पैरा ३६ तेभ्यः.................................इति।

शब्दार्थ—दत्ताशीः=आशीर्वाद देकर। अङ्गीकृत्य=लेकर। ...ङ्कम=आपकी गोद में। समानीतवानस्मि=ले आया हूँ। ...रूपः=पिता के तुल्य। अभिरक्षतात्=रक्षा करें।

भावार्थ—उनको आशीर्वाद देकर मैं बालक को आपके पास ले ...या हूँ। अब पिता के समान आप इस चिरंजीव बालक की रक्षा करें।

पृष्ठ ६ पैरा ४० राजा.................................पुपोष।

भावार्थ—राजा ने उसका उपहार वर्मा नाम रखकर राजवाहन की ...पालन किया।

शब्दार्थ—जनपतिः=राजा। पुण्य दिवसे=पर्व के दिन। तीर्थ-...भयाय=तीर्थ स्नान के लिए। पक्कणनिकटमार्गेण=भीलों के गांव के ... के मार्ग से। अबलया=स्त्री से। उपलालितम्=प्रेम से लिए ...। अनुपमशरीरम्=सुन्दर शरीर वाले। कुतूहलाकुलः=आश्चर्यान्वित ...। अपृच्छत्=पूछा। भामिनी=हे स्त्री। रुचिरमूर्ति=सुन्दर ...ति वाला। अर्भकः=बालक, बच्चा। नयनानन्दनः=नेत्रों को ...न्द देने वाला। निमित्तेन=कारण से। भवदधानः=तुम्हारे ...हीतन। जातः=हुआ है। याथातथ्येन=ठीक-ठीक सच। ...=
...न करके। सलीलम=हँस कर। अवादि=बोली। शक्रसमानस्य=

इन्द्र के समान। सर्वस्वमपहरति=सर्वस्व अपहरण कर लेने पर।
=सौंप दिया। व्यवर्धत=बढ़ा है।

अपहार वर्मा के जन्म की कथा

भावार्थ—किसी पर्व के दिन तीर्थ स्नान के लिए भीलों के निकट से जाते हुए राजा ने एक स्त्री को प्रेम से लिये हुए सुन्दर आकृ बालक को देखा तथा आश्चर्य चकित होकर उसको पूछा। हे भो सुन्दर आकृति वाला यह बालक किसी के नेत्रों को आनन्द देने अर्थात् सुन्दर आकृति वाला यह किसका बालक है। तुम्हारे अ हुआ है सचसच बताओ। उस भीलनी ने राजा को प्रणाम क हुए कहा कि हे राजन्! इन्द्र के समान मिथिलेश्वर का भीलों के द्वारा सब कुछ हरण करते हुए मेरे स्वामी ने यह बालक ल दे दिया था मैंने इसको पाल-पोष कर इतना बड़ा किया है।

समास—पक्कणस्य निकट मार्गेण पक्कणनिकट मार्गे तत्पुरुष)। अनुपमं शरीरं यस्य सः तम् अनुपमशरीरम् (ब रुचिरा मूर्तिः यस्य सः रुचिरमूर्तिः (बहुव्रीहि)।

शब्दार्थ—सामदानाभ्याम्=शान्ति और दान से। सन्तुष्ट करके। वर्धय=पालन करो।

भावार्थ—उसकी बात समझकर मुनि का बताया हु बालक यही है ऐसा निश्चय करके उस शबरी को साम और दा करके राजा ने उससे वह बालक ले लिया और अपहारवर्मा करके "इसका पालन करो" ऐसा कह कर महारानी को दे दि

पृष्ठ १० पैरा ४३ कदाचित्..............भ्रमसि इति

शब्दार्थ—वामदेवशिष्य=वामदेव के शिष्य ने। निदि पित करके, बैठाकर। स्नात्वा=स्नान करके। प्रत्यागच्छ हुए। काननावनौ=वन प्रदेश में। वनितया=स्त्री के। धा लिए हुए। स्थविरे=हे बुढ़िया। अटवीमध्ये=बन के बीच सेन=क्लेश से। भ्रमसि=घूम रही हो।

पुष्पोद्भव की उत्पत्ति कथा

भावार्थ—किसी दिन वामदेव का शिष्य सोमदेव शर्मा

राजा के सामने लाकर बोला देव ! रामतीर्थ में स्नान करके जब मैं रहा था तब वन प्रदेश में मैंने देखा कि एक वृद्ध औरत उज्ज्वला-कर बालक को लिए हुये है। मैंने आदरपूर्वक उसको पूछा कि हे स्थविरे ! तुम कौन हो, इस वन में बालक को लिए हुए क्यों घूम रही हो।

पृष्ठ १०-११ पैरा ४४ वृद्धया .... जाता।

शब्दार्थ—धनाढ्यः=धनी। वैश्यवरः=श्रेष्ठ बनिया। नन्दिनीम् आनन्द देने वाला, लड़की। सुवृत्ताम्=सुवृत्ता नाम की लड़की। व्यवहारी=व्यापारी, बनिया। उपगम्य=विवाह करके। सुवस्तु-सम्पदा=सुन्दर वस्तु तथा सम्पत्ति से। सम्मानितः=सम्मान किया। नताङ्गी=सुवृता।

भावार्थ—बुढ़िया ने कहा कि हे मुनिवर ! कालगुप्त नाम का कोई धनी वैश्य है। उस बनिये की लड़की सुवृता के साथ इस द्वीप से गए मगधेश के मन्त्री के पुत्र व्यापारी रत्नोद्भव ने विवाह किया तथा सुन्दर वस्तुओं एवं सम्पत्ति से उसके श्वसुर ने उसका सम्मान किया। कालक्रम से वह नताङ्गी सुवृता गर्भिणी हो गई।

समास—मगधनाथस्य मन्त्रिणः सम्भवो यस्य मगधनाथमन्त्रि-सम्भवः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ११ पैरा ४५ ततः .... अमज्जत्।

शब्दार्थ—सोदरविलोकनकौतूहलेन=भाइयों को मिलने के लिये लालायित। सोदर=भाई। चपललोचनया=चञ्चल नेत्रों वाली के साथ। प्रवहणम्=नौका। अभिप्रतस्थे=चल दिया। कल्लोलमालिका-ताडितः=तरङ्गों से ताडित। पोतः=नौका, जहाज। समुद्राम्भसि=समुद्र के जल में। अमज्जत्=डूब गया।

भावार्थ—इसके पश्चात् भाइयों को मिलने के लिए लालायित रत्नोद्भव किसी प्रकार ससुर को प्रसन्न करके चञ्चल नेत्रों वाली सुवृता के साथ नौका पर चढ़कर, पुष्पपुर की ओर चल दिया। लहरों के आघात से ताडित वह नौका समुद्र के जल में डूब गई।

समास—सोदराणाम् अवलोकने यत्कौतुहलं तेन सोदरा:
कौतुहलेन (कर्मधारय)। चपले लोचने यस्याः सा तया चपल
(बहुव्रीहि)। कल्लोलमालिका (षष्ठी तत्पुरुष) तया अभिहितः
मालिकाभिहतः (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ११ पैरा ४६ गर्भ..................अप्यनायि।

शब्दार्थ—गर्भभरालसाम्=गर्भ की पीड़ा से अलस, चेतना
ललनाम्=स्त्री। धात्रीभावेन=धाय रूप से। कल्पिता=बना
फलकमेकम्=काठ के पट्टे पर। अधिरुह्य=चढ़कर। दैव
भगवान की कृपा से। तीरभूमिम्=किनारे पर। अगमम्=
सुहृज्जन=मित्रों से। परिवृतः=घिरा हुआ, युक्त। न जाना
नहीं जानती। क्लेशस्य=दुःख की। अधिगता=प्राप्त हुई। अ
उत्पन्न किया। प्रसव वेदनया=बच्चा उत्पन्न होने की पीड़ा से। वि
=बेहोश। प्रच्छायशीतले=ठण्डी छाया वाले। स्थातुमम्=रह
अशक्यतया=असमर्थ होने से। जनपदगामिनम्=नगर की ओ
वाले। अन्वेष्टुम=खोज के लिए। निक्षिप्य=छोड़कर। ग
जाना। अनायि=ले आई।

भावार्थ—गर्भ पीड़ा से अलस उस ललना की धाय बनाई
उसको भी हाथों से सम्भालती हुई एक लकड़ी के पट्टे पर
भगवान की कृपा से किनारे पर आगई। मित्रमण्डल के साथ
वहाँ डूब गया अथवा किसी उपाय से किनारे पर आगया इसे
जानती। दुःख की पराकाष्ठा को प्राप्त सुवृता ने इस वन में अ
पुत्र उत्पन्न किया है। प्रसव की पीड़ा से बेहोश हुई वह ठंडी छाय
वृक्ष के नीचे रह रही है। अतः निर्जन वन में रहने में असमर्थ
की ओर जाने वाले मार्ग की खोज में लगी हुई मैं उस विवशा
बालक को अकेला छोड़ कर जाना अनुचित समझ कर इसे
आई हूँ।

समास—गर्भभरेण अलसाम् गर्भभरालसाम् (तृतीया तत्पु
सुहृज्जनः परिवृतः सुहृज्जनपरिवृतः (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ११-१२ पैरा ४७ तस्मिन्नेव.........................अगात्।

शब्दार्थ—वन्य=वन का। वारणः=हाथी। अदृश्यत=दिखाई पड़ा। भीता=डरी हुई। निपात्य=फेंककर। प्राद्रवत्=भाग गई। समीपलतागुल्मके=समीप की लता के झुण्ड में। परीक्षमाणः=चारों ओर देखता हुआ। पल्लवकवलमिव=पत्तों के ग्रास की भाँति। आददति=उठाते हुए। कण्ठीरवः=सिंह। महाग्रहेण=सिंहनाद करता हुआ। न्यपतत्=टूट पड़ा। दन्तावलेन=हाथी ने। वियति=आकाश में। समुत्पात्यमानः=उछलता हुआ। पक्वफलबुद्धया=पक्का फल समझ कर। परिगृह्य=लेकर, पकड़कर। फलेतरतया=फल के न होने से। विततस्कन्धमूले=चौड़ी शाखा पर। निक्षिप्तोऽभूत=रख दिया। मर्कटः=बन्दर।

भावार्थ—उसी समय कोई जङ्गली हाथी दिखाई दिया। उसको देखकर वह डर कर बालक को फेंक कर भाग गई। किन्तु इस प्रतीक्षा में कि देखें क्या होता है मैं पास के एक लताओं के झुण्ड में बैठ गया। बालक को पत्तों के ग्रास की भाँति उठाते हुए हाथी के ऊपर एक शेरसिंह नाद करता हुआ टूट पड़ा। भयभीत हुए हाथी ने उस बालक को ऊपर उछाल दिया चिरायुष्य होने के कारण उस बालक को पक्का फल समझ कर बन्दर ने पकड़ लिया परन्तु जब उसने समझा कि यह फल नहीं है तो उसे वृक्ष की एक चौड़ी शाख पर रख दिया। बन्दर भी कहीं चला गया।

पृष्ठ १२ पैरा ४८ बालकेन.........................आनीतवानस्मि।

शब्दार्थ—सत्त्वसम्पन्नतया=शक्तिशाली होने के कारण। केशरिणा=शेर ने। करिणम्=हाथी को। निहत्य=मार कर। अगमि=चला गया। तेजःपुंजम्=तेज के पुंज। अवनीरुहात्=पेड़ से। अवतार्य=उतार कर। वनान्तरे=दूसरे बनों में। निवेद्य=अर्पण करके। तन्निदेशेन=उनकी आज्ञा से। आनीतवान्=लाया हूँ।

भावार्थ—बालक ने भी शक्ति सम्पन्न होने के कारण सब दुःखों को सहा। शेर हाथी को मार कर कहीं चला गया। लतामण्डप से

निकल कर मैंने वृक्ष के ऊपर से उस तेज पुंज बालक को उतारा तथ
इधर-उधर बन में उस स्त्री की खोज की परन्तु जब वह कहीं न मिल
तो इस बालक को लाकर गुरु जी को अर्पित कर दिया अब उनकी ह
आज्ञा से आपके पास लाया हूँ।

समास—तेजसां पुंजं तेजपुंजम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ १२ पैरा ४६ महद्............................ समर्पितवान्।

शब्दार्थ—विभ्राणः = पड़ा हुआ, डूबा हुआ। चिन्तयन् = विचा
करता हुआ, सोचता हुआ। उदन्तम् = समाचार को। व्याख्याय = क
कर। विधाय = रखकर। अनुजतनयम् = छोटे भाई के लड़के को
समर्पितवान् = दे दिया।

भावार्थ—आश्चर्य में पड़े हुए राजा ने "रत्नोद्भव का क्या हुआ
इस प्रकार विचार करते हुए उसके पुत्र का पुष्पोद्भव नाम रखकर तथ
सब समाचार सुश्रुत को सुना कर वह छोटे भाई का पुत्र उसके ब
भाई सुश्रुत को सौंप दिया।

अर्थपाल की उत्पत्ति की कथा

पृष्ठ १२-१३ पैरा ५० अन्येद्यु............................अयासीत्।

शब्दार्थ—अन्येद्युः = दूसरे दिन। उरसि दधती = गोद में लि
हुए। वल्लभमभिगता = पति के पास गई। कुत्रत्योऽयम् = यह कहाँ
मिला। पृष्टा = पूछी जाने पर। अतीतायाम् = पिछली। दिव्यवनि
= स्वर्गीय स्त्री। मत्पुरतः = मेरे सामने। निद्रामुद्रिताम् = सोई हुई को
विबोध्य = जगाकर। यक्षेश्वरानुमत्या = यक्षेश्वर की आज्ञा से। मदा
जमेतम् = इस अपने पुत्र को। भवत्तनूजस्य = आपके पुत्र का। अम्भो
निधि = समुद्र। क्षोणीमण्डल = पृथ्वी मण्डल। भाविनः = आगे हो
वाले। परिचर्याकरणाय = सेवा करने के लिए। मनोजसन्निभम् = काम
देव के समान सुन्दर। विस्मयविकसितनयना = आश्चर्य से खिले हु
नेत्रों वाली। सत्कृता = सत्कार किया। स्वक्षी = सुन्दर नेत्रों वाली।

भावार्थ—एक दिन किसी बालक को गोद में लिए रानी वसुम
राजा के पास आई। राजा के "यह कहाँ से मिला" पूछने पर उस

कहा—राजन् ! इस बीती हुई रात में कोई स्वर्गीय स्त्री इसको मेरे पास रखकर तथा मुझे सोती को उठाके विनम्र शब्दों में बोली कि हे देवि ! तुम्हारे मन्त्री धर्मपाल के पुत्र कामपाल की पत्नी मैं यक्षकन्या हूँ मेरा नाम तारावती है। मैं मणिभद्र की कन्या हूँ। मैं इस लड़के की परिचर्या के लिये लाई हूँ। जो राजवाहन समुद्रों से घिरी हुई इस पृथ्वी का यशस्वी सम्राट् होगा। कामदेव के समान सुन्दर इस बालक का तुम पालन करो। यह सुनकर मेरे नेत्र आश्चर्य से खिल गये और बड़े विनय के साथ मैंने उस सुनयना यक्षी का सत्कार किया। इसके बाद वह अदृश्य हो गई।

समास—निद्रया मुद्रिता निद्रामुद्रिता (तृतीया तत्पुरुष)। यक्षेश्वरस्य अनुमत्या यक्षेश्वरानुमत्या (षष्ठी तत्पुरुष)। अम्भोनिधिवलयेन वेष्ठितं यत् क्षोणीमण्डलं अम्भोनिधिवलय वेष्ठितक्षोणीमण्डलम् (कर्मधारय)। तस्य ईश्वरः तस्य अम्भोनिधिवलयवेष्ठितक्षोणी मण्डलेश्वरस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। मनोजस्य सन्निभिः मनोजसन्निभः (षष्ठी तत्पुरुष) अथवा मनोजेन सन्निभि। मनोजसन्निभिः (तृतीया तत्पुरुष। विस्मयेन विकसते नयने यस्याः सा तथा विस्मयविकसितनयनया (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ १३ पैरा ५१ कामपालस्य..................अदात्।

शब्दार्थ—यक्षकन्यासङ्गमे=यक्ष कन्या के साथ समागम। विस्मयमानमानसः=आश्चर्य में पड़े हुए मन वाला। अदात्=दे दिया।

भावार्थ—कामपाल का यक्ष कन्या के साथ समागम हुआ। इससे राजहंस का मन विस्मित हुआ। इसके बाद सुमित्र मन्त्री को बुलाकर उसके भाई के लड़के का अर्थपाल नाम रखकर तथा सब समाचार सुनाकर उसे दे दिया।

समास—विशेषण विस्मयमानं मानसं यस्य सः विस्मयमानमानसः (बहुव्रीहि)।

सोमदत्त के जन्म की कथा

पृष्ठ १२ पैरा ५२ ततः..................किम् इति।

शब्दार्थ—अन्तेवासी=छात्र। तदश्रमवासी=वामदेव के आश्रम

में रहने वाला। निर्भर्त्सितमारमूर्तिम्=सौन्दर्य से कामदेव को तिरस्कृ करने वाले। कुसुमसुकुमारम्=पुष्प के समान कोमल। अवगमय= लाकर, सामने रखकर। विलोलालकम्=चञ्चल बालों वाले। निजो संगतले=अपनी गोद में रखकर। रुदतीम्=रोती हुई। स्थविराम्= बुढ़िया को। शोककारण=शोक का कारण।

भावार्थ—इसके बाद किसी दिन वामदेव का शिष्य जो उस आश्रम में रहता था कामदेव के समान सुन्दर एवं पुष्प के समा कोमल कुमार को लाकर राजा से कहने लगा। देव! चञ्चल बालों वा इस बालक को गोद में लिये रोती हुई एक बुढ़िया को देख कर मैं कहा हे बुढ़िया तुम कौन हो यह बालक किसके नेत्रों को आनन्द दें वाला है अर्थात् यह बालक किसका है तुम इस बन में क्यों आई है और तुम्हारे रोने का क्या कारण है अर्थात् तुम रो क्यों रही हो।

समास—निर्भर्त्सिता मारस्य मूर्तिः येनासौ तम् निर्भर्त्सितमार मूर्तिम् (बहुव्रीहि)। विलोलाश्च ये अलकाः (कर्मधारय)। विलोलालक यस्य सः तम् विलोलालकम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ १३-१४ पैरा ५२ सा.................. शोच्यते' इति

शब्दार्थ—करयुगेन=दोनों हाथों से। वाष्पजलम्=आँसू। उन्मृज =पोंछकर। शोकहेतुम्=शोक का कारण। द्विजात्मज=हे ब्राह्मण के लड़के। कनीयात्मजः=छोटा लड़का। तीर्थयात्राभिषेण=तीर्थ के ब्याज से। आगच्छत्=आया था। अग्रहारे=गाँव में। अनपत्यतया=सन्तान न होने से। तद्भगिनीम्=उसकी बहिन को। परिणीय=विवाह करके। अलसत=प्राप्त किया। सासूयया=डाह से, द्वेष से। तटिन्यां =नदी में। क्षिप्तत्=फेंक दिया। उद्धृत्य=थाम कर। प्लवमाना= तैरती हुई। अवलम्ब्य=पकड़कर। उह्यमाना=बहती हुई। काल- भोगिना=काले साँप ने। अदंशि=काट लिया। गरलस्य=जहर के। उद्दीपनतया=बढ़ने से। शरण्य=शरण देने वाला, रक्षक। शोच्यते= शोक कर रही हूँ।

प्रसंग—जब वामदेव के शिष्य ने वृद्धा से शोक का कारण पूछा तो

वह शोक का कारण सुनाने लगी।

भावार्थ—उसने दोनों हाथों से आँसू पोंछ कर शोक का कारण कहा। हे ब्राह्मण पुत्र ! राजहंस के मन्त्री सितवर्मा के छोटे लड़के सत्यवर्मा तीर्थयात्रा के व्याज से इस देश में आये थे। उसने किसी गाँव के ब्राह्मण की लड़की काली के साथ विवाह किया था । परन्तु जब उसके सन्तान न हुई तो उसकी बहन गौरी के साथ विवाह करके उसने एक पुत्र प्राप्त किया। विद्वेष के कारण एक दिन काली ने मेरे साथ उस बालक को किसी छल से लाकर इस नदी में फेंक दिया। एक हाथ से बालक को थाम कर तथा दूसरे हाथ से तैरती हुई मैंने नदी के वेग में आये हुए किसी पेड़की शाखा को पकड़कर बालक को उस पर रख दिया अथवा बैठा दिया तथा नदी के वेग के साथ बहने लगी। वहो उस वृक्ष की शाखा में चिपटे हुए एक काले साँप ने मुझे डस लिया। जिसके सहारे मैं आरही थी वह वृक्ष इसी प्रदेश में किनारे पर ठहरा । जहर बढ़ जाने से मेरे मरने पर यहाँ इसका कोई सहायक नहीं होगा । यही मेरे शोक का कारण है ।

समास—शोकस्य हेतुम् शोकहेतुम् (षष्ठी तत्पुरुष) । राजहंसस्य मन्त्रि तस्य राजहंस मन्त्रिणः (षष्ठी तत्पुरुष)। तीर्थयात्रायामिषेण तीर्थ यात्रामिषेण (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ १४ पैरा ५४ ततः..................व्यलोकयम्।

शब्दार्थ—धरणीतले = पृथ्वी पर। न्यपतत् = गिर पड़ी। दयाविष्ट हृदयः = दया युक्त हृदय वाला। मन्त्रीवलेन = मन्त्र के द्वारा। विषव्यथां = जहर की पीड़ा को। अपनेतुम् = दूर करने के लिये। अक्षमः = असमर्थ। औषधिविशेषम् = विष दूर करने की औषधि। अन्विष्य = खोज करके। प्रत्यागतः = लौट कर आया । व्युत्क्रान्तजीविताम् = मरी हुई। व्यलोकयम् = देखा।

भावार्थ—इतना कहकर वह अचानक पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसकी इस अवस्था पर मुझे दया आई परन्तु मन्त्र न जानने के कारण विष पीड़ा को दूर करने में असमर्थ था इस लिये समीप के निकुंज में जब

औषधि विशेष खोज करके आया तो उसको मरी हुई देखा।

समास—दयया आविष्टं हृदयं यस्य सः दयाविष्टहृदयः (बहुव्री

पृष्ठ १४ पैरा ५५ तदनु..................इति।

शब्दार्थ—तदनु=इसके पश्चात्। पावकसंस्कारम्=अग्नि सं
अगतिम्=असहाय।

भावार्थ—इसके पश्चात् मैंने उसका अग्नि संस्कार किया।
अनाथ उस बालक को ले लिया। यह आपके मन्त्री के लड़के का
है अतः आप ही इसके रक्षक हैं ऐसा समझ कर आपके पास लाय

पृष्ठ १४ पैरा ५६ तन्निशम्य..........................पुपोष।

शब्दार्थ—निशम्य=सुनकर। खिन्नमानसः=दुखित मन व
अनुजतनयम्=छोटे भाई के लड़के को। सोदरगतमिव=छोटा
ही आगया हो। मन्यमानः=मानता हुआ। पुपोष=पालन करने

भावार्थ—ऐसा सुनकर दुखित हुए राजा ने उसके छोटे भ
लड़के का सोमदत्त नाम रखकर सुमति मन्त्री को सौंप दिया। व
जैसे छोटा भाई ही आगया हो ऐसा समझता हुआ बड़े प्रेम से
पालन करने लगा।

राजवाहन आदि कुमारों का विद्याभ्यास

पृष्ठ १४-१५ पैरा ५७ एवम्..............................अविन्द

शब्दार्थ—मिलितेन=मिले हुए। बालकेलीरनुभवन्=बालक्री
का अनुभव करता हुआ। अधिरूढानेकवाहनः=अनेक प्रका
सवारियों पर चढ़ते हुए। चौलोपनयनादि=चौल एवं उपयन।
दत्वम्=पण्डिताई। नैपुण्यम्=चतुरता। काव्य=कविता। शब्दश
=व्याकरण शास्त्र। तर्क=न्याय शास्त्र। दाक्ष्यम्=चतुरता। स
लब्ध्वा=अच्छी प्रकार प्राप्त करके। विलसन्तम्=सुशोभित
कुमार निकरम्=कुमारों के समूह को। निरीक्ष्य=देखकर। महीव
=राजा। अहंशत्रुजनदुर्लभः=मैं शत्रुओं से अजेय हो गय
अविन्दत=प्राप्त किया।

भावार्थ—इस प्रकार प्राप्त कुमार मण्डल के साथ बालक्रीड़ा

करता हुआ नाना प्रकार की सवारियों के चढ़ने में निपुण राजवाहन ने क्रमशः चौल एवं उपनयनादि संस्कार प्राप्त किये । उसके बाद सकल लिपियों का ज्ञान, सब देश की भाषाओं का पाण्डित्य, छहों अङ्गों सहित वेद राशि की विद्या, काव्य, नाटक, आख्यानक, आख्यायिका, इतिहास, चित्र कथा एवं पुण्य आदि का नैपुण्य, धर्मशास्त्र, व्याकरण शास्त्र, ज्योतिष, न्याय, मीमांसा आदि समस्त शास्त्रों में चतुरता, कौटिल्य कामन्दकीय आदि नीतिशास्त्रों में कुशलता, वीणा आदि सम्पूर्ण वाद्यों में दक्षता, संगीत और साहित्य में हारित्व, को उन २ विद्याओं के आचार्यों से अच्छी प्रकार प्राप्त करके युवावस्था से सुशोभित कुमार वृन्द को देखकर राजा "अब मैं शत्रुओं से अजय होगया हूँ। ऐसा सोचता हुआ परमानन्द को प्राप्त हुआ ।

पृष्ठ १५ पैरा ४८ अथ..................................क्रियताम् ।

शब्दार्थ—एकदा=एक दिन, किसी समय। कुमारनिकरेण=कुमारों से। आनतशिरसम=सिर झुकाये हुये । समभिगम्य=पास जाकर। परिचर्याम्=पूजा को । अंगीकृत्य=स्वीकार करके । कुमारचयम्=कुमार समूह को। विहिताशीः=आशीर्वाद देकर। नुतमित्रः=अनुकूल मित्र। सहचरसमेतस्य=साथियों के साथ। सकलक्लेशसहस्य=सम्पूर्ण क्लेश सहन करने योग्य का । दिग्विजयप्रयाणम्=दिग्विजय के लिये गमन।

राजवाहन का दिग्विजय के लिये जाना

भावार्थ—इसके बाद एक दिन वामदेव कुमारों के समूह से घिरे हुए, प्रणतमस्तक राजा के पास गये तथा उसके द्वारा की गई पूजा को स्वीकार करके, कुमार समूह को आशीर्वाद देकर बोले—हे भूवल्लभ! आपके मनोरथ के फल की भांति अनुकूल मित्र आपका पुत्र राजवाहन समृद्ध लावण्य और तारुण्य का अनुभव करता है। अतः सहचरों के साथ यह इसका दिग्विजय करने का समय है इस लिये आप इसको दिग्विजय के लिये भेज दें।

समास—दिशां विजस्यारम्भ दिग्विजयारम्भः तस्य समयः दिग्विजयारम्भसमय (षष्ठी तत्पुरुष)।

• पृष्ठ १५-१६ पैरा ५६ कुमारा.................................विससर्ज।

शब्दार्थ—माराभिरामा=कामदेव के समान सुन्दर। रणाभियाने=रण के लिये। यानेन=यात्रा से। अभ्युदयाशमम=उन्नति की आ... अकाषु:=की। साचिव्यम=मन्त्रीपन में। इतरेषाम्=दूसरों ... विधाय=करके। समुचिताम=उपयोगी। उपदिश्य=उपदेश दे... विजयाय=विजय के लिये। विससर्ज=भेज दिया।

भावार्थ—कामदेव के समान सुन्दर कुमार वृन्द की युद्ध यात्... अभ्युदय अवश्य होगा। ऐसा निश्चय करके उसने अन्य कुमार... राजवाहन की सहायता में नियुक्त किया तथा समयोपयोगी उपदेश ... शुभमुहूर्त में राजकुमार को विजय के लिये भेज दिया।

समास—अभ्युदये आशंसायस्य सः तम् अभ्युदयाशंसम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ १६ पैरा ६० राजवाहन.................................ददर्श।

शब्दार्थ—मंगलसूचकम्=मंगल की सूचना देने वाले। विलो... =देखता हुआ। देशकञ्चिदतिक्रम्य=अनेक देशों का उल्लङ्घन ... अनेक देशों को पार करके। अविशत्=घुस गया। कालायककर्शक... =लोहे के समान काले एवं कठोर शरीर वाला। यज्ञोपवीतेनानु... विप्रभावम=यज्ञोपवीत से ब्राह्मण का अनुमान कराता हुआ। ... किरातभावम्=भील के समान। लोचन परुषम=भयङ्कर नेत्रों वा... ददर्श=देखा।

भावार्थ—राजवाहन भी मंगल सूचक शुभ शकुन देखता ... अनेक देशों का उल्लङ्घन करके विन्ध्याटवी में घुस गया। वहाँ पर ... के समान काले एवं कठोर शरीर वाला जैसे कोई भील हो परन्तु य... पवीत से ब्राह्मणभाव का अनुमान कराता हुआ तथा भयङ्कर नेत्रों ... कोई पुरुष देखा।

समास—कालायसमिव कर्कशः कायो यस्य स तम् कालायसक... कायम् (बहु०) अनुमेयोविप्रभावो यस्य स त अनुमेयविप्रभावम् (ब...

राजवाहन का मातङ्ग से मिलना

पृष्ठ १६ पैरा ६१ तेन..ब्राह्मण इति ।

शब्दार्थ—विहितपूजनः=पूजा किया हुआ, पूजित । ननुमानव=हे मानव । घोर प्रचारे=भयङ्कर । एकाकी=अकेले । निवसति=रहते हो । भवदंसोपनीतम=आपके कंधे पर पड़ा हुआ यज्ञोपवीत । भूसुर-भावम=ब्राह्मणत्व । द्योतयति=प्रकट करता है । हेतिहतिभिः=शस्त्रों के आघात चिन्हों से । अनुमीयते=अनुमान होता है । मानुषमात्र-पौरुषः=साधारण मनुष्य के समान पराक्रम । मत्वा=जानकर । वयस्य-मुखान्नामजनने विज्ञाय=मित्रों के मुख से नाम और जन्म सुनकर । ब्राह्मणब्रुवाः=कुत्सित ब्राह्मण । निन्दापात्रचारित्रः=चरित्र से निन्दित । किरातबलेन=किरातों की सेना के साथ । उद्धृत्य=नष्ट करके । वीत-दयः=दया रहित । व्यचरम्=घूमता था । जिघांस्यमानम्=मारे हुए को । ननु पापाः=हे पापियो । न हन्तव्यः=नहीं मारना चाहिए ।

भावार्थ—उस पुरुष ने राजवाहन की पूजा की । पूजा करने के बाद राजवाहन बोले, हे मानव ! भयङ्कर विन्ध्यवन में अकेले क्यों रहते हो । कन्धे पर लटकता हुआ यज्ञोपवीत आपके ब्राह्मणत्व को प्रकट करता है । किन्तु शस्त्रों के आघात से आप में किरातों के आचर का अनुमान होता है । क्या बात है कहो । इस पुरुष का सामर्थ्य साधारण पुरुषों जैसी नहीं है ऐसा समझ कर तथा उसके मित्रों से उसके नाम और जन्म के विषय में जान कर उस पुरुष ने राजवाहन को अपना वृत्तान्त सुनाया । हे राजनन्दन ! इस विन्ध्याटवी में बहुत से कुत्सित ब्राह्मण रहते हैं उन्हीं में से किसी एक ब्राह्मण का पुत्र चरित्र से निन्दित मातङ्ग हूँ । मैं भी किरातों की सेना के साथ जनपदों में जाता वहाँ से पुत्रों सहित धनिकों को पकड़ लाता और बन्धन में रखकर उनका सब धन छीन लेता था तथा इसी तरह दया रहित होकर मैं घूमता फिरता था । एक बार किसी बन में अपने साथियों से मारने का उद्योग करते हुए एक ब्राह्मण को देख कर मुझे दया आगई मैं बोला—अरे इस ब्राह्मण को न मारो ।

समास—स्त्रीभिः बालैः सहितान् स्त्रीबालसहितान् (तृतीया तत्पुरु

पृष्ठ १७ पैरा ६२ ते........................अभवन् ।

शब्दार्थ—रोषारुणनयना=क्रोध के कारण लाल नेत्रों वाले। नि भर्त्सयन्=फटकारा। भाषापारुष्यमसहिष्णुः=कठोर वचन सहन क में असमर्थ। अवनिसुर रक्षणाय=ब्राह्मण की रक्षा के लिए। चि =बहुत देर तक। प्रयुध्य=युद्ध करके। अभिहतः=लड़ता हुआ। ग जीवितोऽवम्=मर गया।

भावार्थ—उन्होंने क्रोध से लाल नेत्र करके मुझे बहुत फटकारा। उनके कठोर भाषण को सहन न कर सका। अतः ब्राह्मण की रक्षा लिये बहुत देर तक युद्ध करके उनके साथ लड़ता २ मारा गया।

समास—रोषेण अरुणानि नेत्राणि येषां ते रोषारुणनयनाः (बहु गतं जीवितं यस्य सः गत जीवितः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ १७ पैरा ६३ ततः......................गम्यताम्।

शब्दार्थ—प्रेतपुरीमुपेत्य=यमराज के यहाँ जाकर। शमनम्=य राज को। अकरवम्=किया। अवेक्ष्य=देखकर। सचिव=हे मन्त्री अमुष्य=इसका। इतः प्रभृति=आज से लेकर। विगलितकल्मपस्य पापों से रहित। पुण्यकर्म करणे=अच्छे काम करने में। रुचिः=अ लाषा। उदेण्यति=उदित होगी। पापिष्ठैः=पापियों से। अनुभूयमानं अनुभव कराई जाने वाली। यातनाविशेषम्=पीड़ा विशेष।

भावार्थ—इसके बाद में यमालय में पहुँचा। यहाँ पर देहध पुरुषों से घिरे हुए सभा के बीच में रत्नों से जड़े हुए सिंहासन पर हुए यमराज को देख कर मैंने उसको दण्डवत् प्रणाम किया। भी मुझे देखकर चित्रगुप्त नाम के अपने मन्त्री को बुलाकर कहा हे मन्त्री! यह इसका मृत्यु समय नहीं है। निन्दित चरित्र वाला होत भी यह ब्राह्मण के लिये मरा है। आज से पाप रहित इसकी बुद्धि पु कर्म करने में लगेगी। अतः पापियों को अनुभव कराई जाने यातनाओं को दिखा कर इसे फिर उसी शरीर में भेज दो।

समास—रत्नैः खचितम् रत्नखचितम् (तृतीया तत्पुरुष)।

खचिते सिंहासने आसीनम् रत्नखचितसिंहासनासीनम् (सप्तमी तत्पुरुष)। विगलितम् कल्मषम् यस्य सः तस्य विगलितकल्मषस्य

पृष्ठ १७ पैरा ६४ चित्रगुप्तः..............................अतिष्ठम।

शब्दार्थ—पुण्यबुद्धिमुपदिश्य=पुण्य बुद्धि का उपदेश देकर। अमुञ्चत्=छोड़ दिया। रचयता=करते हुए। परीक्ष्यमाणः=देखते हुए। शायितः=लेटाया हुआ, सुलाया हुआ।

भावार्थ—चित्रगुप्त ने भी पुण्य बुद्धि का उपदेश देकर मुझे छोड़ दिया मैंने फिर अपना पहला शरीर प्राप्त कर लिया। उस महाटवी में वही ब्राह्मण शीतल उपचार करता हुआ मेरी रक्षा कर रहा था उसने मुझे एक शिला पर लेटा रखा था इस अवस्था में मैं कुछ समय तक ही रहा।

पृष्ठ १७-१८ पैरा ६४ बन्धु..............................निरगात्।

शब्दार्थ—विदितोदन्तः=समाचार जानकर। अपक्रान्तव्रणमकरोत् =मरहमपट्टी की द्विजन्मा=ब्राह्मण। कल्मषक्षयकारणम्=पाप नष्ट करने वाले। ज्ञानेक्षणगम्यमानस्य=ज्ञानचक्षु से दृश्य। शशिखण्डशेखरस्य=भगवान शङ्कर की। पूजानिधानम्=पूजा विधि। अभिधाय=बताकर। मत्कृताम्=मेरे से की हुई। अङ्गीकृत्य=स्वीकार करके।

भावार्थ—इसके पश्चात् मेरे बन्धुगण भी इस समाचार को सुनकर आये ब्राह्मण मुझे अक्षर शिक्षा देकर पापों को नष्ट करने वाले सदाचार का उपदेश देकर ज्ञान चक्षुओं से दृश्य भगवान शङ्कर की पूजा बताकर तथा मेरी दी हुई भेंट स्वीकार करके चला गया।

समास—विदितः उदन्तो येनासौ विदितोदन्तः (बहुव्रीहि)। अपक्रान्ताः व्रणाः यस्य सः तम् अपक्रान्तव्रणम् (बहुव्रीहि)। कल्मषाणाम् क्षये कारणं यत् तम् कल्मषक्षयकारणम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ १८ पैरा ६६ कानने=वन में। दूरीकृतकलङ्क=कलङ्क रहित। वसामि=रहता हूँ। रहस्यम्=एकान्त में। विज्ञापनीयम्=बताने योग्य।

भावार्थ—उस दिन से ही मैं कलङ्क रहित इस वन में रह रहा हूँ। देव ! आपसे एकान्त में एक बात कहनी है । इधर आइये ।

समास—दूरी कृतः कलङ्को येनासौ दूरीकृतकलङ्कः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ १८ पैरा ६७ स.................................साहाय्यम् ।

शब्दार्थ—वयस्यगणादपनीय = मित्रों से अलग करके। रहसि = एकान्त में । अतीते = बीती हुई। निशान्ते = रात्रि के अन्त में । स्वप्नसन्निहित =स्वप्न में । विबोध्य = जगाकर । प्रसन्नवदनकान्तिः = प्रसन्न मुख वाले । प्रश्रयानतम् = नम्र हुए को । अवोचत् = कहा । स्फटिकलिंगस्य = स्फटिक लिंग के । पश्चात् = पीछे । विधेराननमिव = ब्रह्मा के मुख की भाँति । विद्यते = हैं । नक्षिप्तम् = पड़े हुये । समादाय = लेकर । दिष्ट विजयमिव = भाग्य से प्राप्त विजय की भाँति । विधाय = स्वीकार करके । साहाय्यकरः = सहायता करने वाला । अद्य = आज । श्वः = कल । समागतिष्यति = आयेगा । आदेशानुगुणमेव = कहने के अनुसार ही । रचय = करो ।

भावार्थ—राजवाहन को मित्र गण से अलग कर एकान्त में ले जाकर कहा—हे राजन् ! पिछली बीती हुई रात में प्रसन्न मुख वाले भगवान शङ्कर ने सोते हुए को जगा कर नम्र हुए को मुझे कहा—मातंग ! दण्डकारण्य के बीच से जाने वाली नदी के किनारे पर सि एवं साध्यों से आराध्यमान स्फटिक लिंग के पीछे ब्रह्मा के मुख समान एक छिद्र है । उसमें प्रवेश करके वहाँ पर पड़े हुए ताम्रशासन ब्रह्मा के शासन के समान ले लो और उसमें लिखी हुई विधि को भा से प्राप्त विजय की नाई स्वीकार कर तुम पाताललोक के अधीश्वर जाओ । इस कार्य में सहायता करने वाला राजकुमार आज या अवश्य आयेगा । भगवान के आदेश के अनुसार आपका आगमन हो गया है । अतः आप साधनाभिलाषी की मेरी सहायता करो ।

समास—निद्रया मुद्रिते लोचने यस्य सः तम् निद्रामुद्रितलो (बहुव्रीहि । प्रसन्ना वदनस्य कान्ति तस्य सः प्रसन्नवदनकान्तिः (ब दिष्टस्य विजयमिव दिष्टविजयमिव (षष्ठी तत्पुरुष) ।

पृष्ठ १८-१९ पैरा ६८ तथा.................................मयः ।

शब्दार्थ—तथा = बहुत अच्छा । साकम् = साथ । नमितोत्तमांगेन = प्रणामार्थ मस्तक झुकाये । विहायार्धरात्रे = आधी रात में छोड़कर । निद्रापरतन्त्रम् = निद्रा के वशीभूत हुए । तदनुचराः = राजवाहन के अनुचर । कल्ये = प्रभावकाल में । वियुज्य = अलग-अलग होकर । ययुः = चले गये ।

भावार्थ—राजवाहन भी बहुत अच्छा कहकर अर्धरात्रि में निद्रा-परतन्त्र मित्रगण को छोड़ कर प्रणामार्थ नतमस्तक मातङ्ग के साथ दूसरे बन को चला गया । उसके बाद प्रातःकाल राजवाहन के अनुसार चारों तरफ खोजने पर भी राजवाहन को न देखकर बड़े दुःखी हुए । किन्तु जब और बनों में अच्छी प्रकार खोज कर भी नहीं देख पाये तब राजवाहन को खोजने के लिए देशान्तर में जाने को इच्छुक पुनः मिलने के लिए एक संकेत स्थान का निश्चय करके परस्पर वियुक्त होकर चल दिये ।

समास—नमितं उत्तमं अंगं येनासौ तेन नमितोत्तमांगेन ।

पृष्ठ १६ पैरा ६६ लोकैकवीरेण .... अलभत ।

शब्दार्थ—रक्ष्यमाणः = रक्षित होते हुए । शशिशेखरकथित = शिव से निर्दिष्ट । अभिज्ञानपरिज्ञातम् = चिन्ह से परिज्ञात । रसातलम् = पाताल । पत्तनस्य = नगर के । हविषा = हवनीय द्रव्य से । होमम् = हवन । विरच्य = करके ।

भावार्थ—संसार के प्रधान वीर्य कुमार द्वारा रक्षित होने से सन्तुष्टान्तरंग मातंग ने भी शिवनिर्दिष्ट चिन्हों से परीक्षा बिल में घुस कर ताम्रशासन को ले लिया तथा उसी मार्ग से पाताल में जाकर वहाँ किसी नगर के निकट हवनीय पदार्थों से हवन करके घृत और लकड़ियों समुद्दीप्त अग्नि में पुण्यगेह देह की मन्त्रपूर्वक आहुति कर दी और इसके बाद दिव्य देह को प्राप्त कर लिया ।

समास—लोकेषु एकवीरः लोकैकवीरः (सप्तमी तत्पुरुष) । शशि-शेखरेण कथितं शशिशेखर कथितम् (तृतीया तत्पुरुषेण) । पुण्यस्य गेहम् पुण्यगेहम् (षष्ठी तत्पु०) ।

पृष्ठ १६ पैरा ७० तदनु............................अभाषत ।

शब्दार्थ—ललामभूत=सुन्दर, भूषण स्वरूप । उपायनीकृत्य= उपहार देकर, भेंट देकर । कलकण्ठ स्वनेन=कोयल की आवाज से। उदञ्जलि=हाथ जोड़कर ।

भावार्थ—इसके बाद सम्पूर्ण संसार की स्त्रियों के भूषण स्वरूप किसी कन्या ने धीरे-धीरे आकर उस श्रेष्ठ ब्राह्मण को एक चमकीली मणि भेंट की तथा ब्राह्मण के "तुम कौन हो" ऐसा पूछने पर बड़ी उत्कण्ठा से कोयल के स्वर में वह धीरे २ बोली ।

समास—सकललोकस्य ललनाकुलम् सकललोकललनाकुलम (षष्ठी तत्पुरुष) । सकललोकललना कुलेषु ललामभूता सकललोकललनाललाम-भूता (सप्तमी तत्पुरुष) ।

पृष्ठ १६ पैरा ७१ भू सुरोत्तम्...............अभाषत ।

शब्दार्थ—असुरोत्तमनन्दिनी=उत्तम असुर की पुत्री । शासिता= शासन करने वाले । समरे=युद्ध में । यमनगरातिथिरकारि=मार दिया । कारुणिकः=दयालु ।

भावार्थ—हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! मैं श्रेष्ठ असुर की लड़की हूँ मेरा नाम कालिन्दी है । इस लोक का शासन करने वाले मेरे पिता को भगवान विष्णु ने युद्ध में मार दिया । उसके वियोग से जनित शोक सागर में डूबी हुई मुझको देखकर किसी दयालु तपस्वी ने कहा अथवा आशीर्वाद दिया ।

समास—असुरोत्तमस्यनन्दिनी असुरोत्त"नन्दिनी (षष्ठी तत्पुरुष। वियोगस्य शोकसागरः वियोगशोकसागरः (षष्ठी तत्पुरुष) । वियोग-शोक सागरे मग्नाम् वियोगशोकसामरमग्नाम (सप्तमी तत्पुरुष) ।

पृष्ठ १६-२० पैरा ७२ बाले...............भवान् इति ।

शब्दार्थ—दिव्य देहधारी=दिव्यदेह को धारण करने वाला। वल्लभः=स्वामी, पति । पालयिष्यति=पालन करेगा । घनशब्दोन्मुखा= बादल की आवाज की ओर मुँह की हुई । मन्मनोरथ फलायमानम्= मेरे मनोरथ के फलस्वरूप । मदनकृतसाहायेन=कामदेव को सार्थ

बनाए हुए। सपत्नीम्=सौत।

भावार्थ—हे बाले! दिव्य देहधारी कोई तरुण ब्राह्मण पति होकर इस सम्पूर्ण पाताल लोक का पालन करेगा उसकी आज्ञा को सुन कर बादल के शब्द की ओर मुँह करके वर्षाकाल के आने की सूचना पाने वाली चातकी की भाँति तुम्हारे दर्शन की इच्छा करने वाली मैं बहुत दिनों से यहाँ रह रही हूँ। मेरे मनोरथ के फलस्वरूप आपके आगमन को समझकर अपने राज्य के अवलम्बभूत मन्त्रियों की अनुमति से तथा कामवासना से आपके पास आई हूँ। अतः आप इस पाताल लोक की राजलक्ष्मी को स्वीकार करके मुझे उसकी सौत बना लो।

समास—अवलम्बभूतामात्यानां अनुमत्या अवलम्बभूतामात्यानुमत्या (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २० पैरा ७३ मातंग..............................आससाद।

शब्दार्थ—दिव्याङ्गनालाभेन=सुन्दर स्त्री की प्राप्ति से। हृष्टतरः =प्रसन्न। उररीकृत्य=स्वीकार करके। आससाद=प्राप्त हुआ।

भावार्थ—मातङ्ग भी राजवाहन की अनुमति से उस सुन्दरी के साथ विवाह करके दिव्य स्त्री की प्राप्ति से प्रसन्न पाताल के राज्य को स्वीकार करके परमानन्द को प्राप्त हुआ।

पृष्ठ २० पैरा ७४ राजवाहन..............................बभ्राम।

शब्दार्थ—क्षुत्पिपासादि क्लेशनाशनम्=भूख और प्यास के कष्ट को नष्ट करने वाली। निर्ययौ=चला गया। बभ्राम।

भावार्थ—राजवाहन सहायता करने से सन्तुष्ट हुए मातङ्ग से भूख और प्यास के कष्ट करने वाली कालिन्दी की दी हुई मणि को प्राप्त करके उस छिद्र के मार्ग से ही चला गया। यहाँ पर मित्रों को न देखकर पृथ्वी पर घूमने लगा।

समास—साहाय्य करणेन सन्तुष्टः तस्मात् साहाय्यकरणसन्तुष्टात् (तृतीया तत्पुरुष)

पृष्ठ २० पैरा ७५भ्रमश्च..............................पस्पर्श।

शब्दार्थ—विशालोपशल्ये=विशाल गाँव के पास। आक्रीडम्=

बगीचे में। विश्रमिपु=विश्राम की इच्छा वाला। आन्दोलिकारूढम् =पालकी पर बैठ हुए। आकाण्ड=अचानक। पादमूलम्=चरणों से। मौलिनां=मस्तक से। पस्पर्श=स्पर्श किया।

भावार्थ—घूमते २ एक दिन वह विशालपुरी के प स किसी बगीचे में पहुँचा और वहाँ विश्रम करने की चेष्टा करने लगा। तब तक पालकी में आरूढ़ रमणीयुक्त एवं आप्तजनों से परिवृत होकर आये एक पुरुष को देखा। वह पुरुप भी "अरे यह तो चन्द्रवंश के भूपण निर्मल यश वाले मेरे स्वामी राजवाहन है। बड़े भाग्य से मैं इनके चरणों में पहुँच गया इस समय बड़ा आनन्द हुआ।" ऐसा कहता हुआ पालकी से उतर गया तथा उसके चरणों का शिर से स्पर्श किया।

समास—आनन्दोलिकायाम् आरूढम् आनन्दोलिकारूढम् (सप्तमी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २१ प्रमोदाश्रुपूर्ण..................कथय इति।

शब्दार्थ—प्रमोदाश्रुपूर्णः=आनन्द के आँसुओं से पूर्ण। तम्=उस को। गाढम्=जोर से। आलिङ्ग्य=आलिङ्गन करके। सौम्य=भद्र व्याजहार=कहा। मनुजनाथेन=राजा ने। सप्रणयम=प्रेम से अभाणि=कहा। सखे=मित्र। एतावन्तम्=इतने। कस्मिन्=किस अस्थायि=ठहरे रहे। भवता=आप। सम्प्रति=इस समय, अब कुत्र=कहां। गम्यते=जा रहे हो। तरुणि=युवति। केयम्=यह कौन है। एपः=यह। परिजनः=स्वजन। सम्पादितः=बना लिया। कथम् क्यों, कैसे। कथय=कहो, बताओ।

भावार्थ—आनन्द के आँसुओं से पूर्ण राजा ने उसका जोर से आलिंगन करके 'हे भद्र सोमदत्त!' ऐसा कहा। फिर राजा ने प्रेमपूर्वक पूछा "मित्र! इतने समय तक किस देश में तथा किस प्रकार रहे और इस समय कहाँ जा रहे हो? यह युवति कौन है? इसे स्वजन कैसे बना लिया? यह सब बताओ।

समास—प्रमोदस्य अश्रव इति प्रमोदाश्रवः (पष्ठी तत्पुरुष)। तैः पूर्ण इति प्रमोदाश्रुपूर्ण (तृतीया तत्पुरुष)। मनुजानां नाथ इति

नाथः तेन मनुजन.जेन (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २१—सोऽपि=उसने भी । सविनयम्=नम्रता पूर्वक । आत्मीयप्रचार प्रकारम्=अपने भ्रमण की कथा । अवोचत्=कही ।

भावार्थ—उसने भी नम्रता पूर्वक अपने भ्रमण की कथा कही ।

समास आत्मीयः प्रचार इति आत्मीयप्रचारः (कर्मधारय) तस्य प्रकार इति आत्मीयप्रचारप्रकारस्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

सोमदत्त के द्वारा किया गया अपने वृतान्त का वर्णन

पृष्ठ २१—देव......................अपृच्छम् ।

शब्दार्थ—भवच्चरणकमल सेवाभिलाषीभूतः=आपके कमल जैसे चरणों की सेवा की इच्छुक हुआ । अहम्=मैं । भ्रमन्=घूमता हुआ । वनावनो=बन भूमि में । पिपासाकुलः=प्यास से व्याकुल । लता-परिवृत्तम्=बेलों से ढके हुए। पिबन्=पीते हुए। उज्ज्वलाकारम्=चमकदार। अद्राक्षम्=देखा। तदादाय=उसको उठाकर। गत्वा=जाकर। कञ्चन=कुछ। अध्वानम्=रास्ता। अम्बरमणेः=सूर्य की। अत्युष्णतया=अत्यन्त गर्मी होने के कारण। गन्तुम=चलने में। अक्षमः=असमर्थ । देवतायतनम्=मन्दिर । प्रविष्टः=घुसा हुआ। दीना-ननम्=मलिन मुख वाले। बहुतनयसमेतम्=बहुत से पुत्रों सहित। स्थविरम्=बूढ़े ब्राह्मण को। अवलोक्य=देखकर। उदितदयः=दयालु हुआ। अपृच्छम्=पूछा।

भावार्थ—देव ! आपके चरणकमलों की सेवा के इच्छुक हुआ मैंने एक वन भूमि में घूमते हुए प्यास से व्याकुल होकर बेलों से ढके हुए ठण्डा नदी का जल पीते हुए एक बहुत चमकदार रत्न को देखा। उसको उठा कर कुछ रास्ता चलकर सूर्य की अत्यन्त गर्मी के कारण चलने में असमर्थ होकर मैं एक देवालय में घुसा और वसां मलिन मुख वाले कोई पुत्रों सहित एक बूढ़े ब्राह्मण को देख दयावान् हुआ मैंने सभ्यता से पूछा।

समास—चरणौ कमले इव इति चरणकमलौ (कर्मधारय) भवतः

चरण कमलौ इति भवच्चरणकमलौ (षष्ठी तत्पु०) तयोः सेवा इति भवच्चरणकमलसेवा (षष्ठी तत्पु०) तस्यामभिलाषी इति भवच्चरणकमल सेवाभिलाषी (सप्तमी तत्पु०)। पिपासयाकुल इति पिपासाकुल (तृतीया तत्पु०)। लताभिः परिवृत्तमिति लतापरिवृत्तम् (तृतीया तत्पु०)। बहु तनया इति बहुतनयास्तैः समेतमिति बहुतनयसमेतम् (तृतीया तत्पु०) स्थाविरश्चासौ महीसुर इति स्थाविरमहीसुरस्तम् स्थविरमहीसुरम् (कर्म धारय)।

पृष्ठ २१ अवोचत्..........शिवालयेऽस्मि इति।

शब्दार्थ—अग्रजन्मा=पूर्वज। सुतानेतान्=इन पुत्रों को। रक्षन्=रक्षा करता हुआ। इदानीम्=अब। भैक्ष्यं सम्पाद्य=भिक्षा माँग कर दद्तेभ्यः=इनको देते हुए। वसामि=रहता हूँ। शिवालये=शिव मन्दिर में।

भावार्थ—उस पूर्वज (बूढ़े ब्राह्मण) ने कहा—'महाभाग! माता से हीन इन पुत्रों की अनेक उपायों से रक्षा करता हुआ मैं अब इस बुरे देश में भिक्षा मांग कर इनको देता हुआ इस शिवमन्दिर में रहता हूँ'।

पृष्ठ २१—भूदेव..........अकारयत्।

शब्दार्थ—भूदेव=ब्राह्मण। एतत्कटकाधिपतिः=इस सेना का स्वामी। किन्नामधेयः=क्या नाम है। पृष्टः=पूछा गया। अभाषत=कहा। पलायितुः=पालन करने वाले। वीरकेतोः=वीरकेतु की। तनयाम्=पुत्री को। तरुणीरत्नम्=युवतियों में श्रेष्ठ। असमानलावण्यम् =अनुपम सौन्दर्य को। श्रावंश्रावम्=सुन सुनकर। अवधूत दुहितृ प्रार्थनस्य=पुत्री विषयक प्रार्थनाओं से विकल। अरौत्सीत्=घेर लिया। भीतः=डरा हुआ। अदात्=दे दी। तरुणीलाभहृष्टचेताः=तरुणी की प्राप्ति से प्रसन्न हृदय वाला। परिणेया=विवाह किया जाय। मृगया दरेण=शिकार खेलने की इच्छा से। सैन्यावासम्=सेना का पड़ाव। अकारयत्=करवाया।

भावार्थ—सोमदत्त ने ब्राह्मण से कहा—'हे विप्रवर! इस सेना का स्वामी किस देश का राजा है? उसका क्या नाम है? और उसके य

आने का क्या कारण है'। ऐसा पूछने पर ब्राह्मण ने कहा—हे सौम्य ! मत्तकाल नाम के लाटेश्वर ने इस देश के पालन करने वाले वीरकेतु नाम के राजा की वामलोचना नाम की पुत्री सर्वश्रेष्ठ तरुणी तथा उसके अनुपम सौन्दर्य को सुनकर अपनी पुत्री विषयक प्रार्थनाओं से निकाल उसकी (हीरकेतु की) नगरी को घेर लिया। वीरकेतु ने भी डर कर महान् उपाय समझ कर अपनी पुत्री को मत्तकाल को दे दिया। तरुणी की प्राप्ति से प्रसन्न हृदय वाले लाटतति ने 'विवाह अपने नगर में ही किया जाय' ऐसा निश्चय करके अपने देश को जाते हुए इस समय शिकार की इच्छा से इस वन में ही सेना का पढ़ाव डलवा दिया है।

समास—तरुण्या लाभः तरुणीलाभः (षष्ठी तत्पु०) तेन हृष्टं चेतो यस्य सः तरुणीलाभहृष्टचेताः (बहुब्राहि)।

पृष्ठ २२—कन्यासारेण .... अन्तर्विभेद इति।

शब्दार्थ—मानधनः=मानी। चतुरंगबलसमन्वितः=रथ, हाथी, घोड़े तथा पैदल चारों प्रकार की सेना सहित। रचितशिविरः=कैम्प लगाये हुए। निजनाथावमान खिन्नमानसः=अपने स्वामी से दुःखित हृदय वाला अन्तर्विभेद=हृदय से बिंध गया।

भावार्थ—कन्यासार से नियुक्त मानपाल नाम का वीरकेतु का मानी मन्त्री चतुरंगिणी सेना के साथ किसी दूसरे स्थान पर कैम्प लगाये हुए था। अपने स्वामी के उस अपमान से खिग्न हृदय वाला वह हृदय से बिंध गया।

समास—मानमेव धनं यस्यासौ मा धनः (बहुव्रीहि)। निजनाथस्यावमानमिति निजनाथावमानम् (षष्ठी तत्पु०) तेन खिन्नं मानसं यस्य स निजनाथावमानखिन्नमानस सः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २२ विप्रोऽसौ .... इत्यदर्शयत्।

शब्दार्थ—परमह्लादविकसिताननः=अत्यन्त आनन्द से प्रसन्न। अभिहितानेकाशीः=अनेक आशीर्वाद देने वाला। कुत्रचित्=कहीं। जगाम। अध्वश्रमखिन्नेन=रास्ते की थकान से खिन्न। मया=मैंने।

निरवेशि=अनुभव किया । तदनु=इसके बाद । पश्चान्निगडित बाहुयुगलः=दोनों बाहों को कमर के पीछे बाँधे हुए । भूसुरः ब्राह्मण । कशाघातचिन्हितगात्रः=कोड़े की चोटों से शरीर पर निशान पड़ा हुआ । अनेकनैस्त्रिंशिकानुयातः=अनेक निर्दय ठगों से पीछा किया जाता हुआ । अभेत्य=पास कर । दस्युः—ठग्गा, लुटेरा । अदर्शयत्—दिखाया ।

भाव र्थ—यह ब्राह्मण बहुत पुत्र वाला, विद्वान, निर्धन तथा बूढ़ा है अतः दान योग्य है, यह सोच कर दयापूर्ण मन से उसको मैंने रत्न दे दिया । अत्यन्त आनन्द से प्रसन्न मुख वह पूर्वज अनेक आशीव द देकर कहीं चला गया । रास्ते की थकान से खिन्न मैंने निद्रासुख का अनुभव किया [सो गया] । इसके पश्चात् करके पीछे दोनों हाथ बाँधे हुए वह ब्राह्मण कोड़ों की चोट के निशानों से चिन्हित शरीर वाला अनेक निर्दय ठग्गों से पीछा किया हुआ मेरे पास आया और 'यह ठग्गा है' ऐसा कह कर मुझे दिखाया ।

समास—परमश्चासौ आल्हादः परमाल्हादः (कर्मधारय) तेन विकसितमानन यस्य स परमाह्लादविकसिताननः (बहुव्रीहि) । बाह्वोः युगलः बाहुयुगलः (षष्ठी तत्पु०) पश्चात् यथास्यात् तथा निगडितः येनासौ (बहुव्रीहि) । कशायाः आघातः इति कशाघातः (षष्ठी तत्पु०) कशाघातेन चिह्नितं गात्रं यस्यासौ कशाघातचिह्नितगात्र (बहुव्रीहि) ।

पृष्ठ २२—परित्यक्तभूसुराः.................. किमिदमिति ।

शब्दार्थ—परित्यक्तभूसुराः=ब्राह्मण को छोड़े हुए । राजभटाः=राजा के वीर, सैनिक । रत्नावाप्तिप्रकारम्=रत्न की प्राप्ति का ढङ्ग । मदुक्तम्=मेरे द्वारा कहा हुआ । अनाकर्ण्य=न सुनकर । नियम्य=बाँधकर । रज्जुभिः=रस्सियों से । आनीय=लाकर । कारागारम्=किले में । सखाय=मित्र । कांश्चिन्=कुछ । निगडितान=बँधे हुए, कैदी । निर्दिष्टवन्तः=दिखाये । निगडित चरण युगलम्=दोनों पैर बँधा हुआ । अकार्षुः=कर दिया । अवाचि=कहा । वीर्यपरुषाः=वीरता से कठोर । निर्विशाय=डाले गये हो । यूयम्=तुम सब । वयस्याः

मित्र। निर्दिष्टम्=निर्देश किया है, बताया है। एतैः=इन्होंने। किमिदम्=यह क्या बात है।

भावार्थ—ब्राह्मण को छोड़कर राजा के सैनिकों ने मेरे द्वारा कही गई रत्न की प्राप्ति के प्रकार को न सुनकर भय रहित मुझको रस्सियों से खींच कर बाँधकर और किले में लाकर 'ये तुम्हारे मित्र हैं' ऐसा कहकर मुझे कुछ कैदी दिखाये और मेरे भी दोनों पैर बाँध दिये। किंकर्तव्य विमूढ़ कष्ट के अनुभव से बिल्कुल निराश मैंने कहा—"हे वीरता से कठोर पुरुषों किस कारण से तुम लोग इस दुस्तर कारावास के दुख में पड़े हो तुम मेरे मित्र हो, ऐसा इन्होंने [सैनिकों ने] निर्देश किया है, यह क्या बात है।"

समास—परित्यक्तः भूसुरः यैस्ते परित्यक्तभूसुराः (बहुव्रीहि)। रत्नस्यावाप्तिः इति रत्नावाप्ति (षष्ठी तत्पुरुष) तस्याः प्रकार इतिरत्नावाप्तिप्रकारः तम् (षष्ठी तत्पुरुष)। चरणयोः युगल इति चरणयुगलः (षष्ठी तत्पुरुष)। निगडितः चरणयुगलः यस्यासौ निगडितचरणयुगलः तम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २३—चोरवीराः.........................किलाशृङ्खलयन्।

शब्दार्थ—अवोचत्=कहा। किङ्करा=दास, नौकर। वयम्=हम सब। तद्गारम्=उसके निवासगृह में। प्रविश्य=घुस कर। विषण्णाः =खिन्न, दुःखी। आहृत्य=लेकर, चुराकर। महारण्यम्=विशाल जङ्गल में। अपरेद्युश्च=और दूसरे दिन। पदान्वेषिणः=पैरों के चिन्हों का अन्वेषण करने वाले। राजानुचराः=राजा के नौकर। अभ्येत्य= पास आकर। धृतनचयान्=धनका ढ़ेर लिए हुये। परितः=सब ओर से। परिवृत्य=घेर कर। समस्तवस्तु शोधन वेलायाम्=सम्पूर्ण वस्तुओं संभालने के समय। अनर्घ्यरत्नस्य=अमूल्य रत्न के। अस्मद्वधाय= हमारी मृत्यु के लिये। माणिक्यादानात्=रत्न के न देने से। अस्मान्= हमको। किलाशृङ्खलयन्=जंजीर से बाँध दिये।

भावार्थ—वीर चोरों ने फिर कहा—'महाभाग! हम वीरकेतु के मन्त्री मानपाल के सेवक हैं। उसकी [मानपाल की] आज्ञा से लाटेश्वर

को मारने के लिए रात में सुरङ्ग के रास्ते से उसके घर में घुस कर वहाँ राजा के न होने से खिन्न हुए हम लोग बहुत साधन चुरा कर विशाल जङ्गल में गये। दूसरे दिन पद-चिन्हों का अन्वेषण करते हुए बहुत से राजा के नौकरों ने आकर धन के समूह को लिए हुए हमको सब तरफ से घेर कर जोर से बांध लिया और पास में लाकर सब वस्तुओं को संभालने के समय एक अमूल्य रत्न के न होने से हमें मारने के लिये सबको जंजीरों से बाँध दिया।"

समास—धनस्य चय इति धनचयः (षष्ठ तत्पुरुष) धृतः धन चयः यैस्ते धृतधनचयास्तान् (बहुव्रीहि)। समस्तानि च यानि वस्तूनि इति समस्त वस्तूनि (कर्मधारय) तेषां शोधनमिति समस्तवस्तुशोधनम् (षष्ठी तत्पुरुष)। तस्य समस्त वस्तुशोधन वेला तस्याम् (षष्ठी तत्पु०)।

पृष्ठ २३—श्रुतरत्नावलोकनस्थानः··············मामार्चयत्।

शब्दार्थ—श्रुतरत्नावलोकनस्थानः=रत्न को देखने का स्थान सुन लेने वाला। नामधेयम्=नाम। युष्मदन्वेषणपर्यटन प्रकारम्=आपको खोजते हुए घूमने का प्रकार। अभाष्य=कह कर। संलापैः=बातों से। अकार्षम्=कर ली। निर्भिद्य=तोड़कर, काट कर। द्वाःस्थगणस्य= द्वारपालों के समूह के। आयुधजालम्=शस्त्रों का समूह। पुररक्षन्= नगर के पहरेदारों को। पुरतः=सामने से। अभिमुखागतान्=अपनी ओर आते हुए। पराक्रमलीलया=अत्यन्त वीरता के साथ। अभिद्राव्य =मारकर। प्राविशम्=घुसा। निशम्य=सुनकर। मामार्चयत्=मेरा स्वागत किया।

भावार्थ—रत्न के देखने के स्थान को सुनने पर 'यह वही रत्न है' ऐसा निश्चय करके ब्राह्मण को दान में देने के कारण हुई बुरी अवस्था को तथा अपना जन्म, नाम और तुम्हें खोजने के लिये घूमने के प्रकार को उनसे बताकर समयोचित (अवसर के अनुकूल) बातों से उनके साथ मित्रता कर ली। इनके पश्चात् आधी रात के समय उनके तथा अपने जंजीरों के बन्धनों को तोड़ कर उनको पीछे अपने साथ लेकर सोये हुए द्वारपालों के शस्त्रों को लेकर सामने से अपनी ओर आते हुए नगर

पहरेदारों को अत्यन्त वीरता के साथ -ार कर मानपाल के कैम्प में प्रविष्ट हुआ। मानपाल ने अपने नौकरों से कुलाभिमान का वृत्तान्त तथा उस समय की वीरता को सुनकर मेरा स्वागत किया।

समास—रत्नस्यावलोनम् इति रत्नावलोकनम् (षष्ठी तत्पु०) तस्य स्थानमिति रत्नावलोकनस्थानम् (षष्ठी तत्पु०) श्रुतरत्नावलोकनस्थानः (बहुव्रीहि)। भूदेवाय दानमिति भूदेवदानम् (तुर्थी तत्पु०) भूदेवदानमेव निमित्तं यस्याः सा भूदेवदाननिमित्ता ताम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २४ परेद्यु.......................प्राहरम्।

शब्दार्थ—परेद्युः=दूसरे दिन प्रेपिताः=भेजे हुए। उपेत्य=पास में जाकर। अपहृत्य=चुराकर। प्राविशन्=घुस गये हैं। तानर्पय=उन्हें दे दो। नोचेत्=नहीं तो। (यदि ऐसा नहीं करोगे तो)। क्रूरतरम =अति कठोर। अब्रुवन=कहा। रोषारुणितनेत्रः=क्रोध से लाल आँखों वाला। वराकस्य=बेचारे की, दान की। लभ्यम्=प्राप्त होने योग्य। तान्निरभर्त्सयन्=उनको धमकाये। विप्रलापम्=कठोर वचन। कुपितः=क्रुद्धः। दोर्वीर्यगर्वेण=अति वीरता के अभिमान से। अल्पसैनिकसमेतः=थोड़े से सैनिकों के साथ। योद्धुमभ्यगात्=युद्ध करने के लिये चढ़ा। कृतरणनिश्चयः=युद्ध का निश्चय किये हुए। सन्नद्धयोधः=युद्ध के लिये तैयार सैनिकों वाला। युद्धकामः=युद्ध का इच्छुक। भूत्वा होकर। निरगात्=निकल पड़ा। रिपूद्धरणोद्युक्तम्=शत्रुओं का नाश करने के लिए उद्यत। अन्वगाम=पीछे चला। परस्पर मत्सरेण=आपसी ईर्ष्या के कारण। तुमुलसङ्गरकरम्=घोर युद्ध करने वाली। उभयसैन्यम्=दोनों सेनाओं से। अतिक्रम्य=अतिक्रमण करके। समुल्लसद्भुजा‍ोतेन=फूलती हुई विशाल भुजाओं से। वाणवर्षम्=बाणों की वर्षा। तदंगे=उसके शरीर पर। विमुञ्चन=छोड़ते हुए। अरातीन्=शत्रुओं को। प्राहरम्=प्रकार किया।

भावार्थ—दूसरे दिन मत्तकाल के द्वारा भेजे हुए कुछ पुरुषों ने मानपाल के पास आकर कहा कि हे मन्त्रिन्! हमारे राजा के घर में से सुरङ्ग के रास्ते स बहुत सा धन चुरा कर चोर आपकी सेना में घुस गये हैं।

उन्हें दे दो "नहीं तो महान् अनर्थ हो जायेगा। यह सुनकर क्रोध से लाल आँखों वाले मन्त्री ने "लाटपति कौन होता है, उससे हमारी क्या मित्रता, फिर इस बेचारे (दीन) की सेवा से क्या मिलना है" इस प्रकार उन्हें धमकाया। उन्होंने मानपाल के द्वारा कहे गये कठोर वचन को उसी प्रकार मत्तपाल को कह दिया। क्रुद्ध हुए लाटपति ने भी अपनी सेना की वीरता के घमण्ड से थोड़े से सैनिकों को साथ-साथ लेकर युद्ध के लिए चढ़ाई कर दी। पहले से ही युद्ध का निश्चय किया हुआ युद्ध के लिए तत्पर सैनिकों वाला मानपाल भी युद्ध के लिये इच्छुक होकर वेग से निकल पड़ा। मैंने भी अपने बल के भरोसे शत्रुओं का नाश करने के लिए उद्यत मन्त्री का अनुसरण किया। परस्पर के द्वेष और ईर्ष्या के कारण घोर युद्ध करती हुई दोनों सेनाओं का अतिक्रमण (आगे बढ़ कर) करके फूलती हुई विशाल भुजाओं से उनके शरीर पर बाणों की वर्षा करते हुए मैंने शत्रुओं पर प्रहार किया।

समास—मदीयोराजेति मदीयराज (कर्मधारय) तस्य मन्दिरे इति मदीयराजमन्दिरे (षष्ठी तत्पु०)। रणस्य निश्चय इति रणनिश्चयः (षष्ठी तत्पु०) कृतः रणनिश्चयो येनासौ कृतरणनिश्चयः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २४—ततोऽति.................................... अकार्षीत्।

शब्दार्थ—अतिरयतुङ्गमम् = बहुत तेज घोड़े वाले। शीघ्रलङ्घितो तदीयरथः = जल्दी से उसके रथ से आगे बढ़ जाने वाला। शिरः कर्तन-मकार्षम् = सिर काट लिया। परमानन्दसम्भृतः = अत्यन्त आनन्द से युक्त। सम्भावनाम् = प्रशंसा।

भावार्थ—इसके बाद अत्यन्त वेगवान् घोड़ों वाले अपने रथ को उसके पास ले जाकर अति शीघ्रता से उसके रथ के आगे बढ़ते हुए मैंने शत्रु का सिर काट दिया। उसके मर जाने पर अति आनन्दित हुए मन्त्री ने मेरी अनेक प्रकार की प्रशंसा की।

पृष्ठ २५—मानपाल प्रेषितात्.................... लब्धः इति।

शब्दार्थ—मानपालप्रेषितात् = मानपाल के भेजे हुए। तदनुचरात् = उसके नौकर से। उदन्त जातम् = समाचार। विस्मयमानः = व

होते हुए। अमात्यबान्धवानुमत्या = मन्त्रियों तथा बन्धुओं की सम्मति से। अनुदिनम = प्रतिदिन। आराधितमहीपालचित: = राजा के मन को प्रसन्न करता हुआ। भवद्विरहवेदनाशल्यसुहृदय: = आपसे विरह की पीड़ा के शूल से सुलभ व्याकुल हृदय वाला। सिद्धादेशेन = सिद्ध के आदेश से। सुहृज्जनावलोकनफलम् = मित्रों के दर्शन रूप फल से युक्त। अराधनाय = अराधना (पूजा) करने के लिए। अद्य = आज। समागतोऽस्मि = आया हूँ। (त्वत्पदारविन्द सन्दर्शनानन्द सन्दोह: = आपके चरण कमलों के दर्शन से होने वाले आनन्द का समूह। लब्ध = प्राप्त कर लिया है।

भावार्थ—मानपाल के द्वारा भेजे गये उसके नौकर से इस सम्पूर्ण समाचार को सुनकर प्रसन्नमन राजा ने प्रसन्न होकर मेरी वीरता पर चकित होते हुए अपने मन्त्रियों तथा वान्धवों की सम्मति से शुभ दिन में बड़े उत्सव के साथ अपनी कन्या मुझे दे दी। इसके बाद युवराज पद पर अभिषेक किया मैं प्रतिदिन राजा के चित्त को प्रसन्न करता हुआ इस वामलोचना के साथ अनेक प्रकार के सुखों का अनुभव करता हुआ भी आपके विरह की पीड़ा के शूल से सुलभ व्याकुल हृदय वाला सिद्ध की आज्ञा से मित्रों के दर्शन रूप फल से युक्त इस प्रदेश में महाकाल निवासी परमेश्वर (भगवान शङ्कर) की आराधना करने के लिए आज अपनी पत्नी के सहित आया हूँ। भक्तवत्सल गौरी के प्रति भगवान शङ्कर की कृपा से आपके चरण कमलों के दर्शन से होने वाले आनन्द का समूह प्राप्त होगया।"

समास—भवतो विरह इति भवद्विरह: (शष्ठी तत्पुरुष) तस्य वेदनेति भवद्विरहवेदना (षष्ठी तत्पुरुष) सैव शल्यमिति भवद्विरहवेदनाशल्यम् (कर्मधारय) तेन सुलभं वैकल्यं हृदये यस्य स भवद्विरहवेदनाशल्यसुलभवैकल्यहृदय: (बहुव्रीहि)। पदौ अरविन्दे इवेति पदारविन्दौ इति त्वत्पदारविन्दौ (षष्ठी तत्पुरुष) तयो: सन्दर्शमिति त्वत्पदारविन्दसन्दर्शनम् (षष्ठी तत्पुरुष) तेन आनन्द इति त्वत्पदारविन्दसन्दर्शनानन्द: (तृतीया तत्पुरुष) तस्य सन्दोह इति त्वत्पदारविन्दसन्दर्शनानन्दसन्दोह:

(षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २५ तन्निशम्य.................................दर्शयामास।

शब्दार्थ—तन्निशम्य = यह सुनकर। अभिनन्दितपराक्रमः = पराक्रम की प्रशंसा करने वाला। तस्मै = उसको। दर्शयामास = दिखाया।

भावार्थ—यह सुनकर पराक्रम की प्रशंसा कर चुकने पर राजवाहन उस निरपराध दण्ड में भाग्य को उलाहना देकर उसको क्रमशः अपना वृत्तान्त सुनाया। उसी अवसर पर सामने पुष्पोद्भव को देखकर "सौम्य सोमदत्त! यह है वह पुष्पोद्भव" ऐसा कहकर उसको वह दिखाया।

समास—अभिनन्दितः पराक्रमो येनासौ अभिनन्दितपराक्रम (बहु०)

पुष्पोद्भव द्वारा किया गया वृत्तान्त वर्णन

पृष्ठ २५—तौ च.................................अलपन्।

शब्दार्थ—विसृज्य = त्याग कर। अन्योन्ययालिङ्गनसुखम् = एक दूसरे के आलिङ्गन का सुख। अन्वभूताम् = अनुभव किया। महीरुहस्य = वृक्ष के। उपविश्य = बैठकर। करिष्णुः = करने का इच्छुक। विदितार्थः = ज्ञात प्रयोजन वाला। सर्वथा = सब प्रकार से। अन्तरायाम् = वाधा। परित्यज्य = छोड़कर। भवतः = आपको। निरगाम् = चला गया था। प्रबुद्धः = जागा। मदन्वेषणाय = मुझे खोजने के लिये। गतवान् = गया। एकाकी = अकेला। ललाटपटचुम्बदंजलिपुटः = मस्तक से अंजलि बाँधे हुए। अलपत् = कहा।

भावार्थ—तब उन दोनों ने बहुत समय के विरह के दुःख को त्याग कर एक दूसरे के आलिङ्गन के सुख का अनुभव किया। इसके बाद उसी वृक्ष की छाया में बैठकर आदरपूर्वक हँसते हुए कहा—'मित्र, ब्राह्मण का कार्य करने के इच्छुक हुए मैंने 'मित्रों का समूह मेरे प्रयोजन से विदित होकर सब प्रकार वाधा करेगा' यह सोचकर आपको सोते छोड़ कर चला गया था। इसके पश्चात् जागा हुआ मित्रों का समूह क्या निश्चय करके मुझे खोजने के लिये कहाँ गया। आप अकेले कहाँ गये। उसने (पुष्पोद्भव) ने भी अँजलि बाँध कर मस्तक से लगाये हुए

नम्रतापूर्वक कहा—

पृष्ठ २६—देव .... अगच्छत्।

शब्दार्थ—महीसुरोपकारायैव = ब्राह्मण के उपकार के लिये ही। निश्चित्यापि = निश्चय करके भी। गन्तव्यम = जाने योग्य। निर्णेतुम = निर्णय करने में अशक्नुवान: = असमर्थ। वियुज्य = बिछुड़कर, अलग २ होकर। दिक्षु = दिशाओं में। अन्वेष्टुम = अन्वेषण करने के लिए, खोजने के लिए।

भावार्थ—स्वामिन्! ब्राह्मण के उपकार के लिए ही आप गये हैं ऐसा निश्चय करके भी स्वामी के गन्तव्य देश का निर्णय करने में असमर्थ मित्रों का समुदाय आपस में बिछुड़ कर सब दिशाओं में आप को खोजने के लिये गया।

पृष्ठ २६—अहमपि .... अपृच्छम।

शब्दार्थ—महीमटन = पृथ्वी पर घूमते हुये। कदाचित् = कभी। अम्बरमध्यगतस्य = आकाश के मध्य भाग में आये हुए। असहिष्णु: = सहन करने में असमर्थ। उपाविशम् = बैठ गया। दिनमध्यसंकुचित सर्वावयवाम् = दिन के मध्य भाग [दोपहर में सब अङ्गों से संकुचित [सिकुड़ी हुई]। कूर्माकृतिम् = कछुए के आकार की। मानुषच्छायाम् = मनुष्य की परछाईं। निरीक्ष्य = देखकर। महारयेण = अत्यन्त वेग से। पतन्तम = गिरते हुए। कश्चिदन्तराले एव = कुछ ही दूरी पर। दयोपनत हृदय: = दयापूर्ण हृदय वाला। अवलम्ब्य = सहारा देकर। शनै: = धीरे से। अवनितले = भूमि पर। निक्षिप्य = डाल कर। दूरापातवीत-संज्ञम् = दूर से गिरने के कारण मूर्च्छित। शिशिरोपचारेण = ठण्डे उपचार से। विबोध्य = होश में लाकर। शोकातिरेकेण = शोक की अधिकता से। उद्गतवाष्पलोचनम् = आँखों में आँसू आये हुए। भृगु-पतन कारणम् = भारी पतन का कारण। अपृच्छम् = पूछा।

भावार्थ—मैं भी स्वामी को अन्वेषण करने के लिए पृथ्वी पर भ्रमण करता हुआ कभी आकाश के मध्य भाग में पहुँचे हुए [दोपहर के] सूर्य की किरणों को सहन करने में असमर्थ पर्वत के तट पर खड़े

वृक्ष की सघन शीतल छाया में क्षण भर बैठ गया। अपने सामने दिन के मध्य भाग में सब अङ्गों में संकुचित कछुए की आकार की परछाई को देखकर ऊपर को मुँह किये हुए मैंने आकाश तल से अत्यन्त वेग से गिरते हुए मनुष्य को कुछ ही दूर पर देखा। दयापूर्ण हृदय वाले मैंने उसे संभाल कर धीरे से पृथ्वी पर डाला और बहुत ऊँचे से गिरने के कारण मूर्च्छित हुए उसको ठण्डे उपचार से होश में लाकर शोक के आधिक्य से आँखों में आँसू आये हुए उसको महान् पतन का कारण पूछा।

समास—दिन मध्ये संकुचितः सर्वेऽवयवाः यस्याः सा दिनमध्यसंकुचितसर्वावयवाताम् (बहुव्रीहि)। उद्गतानि वाष्पाणि लोचनयोः यस्य स उद्गतवाष्पलोचनः तम (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २६—सोऽपि ....अकार्षम्' इति।

शब्दार्थ—कररुहः=अँगुलियों से। अपनयन्=पोंछता हुआ। आत्मसंभवः=पुत्र। परिणीय=विवाह करके। प्रत्यागच्छन्=लौटता हुआ। अम्बुधौ=समुद्र में। अनतिदूर एव=निकट ही। प्रवहणस्य=बेड़े के। भग्नतया=टूट जाने से। निमग्नेषु=डूब जाने पर। कथङ्कथमपि=किसी प्रकार। दैवानुकूल्येन=भाग्य की अनुकूलता से। अभिगम्य=पहुँच कर। निजाङ्गना वियोगदुःखार्णवे=अपनी स्त्री के वियोग के दुःख के समुद्र में। प्लवमानः=डूबता हुआ। षोडस=सोलह। हायनानि=वर्ष। नीत्वा=विताकर। अनवेक्षमाणः=न देखता हुआ।

भावार्थ—उसने भी अँगुलियों से आँसू पोंछते हुए कहा—"सौम्य! मैं मगध के राजा के मन्त्री पद्मोद्भव का पुत्र रत्नोद्भव हूँ। व्यापार के लिए कालयवन द्वीप में पहुँच कर मैंने किसी वणिक् की कन्या के साथ विवाह कर लिया और उसके साथ ही लौटते हुए समुद्र में किनारे के पास ही बेड़े के टूट जाने के कारण सब के डूब जाने पर किसी प्रकार भाग्य की अनुकूलता से किनारे पर पहुँचकर मैंने अपनी पत्नी के वियोग के दुःख रूपी समुद्र में डूबे हुए किसी सिद्ध तपस्वी के आदेश को मानकर सोलह वर्ष किसी तरह विताये और फिर भी अपने दुःख का

न देखते हुए पर्वत से गिर पड़ा हूँ।

समास—निजाङ्गनायाः वियोग इति निजाङ्गनावियोगः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य दुःखमिति निजाङ्गना वियोग दुःखम् (षष्ठी तत्पुरुष) तदेवार्णवमिति निजांगनावियोग दुखार्णवम् (कर्मधारय)।

पृष्ठ २७—तस्मिन्नेवावसरे......................विशति इति।

शब्दार्थ—नारीकूजितम्=स्त्री के रोदन की आवाज। अश्रावि=सुना। पतितनय मिलने=पति तथा पुत्र से मिलने में। वैश्वानम्=अग्नि में।

भाव र्थ—उसी अवसर पर कुछ स्त्री के रोदन की आवाज सुनी 'यह उचित नहीं है कि सिद्ध के द्वारा पति तथा पुत्र के मिलन का आदेश देने पर विरह को सहन करने में असमर्थ अग्नि में प्रवेश करते हो।'

समास—पतिश्चतनयस्चेति पतितनयौ (द्वन्द) तयोः मिलनमिति पतितनयमिलनम् तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २७—तन्निशम्य......................स्थीयताम् इति।

शब्दार्थ—मनोविदितजनक भावम्=मन में पिता के भाव को समझा हुआ। तम्=उसको। अत्रादिपम्=कहा। भवते=आपको। विज्ञापनीयानि=निवेदन करने योग्य। सन्ति=हैं। भवतु=अच्छा। आख्यातम्=कहना चाहिये। अधुना=अब। अनुपेक्षणीयम=ध्यान देना चाहिये।

भावार्थ—यह सुनकर मन में पिता के भाव को समझते हुए उसको मैंने कहा "तात! आपसे बहुत कुछ निवेदन करना है। अच्छा तो सब कुछ बाद में कहा जाय। अब मैं जरा इस स्त्री के रोदन की ओर ध्यान दूँ। आप क्षणभर के लिए यहाँ बैठे।

समास—जनकस्य भाव इति जनकभावः (षष्ठी तत्पुरुष) मनसि विदितः जनकभावो येनासौ इति मनोविदितजनकभावस्तम (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ २७—तदनुसोऽहम......................कथ्यताम् इति।

शब्दार्थ—त्वरया=शीघ्रता से। किंचिदन्तरम=कुछ दूर। (अगमम्=गया। भयङ्करज्वाला कलापपरिवृतहुताशनम्) ... =भयङ्कर लपटों

से युक्त अग्नि में कुछ कूदने का साहस करने वाली। मुकुलितांजलि-पुटाम्=अँजलि बाँधे हुए। अभ्यर्णम्=समीप। अभिगमय्य=लेजा कर। स्थविराम्=बूढ़ी को। कुत्रत्ये=कहाँ की रहने वाली। कान्तारे=जंगल में। निमित्तेन=कारण से। अनुभूयते=अनुभव कर रही हो। कथ्यताम्=कहो।

भावार्थ—इसके पश्चात् मैं तेज़ी से कुछ दूर गया। वहाँ भयंकर लपटों वाली अग्नि में कूदने का साहस की हुई अँजलि बाँधे हुए किसी स्त्री को एकदम अग्नि से हटा कर रोती हुई बुढ़िया के साथ अपने पिता के पास ले जाकर बूढ़ी से मैंने कहा—"बुढ़िया! आप कहाँ की हैं। जंगल में किस कारण से इस बुरी अवस्था का अनुभव कर रही हो।"

समास—भयंकराश्च याः ज्वालाः इति भयंकरज्वालाः (कर्मधारय) ताभिराकुलो यो हुतभुक् इति भयंकरज्वालाकुलहुतभूक् (तृतीया तत्पु०) तस्यावगाहनम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् सा हसिकामिति भयंकरज्वाला-कुलहुत भुगवगाहनसाहसिकाम (सप्तमी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २८—सा सगद्गदम्..............................आसीत' इति।

शब्दार्थ—वणिजः=बनिये की। निजकान्तेन=अपने पति के साथ। आगच्छन्ती=आती हुई। मग्ने=डूब जाने पर। फलकम्=तख्ते को। अवलम्ब्य=सहारा लेकर, पकड़ कर। कूलम्=किनारा। आसन्न प्रस-वया=समीप प्रसवकाल [बच्चे को जन्म देने का समय] वाली। अट-व्याम्=बन में। आत्मजम्=पुत्र को। असूत=जन्म दियां। वन-मातंगैन=जंगली हाथी से। गृहीते=पकड़ लेने पर। तावन्तम्=उतने। सोढुम्=सहन करने में। अक्षमा=असमर्थ। वैश्वानरे—अग्नि में। आहुत कर्तुम्—आहुति देने के लिये। उद्युक्ता—तैयार।

भावार्थ—उसने गद्गद् स्वर से कहा—"पुत्र! कालयवन द्वीप के काल गुप्त नाम के किसी वणिक् की यह सुवृत्ता नाम की पुत्री अपने पति रत्नोद्भव के साथ आती हुई समुद्र में बेड़े के डूब जाने पर अपनी धाय मेरे साथ एक तख्ते का सहारा लेकर दैवयोग से किनारे पर पहुँच गई और समीप प्रसवकाल वाली इसने किसी बन में पुत्र को ज-

दिया। मेरे दुर्भाग्य से बालक को जंगली हाथी के पकड़ लेने पर मेरे साथ घूमती हुई इसने 'सोलह वर्ष के पश्चात् तेरा तेरे पति तथा पुत्र से मिलन होगा' इस सिद्ध के वचन में विश्वास से एक पुण्याश्रम में उतना समय बिताया और अपार शोक को सहन करने में असमर्थ वह जलती हुई आग में शरीर की आहुति देने के लिए तैयार थी।"

समास—सिद्धस्यवाक्यमिति सिद्धवाक्यम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् इति सिद्ध वाक्य विश्वासात् (सप्तमी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २८—तदाकर्ण्य..................उपाविशताम्।

शब्दार्थ—तदाकर्ण्य=यह सुनकर। ज्ञात्वा=जानकर। प्रणम्य=प्रणाम करके। मद्वृत्तम=अपना समाचार। आख्याय=कह कर। धात्रीभाषण फुल्लवदनम्=धाय के कथन से प्रसन्न मुख। विस्मयविकसिताक्षम्=आश्चर्य से बड़ी आँखों वाले। जनकम्=पिता को। साभिज्ञानम=चिन्ह। अन्योन्यम=परस्पर। मुदितान्तरात्मानौ=प्रसन्न हृदय वाले। आनन्दाश्रुवर्षे=आनन्द आँसुओं की वर्षा से। अभिषिच्य=स्नान करा कर। आश्लिष्य=आलिंगन करके। उपाघ्राय=सूँघ कर, चुम्बन करके। उपाविशताम्=बैठ गये।

भावार्थ—यह सुनकर उसको अपनी माता जानकर मैंने दण्डवत् प्रणाम किया और अपना सारा वृत्तान्त सुनकर धाय के कथन से प्रसन्न मुख, आश्चर्य प्रसन्न मुख पिता को दिखाया। मेरे माता तथा पिता उन दोनों ने परस्पर एक दूसरे के चिन्हों को पहिचान कर प्रसन्न हृदय होकर नम्र हुए मुझको आनन्द के आँसुओं की वर्षा से स्नान कराया और जोर से आलिङ्गन करके तथा मेरे मस्तक का चुम्बन करके वे किसी वृक्ष की छाया में बैठ गये।

समास—धात्र्याः भाषणमितिधात्रीभाषणम् (तृतीया तत्पुरुष) तेन फुल्लं वदनं यस्यासौ इति धत्री भाषण फुल्ल वदनस्तम (बहुव्रीहि)। विस्मयेन विकसिते अक्षिणी यस्यासौ विस्मयविकसिताक्षस्तम् (बहुव्रीहि)

पृष्ठ २८—कथं निवसति..................आनयम्।

शब्दार्थ—महीवल्लभः=राजा। पृष्टः=पूछा गया। राज्यच्युतिम्=

राज्य से च्युत होना। त्वदीयजननम्=तेरा जन्म। सकलकुमारावाप्तिम्=सब कुमारों की प्राप्ति। मातांगानुयानम्=मातंग पर चढ़ाई करना। अभ्यधाम्=कह दिया। अस्थापितम्=रख दिया। अन्वेषणपरायणः=अन्वेषण में लगा हुआ। वित्तम्=धन को। निधिसूचकानाम्=अनेक खजानों को सूचित करने वाले। अधोनिक्षिप्तान्=नीचे गड़े हुए। वसुपूर्णान्=धन से भरे हुए। कलशान्=घड़ों को। खनन साधनैः=खोदने के साधनों से। उत्पाद्य=निकाल कर। दीनारान्=हीरों को। राशीकृत्य=इकट्ठा करके। निवेशितम्=ठहरे हुए। कटकम्=सेना को। वलीवर्दान्=बैलों को। गोणीश्च=और बोरियों को। कृत्वा=खरीद कर। अन्यद्रव्यमिषेण=दूसरे माल के बहाने से। तद्गोणीसञ्चितम्=उन बोरियों में इकट्ठा किये हुए। उह्यमानम्=खींचते हुए। अनयम्=ले आया।

भावार्थ—'राजा राजहंस कैसे हैं' पिता जी के द्वारा ऐसा पूछे गये मैंने उसका राज्य से च्युत होना, तेरा जन्म, सब कुमारों की प्राप्ति, मेरा दिग्विजय का आरम्भ, आपका मातङ्ग पर आक्रमण करना तथा अपना आपको अन्वेषण करना सब कुछ कह सुनाया। तब उन्हें [माता पिता को] किसी मुनि के आश्रम पर ठहराया। इसके पश्चात् आपके अन्वेषण में लगे हुए मैंने 'सब कार्यों का निमित्त धन है' ऐसा निश्चय करके विन्ध्याचल के जंगल में प्राचीन नगरों के स्थानों के पास जाकर अनेक खजानों को सूचित करने वाले वृक्षों के नीचे गड़े हुए घड़ों को सिद्ध के अँजन को आँख में लगा कर उससे देखे और खोदने के औजारों से उन्हें निकाल कर असंख्य हीरे पन्ने इकट्ठे करके उसी स्थान पर आई हुई तथा थोड़ी दूर पर ठहरी हुई किसी वणिकों की सेना में जाकर वहाँ बलवान बैल तथा बोरियाँ खरीद कर दूसरे माल के बहाने बोरियों में भरे हुए धन को उन बैलों के द्वारा खींचते हुए धीरे से [illegible] में ले आया।

समास—अखिलानि च यानि कार्याणि इति अखिलकार्याणि (कर्मधारय) तेषां निमित्तम् इति अखिलकार्यनिमित्तम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ २६—तदधिकारिण..................कथयिष्यामि' इति ।

शब्दार्थ—तदधिकारिण—उसके अधिकारी । विरचित सौहृदः= मित्रता किया हुआ । अमुना=इसके । साकम्=साथ । पुरीम्=नगरी को । अभिगमय्य=लेजा कर । सकलगुणनिलयेन—सर्वगुण सम्पन्न । नीयमानः=लेजाया गया । विधाय=करके । गूढवसतिम्=गुप्त घर । कानन भूमिषु=जङ्गलों में । अवदत=कहा । मनोग्लानिम्=मानसिक खेद को । विहाय=छोड़ कर । तूष्णीम्=चुपचाप । भवन्नायकालोकन-कारणम=आपके स्वामी के दर्शन का कारणीभूत । निरीक्ष्य=देख कर । कथयिष्यामि=कहूँगा, बताऊँगा ।

भावार्थ—उस कटक के अधिकारी चन्द्रपाल नाम के किसी अधिकारी के साथ मित्रता किया हुआ मैं इसके साथ ही उज्जयिनी में ठहरा। अपने माता पिता को भी उसी नगरी में लेजा कर सर्वगुणसम्पन्न बन्धु पाल नाम के चन्द्रपाल के पिता द्वारा ले जाये गये मैंने मालवनाथ के दर्शन करके उनकी आज्ञा से अपना गुप्त घर बना लिया। इसके पश्चात् जङ्गलों में आपको ढूँढ़ने के लिये उद्यत हुए मुझको सुनकर मेरे परममित्र बन्धुपाल ने कहा कि अपार इस सम्पूर्ण भूमण्डल को अन्वेषण करने में असमर्थ आप चुपचाप बैठ जाय। आपके स्वामी के दर्शनों के कारणभूत शुभ शकुन को देखकर मैं आपको बताऊँगा।

पृष्ठ २६—तज्ज्ञापिता..............................अभाषितम् ।

शब्दार्थ—तज्ज्ञापितामृताश्वासितहृदयः=उसके कथनरूपी अमृत से आश्वासित हृदय वाला । तदुपकण्ठवर्ती=उसके पास में रहने वाली । मूर्तीम=साकार, शरीर धारण की हुई । लतान्तवाणवाणलक्ष्यताम= कामदेव के बाण की लक्ष्यता को । अयासितम्=प्राप्त हो गया ।

भावार्थ—उसके कथन के अमृत से आश्वासित हृदय वाला मैं उसके पास में ही रहने वाली चन्द्रमा के समान मुख वाली आँखों की चाँदनी वाले चन्द्रिका नाम की श्रेष्ठ युवति को कभी साकार वणिक के मन्दिर की लक्ष्मी के समान देखकर कामदेव के बाणों का निशान हो गया।

समास—तस्यलपितमिति तल्लपितम् (षष्ठी तत्पुरुष) तदेवामृतमिति तल्लपितामृतम (कर्मधारय) तेन आश्वासितं हृदय यस्यासौ तल्लपिताश्वासितहृदयः (बहुव्रीहि) लतया अन्तम् इति लतान्तम पुष्यम् (षष्ठी पुरुष) तदेव वाणो यस्य स लतान्तवाणः (बहुव्रीहि) तस्य वाण (षष्ठी तत्पुरुष) तस्य लक्ष्यताम इति लतावन्तवाण लक्ष्यताम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ३०—चतुर गूढ़चेष्टामि..............................अतिष्ठत् ।

शब्दार्थ—चतुरगूढचेष्टाभिः—चतुरता से छिपाई हुई चेष्टाओं से। मनोऽनुरागम्=मानसिक प्रेम को। सम्यक्=अच्छी तरह। सुख सङ्गमोपायम्=सुखद मिलन का उपाय। अचिन्तयम्=सोचा। अन्यदा=दूसरे दिन। शकुनैः=शकुनों से, लक्षणों से। भवगतिम्=आपकी स्थिति को। प्रेक्षिष्यमाणः=देखने की इच्छा करता हुआ। पुरोपान्तविहारवनम्=नगर के समीप के घूमने के उपवन को। उपेत्य=जाकर। शकुन्त वचनानि=पक्षियों की आवाज। शृएवन्=सुनता हुआ। अतिष्ठत्=बैठ गया।

भावार्थ—चातुर्य्यपूर्ण गूढ़चेष्टाओं से इसके मानसिक प्रेम को भलीभाँति जानकर मैं सुखद सङ्गम का उपाय सोचने लगा। दूसरे दिन शकुनों से आपकी स्थिति को देखने का इच्छुक वन्धुपाल मेरे साथ नगर के निकट के घूमने के बगीचे में जाकर पक्षियों के वचन सुना हुआ किसी पेड़ के नीचे बैठ गया।

पृष्ठ ३०—अहम्..............................व्यलोकयम्।

शब्दार्थ—उत्कलिका विनोदपरायणः=क्रीड़ा तथा मनोरंजन में लगा हुआ। परिभ्रमन्=घूमते हुए। सरोवरतीरे=तालाब के किनारे। चिन्ताक्रान्तचित्ताम्=चिन्ता से युक्त चित्त वाली। दीनवादनाम्=मलिन मुख वाली। मनोरथैकभूमिम=अपने मनोरथ को एक मात्र आधार। व्यलोकयम्=देखा।

भावार्थ—क्रीड़ा तथा विनोद में संलग्न बगीचे में घूमते हुए मैंने तालाब के किनारे पर चिन्ता से युक्त चित्त वाली मलीन मुख वाली अपने मनोरथ की एकमात्र आधार बालचन्द्रिका को देखा।

पृष्ठ ३०—तदुपकण्ठम्.............................'कथय' इति।

शब्दार्थ—तदुपकण्ठम्=उसके पास। उपेत्य=जाकर। मुखारविन्दस्य=कमल जैसे मुख की।

भावार्थ—उसके पास जाकर मैंने कहा कि सुमुखी! अपने कमल जैसे मुख की दीनता का कारण कहो।

पृष्ठ ३०—सा शनैः.............................अभ्यगात्।

शब्दार्थ—मानसारः=मानी। वार्धकस्य=बुढ़ापे की। प्रवलतया=प्रवलता से। निजनन्दनम्=अपने पुत्र। अभ्यषिंचत्=अभिषेक कर दिया। पालयिष्यन्=पालन करता हुआ। निजपैतृष्वस्रेयौ=अपनी बुआ के लड़कों को। उदण्ड कर्माणौ=उदण्डता के काम करने वाले, धूर्त। धरणीभरणे=पृथ्वी का पालन करने में, राज्य करने में। नियुज्य=नियुक्त करके। अभ्यगात्=चला गया।

भावार्थ—उसने धीरे से कहा—"सौम्य! मानसार संसार नामक मालव देश के राजा ने बुढ़ापे की प्रवलता के कारण अपने पुत्र दर्पसार का उज्जयिनी में अभिषेक कर दिया। वह कुमार सातों समुद्रपर्यन्त भूमण्डल का पालन करता हुआ चण्डवर्मा तथा दारुवर्मा नाम के अति दण्ड कार्य करने वाले अपनी बुआ के लड़के को राज्य प्रवन्ध के लिए नियुक्त करके स्वयं तपस्या करने के लिये राजाराज पर्वत पर चला गया।

पृष्ठ ३०—राज्य सर्वम्.............................अगच्छम्' इति।

शब्दार्थ—असपत्नम्=शत्रु रहित। शसति=शासन करते हुए। मातुलाग्रजन्मनः=अपने अग्रजन्मा, मामा की। शासनम्=आज्ञा को। अतिक्रम्य=उल्लघंन करके, न मान कर। परदारपरद्रव्यापहाणादि=परस्त्रीगमन तथा दूसरों के धन का अपहरण आदि। दुष्कर्म=बुरे काम। कुर्वाणः=करता हुआ। बलात्कारेण=जबरदस्ती। रन्तुम्=सम्भोग करने के लिए। उद्युङ्क्ते=उद्योग करता है। तच्चिन्तया=उसीकी चिन्ता से। दैन्यमगच्छम्=दीनता को प्राप्त हो गई हूँ।

भावार्थ—चण्डवर्मा के शत्रुओं से हीन सम्पूर्ण राज्य पर शासन करते हुए दारुवर्मा अपने अग्रजन्मा मामा की आज्ञा का उल्लङ्घन करके

परस्त्रीगमन तथा परधन का अपहरण आदि बुरे काम करता हुआ एक दिन मुझे देखकर जबरदस्ती मुझसे सम्भोग करने का प्रयत्न कर रहा है। उसी की चिन्ता से मैं दीन हो गई हूँ।

पृष्ठ ३१—इतितया..........................'चिन्त्यते' इति।

शब्दार्थ—मनोगतम्=मन में हुए। रागोद्रेकम्=स्नेह का आधिक्य। वल्लभाम्=प्रिया को। भवदभिलाषितम्=तुम्हारी अभिलाषा करने वाले को। मृदुः=सरल। चिन्त्यते=सोचा जा रहा है।

भावार्थ—इस प्रकार उसको मन में हुए प्रेम के उद्रेक को सुन कर आँसुओं से युक्त आँखों वाली उसको आश्वासन देकर तथा दारुवर्मा के मारने का उपाय सोचकर मैंने प्रिया से कहा—"तरुणी! तुम्हारी अभिलाषा करने वाले दुष्ट हृदय इसको मारने का कोई सरल उपाय मैं सोच रहा हूँ।

समास—वाष्पैः पूर्णमिति वाष्पपूर्णम् (तृतीया तत्पुरुष) वाष्पैपूर्णे लोचने यस्याः सा वाष्पपूर्णलोचना ताम् (बहुव्रीहि)। दुष्टं हृदयं यस्य तम् दुष्टहृदयम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३१—सापि..........................विससर्ज।

शब्दार्थ—किंचिदुत्फुल्ल सरसिजानना=कुछ प्रसन्न कमल मुख वाली। हन्तुमर्हति=मार सकते हो। तस्मिन्हते=उसके मर जाने पर। फलिष्यति=फलित होगा, पूर्ण होगा। क्रियताम्=करो। भवदुक्तम्=आपका कहा हुआ। तथा=जैसा कहोगे वैसा ही। अगारम्=घर को। अगात्=चली गई। अशृणवम्=सुना। निलयाय=घर को। विससर्ज =विदा कर दिया।

भावार्थ—कुछ प्रसन्न हुए कमल मुख वाली उसने भी मुझसे कहा —"महाभाग! क्रूरकर्म दारुवर्मा को आप ही मार सकते हैं। उसके मर जाने पर सब प्रकार से आपका मनोरथ सफल होगा। आप यह कर दें फिर आपका कहा हुआ मैं भी जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूँगी।" ऐसा कह कर मुँह खोले हुए अनेक बार मुँह को देखती हुई धीरे २ अपने घर चली गई। मैं भी तब बन्धुपाल के पास जाकर

शकुन को समझने वाले उससे 'केवल तीस दिन के बाद ही तुम्हारा सङ्गम होगा' ऐसा सुना। इसके बाद मेरे पीछे आते हुए वन्धुपाल ने अपने घर में प्रवेश करके मुझे भी कार के लिए विदा कर दिया।

समास—सरसिजमिव आननमिति सरसिजाननम् (कर्मधारय)। किञ्चिदुत्फुल्लं सरसिजा नूनं यस्याः सा किञ्चिदुत्फुल्लसरसिजानना (बहुव्रीहि)। विवृत्तं वदनं यस्याः सा विवृत्तवदना (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३१—मन्मायोपाय..............................अगच्छम्।

शब्दार्थ—मन्मायोपाय वागुराशलग्नेन=मेरे द्वारा फैलाई हुई माया के जाल में फँसे हुए, चक्कर में दिए हुए। रतिमन्दिरे=विलासगृह में। समाहूता=बुलाई हुई। अभिप्रेषितवती=भेज दी। वनितायोग्यम्=स्त्रियों के समान। मण्डन जातम्=आभूषण, गहने। निपुणतया=चतुरता से। तत्तत्स्थानेषु=जिन-जिन स्थानों में पहनने चाहिए उन ही स्थानों में। निक्षिप्य=डाल कर, पहन कर। सम्यगङ्गीकृत मनोज्ञवेषे=भलीभाँति से सुन्दर वेष बनाकर। तदागारद्वारोपान्तम्=उसके महल के दरवार के पास।

भावार्थ—मेरे द्वारा फैलाई हुई माया के जाल में फँसे हुए दारुवर्मा के गार विलासगृह में सम्भोग करने के लिए बुलाई गई बालचन्द्रिका ने उसके पास जाते हुए दूती को मेरे पास भेजा। मैं भी स्त्रियों के अनुरूप ही आभूषणों को चतुरता से उचित स्थानों में पहन कर भलिभाँति सुन्दर वेष बना कर अपनी प्रिया के साथ उसके महल के दरवाजे के पास गया।

पृष्ठ ३२—द्वाःस्थ..............................अनीयत।

शब्दार्थ—द्वाःस्थकथितास्मदागमनेन=द्वारपाल के द्वारा हमारे आने की सूचना दिया हुआ। द्वारोपान्तनिवारिताशेषप रवारेण=दरवाजे के आसपास से सब परिजनों को हटा देने वाला। मदान्यता=मुझ सहित। संकेतागारम्=संकेतगृह, प्रेमियों के मिलने का स्थान। अनीयत=ले गया।

भावार्थ—द्वारपाल के द्वारा हमारे आने का समाचार पाया हुआ

दरवाजे के आसपास से सब ही परिजनों को हटा देने वाला वह मुझ सहित बालचन्द्रिका को संकेतागार में ले गया।

समास—आवयोरागमनमिति अस्मदागमनम् (षष्ठी तत्पुरुष) द्वारितिष्ठति इति द्वाःस्थः (उपपद समास तत्पुरुष) द्वाःस्थेन कथितं अस्मदागमनं यस्मै तेन द्वाःस्थकथितास्मदागमनेन (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३२—विवेकशून्यमतिः=विचार रहित बुद्धि वाला, मूर्ख। असौ=यह। मह्यम्=मुझको। तमिस्रासम्यगनवलोकितं पुंभावाय=रात में अच्छी तरह से जिसके पुरुषत्व को नहीं देखा गया। मनोरमस्त्री-वेषाय=सुन्दर स्त्री का वेष बनाये हुए। चामीकर मणिमयमण्डनानि=मोतियों से युक्त आभूषण। सूक्ष्माणि=बहुत बारीक। चित्रवस्त्राणि=रङ्ग बिरंगे सुन्दर वस्त्र। ताम्बूलम्=पान। सुरभीणि=सुगन्धित। कुसुमानि=फूल। समर्प्य=देकर। मुहूर्तद्वयमात्रम्=केवल दो घड़ी।

भावार्थ—विवेक हीन बुद्धि वाले उसने रात में मेरे पुरुषत्व को न पहचान कर सुन्दर स्त्री का वेष बनाये हुए मुझको हीरों मोतियों तथा मणियों युक्त आभूषण, अति बारीक रङ्ग बिरंगे वस्त्र कस्तूरी से मिला हुआ चन्दन, कपूर से युक्त पान तथा सुगन्धित फूल इत्यादि अनेक वस्तु दी और केवल दो घड़ी समय तक हास्यपूर्ण बातें करता हुआ वह बैठा रहा।

समास—विवेक शून्येति विवेकशून्या (तृतीया तत्पुरुष) विवेक-शून्या मतिर्यस्य स विवेकशून्यमतिः (बहुव्रीहि)। न अवलोकितमिति अनवलोकितम् (नञ् तत्पुरुष) सम्यग् यथा स्यात् तथा अवलोकितम् इति सम्यगनवलोकितम् तमिस्रया सम्यगनवलोकितं पुंभावो यस्य तस्मै इति तमिस्रासम्यगनलोकित पुंभावाय (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३२—रोषारुणितः..पश्यतेमम्' इति।

शब्दार्थ—रोषारुणितः=क्रोध से लाल हुआ। पर्यङ्कतलात्=पलंग से। निशङ्कः=निर्भय होकर। निपात्य=गिरा कर। मुष्टिजानुघापाद-घातैः=मुक्कों गोड़ों तथा लातों से। प्राहरम्=मारा। नियुद्धरभस विकाल=युद्ध में वेग के कारण इधर-उधर हुए। पूर्ववत=पहले की तरह

मेलयित्वा = पहन कर। नतांगी = झुके हुए शरीर वाली। उपलालयन् = प्रेमपूर्वक हिम्मत बँधाता हुआ। मन्दिरांगणमुपेत: = मन्दिर के आंगन में आया हुआ। साध्वसकम्पित इव = भय से काँपते हुए की तरह। उच्चै: कूजम् = जोर की चिल्लाहट की। बालचन्द्रिकाधिष्ठितेन = बालचन्द्रिका में रहने वाले। निहन्यते = मारा जा रहा है। सहसा = एकदम।

भावार्थ—क्रोध के कारण लाल हुए मैंने निर्भय होकर इस (दारुवर्मा) को पलंग से नीचे गिरा कर मुक्कों गोड़ों तथा लातों से मार दिया। युद्ध में वेग के कारण व्यस्त हुए अलङ्कारों को फिर पहले की तरह ठीक पहन कर भय से काँपती हुई झुके हुए शरीर वाली बालचन्द्रिका को प्रेमपूर्वक ढाँढस बँधाते हुए महल के प्रांगण में आया और भय से काँपते हुए की तरह मैं जोर से चिल्लाया—'ओह ! बालचन्द्रिका में रहने वाला यक्ष दारुवर्मा को मार रहा है। एकदम आओ और इसे देखो'।

पृष्ठ ३२—तदाकर्ण्य..निजावासमगाम्।

शब्दार्थ—मिलिता: = इकट्ठे हुए। समुद्यतवाष्पा: = आँसुओं से युक्त। हाहानिनादेन = हाहा के शब्द से। वधिरयन्त: = बहिरा करते हुए। मदान्ध: = घमण्ड से अन्धा। निहत: = मारा गया। विलापेन = रोने से। मिथ: = आपस में। लपन्त: = कहते हुए। प्राविशन् = घुसे। कोलाहले = शोर में। चटुललोचनया = चञ्चल नेत्रों वाली। अगाम = चला गया।

भावार्थ—यह सुनकर इकट्ठे हुए लोग आँसू बहाते हुए तथा हाहा के से दिशाओं को बहिरा बनाते हुए 'बालचन्द्रिका में रहने वाले यक्ष को बलवान् सुनते हुए भी मदान्ध दारुवर्मा ने उसी [बालचन्द्रिका] के लिए ही याचना की। इसी लिये यह अपने कुकर्म से मारा गया। उसके लिये क्या रोना' इस प्रकार आपस में कहते हुए प्रविष्ट हुए। उस शोर में चञ्चल नेत्रों वाली बालचन्द्रिका के साथ चतुरता से निकाला हुआ मैं अपने निवास स्थान पर पहुँच गया।

समास—चटुललोचने यस्या: तया चटुललोचनया (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३३—ततो गतेषु.................अनुभवामि' इति।

शब्दार्थ—गतेषु=बीत जाने पर। कतिपयदिनेषु=कुछ दिन। पौरजनसमक्षम्=नगर के लोगों के सामने। सिद्धादेश प्रकारेण=सिद्ध की बताई हुई रीति से। विवाह्य=विवाह करके। इन्दुमुखीम=चन्द्रमा के समान मुख वाली। वन्धुपाल शकुननिर्दिष्टे—वन्धुपाल के द्वारा शकुन में निर्देश किए। पुरात्=नगर से। अनुभवामि=अनुभव कर रहा हूँ।

भावार्थ—इसके पश्चात् कुछ दिन बीत जाने पर नगर के लोगों के सामने सिद्ध की आज्ञा के अनुसार चन्द्रमा के समान मुख वाली उसको विवाह करके वन्धुपाल के शकुन में निर्देश किये हुये आज के दिन नगर से बाहर निकल कर आया हुआ मैं नेत्रों को आनन्द देने वाले आपके दर्शन के सुख का भी अनुभव कर रहा हूँ।

राजवाहन का अवन्तिकापुरी में जाना

पृष्ठ ३३—एवमित्र वृत्तान्तम्.................कारयामास।

शब्दार्थ—अम्लानमानसः=प्रसन्न मन वाला। स्वस्य=अपने। अस्मै=इसको। निवेद्य=बता कर। महाकालेश्वराधनानन्तरम्=महाकालेश्वर शङ्कर भगवान की पूजा करके। भवद्वल्लभाम्=अपनी प्रिया। प्रापय्य=प्राप्त कराकर। आगच्छ=आओ। नियुज्य=नियुक्त करके। भूस्वर्गायमानसम्=पृथ्वी पर ही स्वर्ग के समान। कथयित्वा=कहकर। बहुविधाम्=अनेक प्रकार की। तत्र=वहाँ। सपर्य्याम्=सेवा। कारयन्=कराते हुए। सकलकलाकुशलः=सम्पूर्ण कलाओं में कुशल। महीसुरवरः=श्रेष्ठ ब्राह्मण। अमुष्य=इस। राज्ञः=राजा का। मज्जनभोजनादिकम्=स्नान भोजन आदि। अनुदिनम्=प्रतिदिन। कारयामास=कराया।

भावार्थ—इस प्रकार मित्र का वृत्तान्त सुनकर प्रसन्न हृदय वाले राजवाहन ने अपने तथा सोमदत्त के समाचार को इन्हें निवेदन करके "महाकालेश्वर भगवान शङ्कर की आराधना के पश्चात् अपनी प्रिया को परिवार सहित अपनी सेना में पहुँचा कर आजाओ" इस प्रकार

सोमदत्त को नियुक्त करके पुष्पोद्भव के द्वारा सेवा किया जाता हुआ पृथ्वी पर ही स्वर्ग के समान अवन्तिकापुरी में प्रविष्ट हुआ। वहाँ 'यह मेरे स्वामी का कुमार है' ऐसा बन्धुपाल आदि बन्धुओं को बताकर उससे राजवाहन की अनेक प्रकार की सेवा कराते हुए 'सम्पूर्ण कलाओं में कुशल ब्राह्मण है' ऐसा नगर में प्रकट करते हुए पुष्पोद्भव ने राजा को प्रतिदिन अपने महल में स्नान तथा भोजन आदि कराया।

पृष्ठ ३३—अथ.............................समाजगाम।

शब्दार्थ—सहकारकिसलयमकरन्दास्वादनरक्त कण्ठानाम्=आम के कोमल नवीन पत्तों पर आये हुए पराग के आस्वादन [खाने] से लाल गले वाले। मधुकरकल कण्ठानाम्=सुन्दर कण्ठ स्वर वाले। काकली-कलकलेन=मधुर गुंजार से। वाचालयन्=शब्दायमान कराते हुए। कलिकाम्=कलियाँ। उपापादयन्=उत्पन्न करते हुए। रसिकमनांसि=रसिकों के मनों को। संसुल्लासवन्=उत्कण्ठित करते हुए।

भावार्थ—इसके बाद आम के कोमल नये पत्तों पर आये हुए पराग के खाने से लाल कण्ठ वाले, सुन्दर कण्ठ स्वर वाले भौंरों की मधुर गुंजार से दिशा चक्र को गुंजाते हुए माकन्द, सिन्दुवार, लाल अशोक, ढाक तथा तिलक के वृक्षों पर कलियाँ उत्पन्न करते हुए बसन्तोत्सव के लिये रसिकों के लिए रसिकों के मनों को उत्कण्ठित करते हुए बसन्त ऋतु आ गया।

पृष्ठ ३४—तस्मिन्नतिरमणीये.............................रेमे।

शब्दार्थ—अतिरमणीये=अति सुन्दर। मानसारनन्दिनी=मानसार की पुत्री। प्रियवयस्यया=प्यारी सखी। विहारोत्कण्ठया=विहार की इच्छा से। पौरसुन्दरी समवाय समन्वित=नगर की युवतियां के समुदाय के सहित। चूतपोतकस्य=आम के पेड़ की। सैकततेल=रेतीले धरातल पर। परिमलद्रव्यपिकरेण=सुगन्धित द्रव्य के समूह से। मनोभवम्=कामदेव की। अर्चयन्ती=पूजा करती हुई। रेमे=रमण करने लगी।

भावार्थ—उस अतिरमणीय समय में अवन्ति सुन्दरी नाम की

मानसार की पुत्री अपनी सखि बालचन्द्रिका के साथ नगर के समीप के सुन्दर बाग में घूमने की इच्छा से नगर की सुन्दरियों के समूह के सहित किसी आम के पेड़ के नीचे सघन छाया वाले रेतीले धरातल पर सुगन्धित द्रव्य से कामदेव की पूजा करती हुई खेलने लगी।

समास—पौराश्रयाः सुन्दर्य्य इति पौरसुन्दर्य्यः तासां समवाय इति पौरसुन्दरी समवायः (षष्ठी तत्पुरुष) तेन समन्विता इति पौरसुन्दरी समवायसमन्विता (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ३४—तत्र..समीपमवाप।

शब्दार्थ—रतिप्रतिकृतिमवन्ति सुन्दरीम्=रति मूर्ति के समान अवन्ति सुन्दरी को। द्रष्टुकामः=देखने का इच्छुक। तदुपवनम्=उस बगीचे में। प्रविश्य=घुस कर। रसाल तरुरु=आम के पेड़ों पर। कोकिलकीरालिकुल ·धुकराणाम्=सुन सुनकर। अमन्दलीलया= अत्यन्त क्रीडा से। ललनासमीपम्=स्त्री के पास। अवाप=पहुँचा।

भावार्थ—वहाँ काम की पत्नी-पति की प्रकृति के समान अवन्ति सुन्दरी को देखने का इच्छुक वसन्त से सहायता प्राप्त किया हुआ पुष्पोद्भव सहित सौन्दर्य में कामदेव के समान राजवाहन उस बगीचे में प्रवेश करके जहाँ तहाँ आम के पेड़ों पर कोयल तोतों तथा भौंरों के शब्दों को सुन सुनकर अत्यन्त क्रीड़ा के साथ उस रमणी के पास पहुँचा।

समास—कोकिलाश्च कीराश्च अलिकुलञ्च मधुकराश्चेति कोकिल-कीरालिकुलमधुकराः तेषाम् (द्वन्द)।

पृष्ठ ३४—बालचन्द्रिकया..........................समाजगाम।

शब्दार्थ—आगम्यताम्=आओ। हस्तसंज्ञया=हाथ के इशारे से। समाहूतः=बुलाया हुआ। निजतेजोनिर्जितपुरुहूतः=अपने तेज से इन्द्र को जीत लेने वाला। कृशोदर्याः=पतले पेट वाली। अन्तिकम् =पास में।

भावार्थ—बालचन्द्रिका के द्वारा 'निःशङ्क होकर इधर आइये' ऐसा कहकर हाथ के इशारे से बुलाया हुआ अपने तेज से इन्द्र को पराजित कर देने वाला राजवाहन कृशोदरी अवन्ति सुन्दरी के पास आया।

समास—निजं चयम् तेजः इति निजतेजः (कर्मधारय) तेन निर्जितः पुरुहूतः येन स निजतेजोनिर्जितपुरुहूतः (बहुव्रीहि)। कृशं उदरं यस्याः तस्याः कृशोदर्या (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३४—सामूर्तिमतीव..............................चकम्पे।

शब्दार्थ—मालवेशकन्यका=मालव देश के राजा की कन्या। मन्मथमिव=कामदेव के समान। मन्दमारुतान्दोलिता=मन्द मन्द हवा से हिलाई हुई। लतेव=बेल की तरह। मदनावेशवती=काम के आवेश से नियुक्त, काम पीडित। चकम्पे=काँपने लगी।

भावार्थ—मूर्तिमती लक्ष्मी के समान वह मालवेश्वर की कन्या मूर्तिमान् कामदेव के समान उस राजवाहन को मन्दमन्द वायु से हिलाई हुई बेल की तरह कामवासना से देखकर प्रेरित होकर काँपने लगी।

समास—मन्दश्चासौमारुत इति मन्दमारुतः (कर्मधारय) तेनान्दोलितेति मन्दमारुतान्दोलिता (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ३४—सा मनसीत्थम्..............................ज्ञातव्य इति।

शब्दार्थ—मनसि=मन में। इत्थम=इस प्रकार। अचिन्तयत=सोचा। अनन्यसाधारण सौन्दर्येण=अनुपम सौन्दर्य वाले। अनेन=इसने। कस्याम्=किस। पुरि=नगरी में। लोचनोत्सवः=नेत्रों का आनन्द। क्रियते=करता है। कथम्=कैसे, किस प्रकार। अयम्=यह। ज्ञातव्यः=जानना चाहिए, जाना जाय।

भावार्थ—वह अपने मन में इस प्रकार सोचने लगी—'अनुपम सौन्दर्य वाले इसके द्वारा किस नगरी में भाग्यवती रमणियों के नेत्रों का उत्सव किया जाता है क्या करूँ। इसको कैसे जाना जाय'।

पृष्ठ ३५—ततोबालचन्द्रिका..............................पूज्यताम्' इति।

शब्दार्थ—तयोः=उन दोनों की। अन्तरङ्गवृत्तम्=आन्तरिक भाव को। ज्ञात्वा=जानकर। लोकसाधारणैः=साधारण लोगों जैसे। सकलकला प्रवीणः=सम्पूर्ण कलाओं में चतुर। देवता सान्निध्यकरण=देवताओं की उपासना करने वाला। आह्वनिपुणः=युद्ध विद्या में चतुर। भूसुरकुमारः=ब्राह्मण कुमार। मणिमन्त्रौषधिज्ञः=मणियों मन्त्रों

तथा औषधियों का विशेषज्ञ। परिचर्यार्हः=पूजा करने योग्य। भवत्या =आप। पूज्यताम्=पूजा करो।

भावार्थ—तब बालचन्द्रिका ने उन दोनों के आन्तरिक भाव को विचार पूर्वक समझ कर साधारण लोगों जैसे वाक्यों से कहा— 'राजकुमारी! यह सम्पूर्ण कलाओं में चतुर, देवताओं की उपासना करने वाला, युद्ध विद्या में निपुण मणियों मन्त्रों तथा औषधियों का विशेषज्ञ ब्राह्मण कुमार है अतः पूजनीय है। आप इसकी पूजा करें।

पृष्ठ ३५ तदाकर्ण्य..............................समानमेव।

शब्दार्थ—अनुवदन्त्या=कहने वाली। सन्तुष्टान्तरङ्ग=सन्तुष्ट हृदय वाली। मन्दानिलेन=मन्द वायु से। सङ्कल्पते।=कामदेव से। आकुलीकृता=व्याकुल की हुई। जितमारम्=कामदेव के जीत लेने वाले। समुचितसनासीनम्=उचित आसन पर बैठा। विधाय=करके। नूनम्=निश्चित ही। मे=मेरी। जाया=पत्नी। नोचेत=अन्यथा। न जायेत=न होता। शापावसानसमये=शाप के अन्त होने के समय में। तपोनिधि दत्तम्=तपस्वी का दिया हुआ। जातिस्मरत्वम्=जाति का स्मरण। आवयोः=हम दोनों का।

भावार्थ—यह सुनकर अपने ही मनोरथ को कहती हुई बालचन्द्रिका से सन्तुष्ट हृदय वाली तथा मन्द वायु से लहरों की तरह कामदेव के द्वारा पीड़ित की हुई उस राज कन्या ने कामदेव को जीत लेने वाले कुमार को समुचित आसन पर बिठा कर उसकी पूजा वाहन ने भी उस प्रकार करवाई। राजवाहन ने भी इस प्रकार सोचा—"निश्चित ही यह पूर्व जन्म में मेरी पत्नी यज्ञवती है। अन्यथा इसमें इस प्रकार का प्रेम मेरे मन में न होता। शाप समाप्ति के समय में तपोधन का दिया हुआ जाति स्मरण हम दोनों में समान ही है।

पृष्ठ ३५—तस्मिन्नेव......................................अगमत्।

शब्दार्थ—मनोरमः=सुन्दर। केलिविधित्सया=क्रीड़ा करने की इच्छा से।

भावार्थ—उसी समय कोई राजहंस क्रीड़ा करने की इच्छा से

उसके पास गया ।

पृष्ठ ३५—तस्मिन्नवसरे..............................जगाम ।

शब्दार्थ—मालवेन्द्रमहीषि = मालव राजा की पटरानी । परिजन-परिवृता = परिजनों से घिरी हुई । दुहितृ केलिविलोकनाय = पुत्री की क्रीड़ा देखने के लिये । विलोकृत = देखकर । रहस्य निर्भेदाभय = भेद खुल जाने के डर से । वृक्षवाटिकान्ततिगात्रम् = वृक्षों की समूह की आड़ में छुपे हुए शरीर वाला । दुहितुः = पुत्री की । बभूव = हुई । विहार-वांछया = विहार की इच्छा से । अकाण्ड एव = बीच में ही । विसृज्य = छोड़कर । समुचितमिति = उचित समझ कर । भवन्मनोरागः = आपके हृदय का प्रेम । मा भूत = न हो । मरालमिव = हंस के बहाने से । समुचितालापकलापम् = उचित बातचात । वदन्ती = कहती हुई । परि-वृत्तदीननयन = दुखी आंखों के पीछे की ओर घुमाने वाली । वदनम् = मुख को । विलोकयन्ती = देखती हुई । अलभत = प्राप्त किया था । विरहविनोदाय = विरह के दुख के कम करने के लिए । जगाम = गया ।

उस समय मालवेश्वर की पटरानी परिजनों के साथ अपनी पुत्री की क्रीड़ा को देखने के लिए उस स्थान पर आई । बालचन्द्रिका ने उसको दूर से देखकर यम के साथ भेद खुल जाने के डर से हाथ के इशारे से पुष्पोद्भव से सेवा किये जाते हुए राजवाहन को वृक्षों के समूह के पीछे छुपा दिया । मानसार की महारानी सखि सहित अपनी पुत्री की अनेक प्रकार की क्रीड़ाओं का अनुभव करती हुई थोड़ी देर बैठ कर पुत्री के सहित अपने महल को चलने के लिए तैयार हो गई । माता के साथ जाती हुई अवन्ति सुन्दरी "हे राजहंसों के कुल में श्रेष्ठ राजहंस ! विहार की इच्छा से केलिवन में मेरे पास हुए आपको बीच में ही छोड़कर मैं उचित समझ कर माता के साथ जा रही हूँ । मेरे इस गमन से आपके हृदय के प्रेम में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए" इस प्रकार हंस के बहाने से कुमार को उद्देश्य करके उचित बातचीत करती हुई बार-बार अपनी आँखों को पीछे घुमा कर उसके मुख को देखती हुई अपने महल को चली गई । राजवाहन भी वहाँ उसने अपनी प्रिया के दर्शन के सुख का

अनुभव किया था; इस बगीचे को विरह दुःख को कम करने के लिए पुष्पोद्भव के साथ गया।

समास—वृक्षाणां वाटिकेति वृक्षवाटिका (षष्ठी तत्पुरुष), तथा अन्तरीतं गात्रं येन तम वृक्षान्तरितगात्रम (बहुव्रीहि)। हृदयस्य वल्लभेति हृदयवल्लभा(षष्ठी तत्पुरुष) तस्याः अवलोकनं इति हृदयवल्लभावलोकनम (षष्ठी तत्पु०) तेन सुखमिति हृदयवल्लभावलोकनसुखम (तृतीया तत्पु०)

राजवाहन का विद्येश्वर ऐन्द्रजालिक से मिलन

पृष्ठ ३६—तस्मिन्नवसरे.................... विससर्ज।

शब्दार्थ—धरणीसुरः=ब्राह्मण की। सूक्ष्मचित्रनिवसनः=बारीक तथा रङ्गीन वस्त्रों वाला। स्फुरन्मणिकुण्डलमण्डितः=चमकदार मणियों के कुण्डलों से सुसज्जित। मण्डित मस्तक मानव समेतः=सिर मुण्डे हुए मनुष्य के सहित। चतुरवेषमनोरमः=सुन्दर वेष युक्त। यदृच्छया =स्वेच्छा से, आपसे आप। समन्ततः=सब ओर। अभ्युल्लसत्तेजो-मण्डलं=तेज के मण्डल से शोभित। ददर्श=देखा। पप्रच्छ=पूछा। ऐन्द्रजालिक विद्याकोविद=इन्द्रजाल (जादू-टोने) की विद्या में पंडित। भ्रमन्=घूमता हुआ। शशास=कहा। निजकार्य करणम्=अपने कार्य साधन। तर्कयन्=समझता हुआ। एनम=इसको। बभाषे=कहा। सताम्=सज्जनों का। सख्यस्य=मित्रता का। आभाणपूर्वतया=बात-चीत ही पूर्व कारण होने से। चिरम्=बहुत देर तक। प्रियवयस्य= प्रिय मित्र। जातः=हो गये हो। सुहृदाम्=मित्रों को। अकथ्यम्= न कहने योग्य। मालवेन्द्रसुतायाः=मालवेश्वर मानसार की पुत्री का। आकस्मिकदर्शने=अचानक देखने में। अनुरागातिरेकः=प्रेम की अधिकता। समजायत=हो गया है। सततसम्भोग सिद्ध्युपायाभावेन =निरन्तर सम्भोग की सिद्धि के अभाव के कारण। लज्जाभिरामम्= लज्जा के कारण सुन्दर। अभिवीक्ष्य=देखकर। विराचितमन्दहासः= थोड़ा सा मुस्कराया हुआ। व्याजहार=कहा। भवदनुचरे=आपके सेवक। मयि=मेरे। तिष्ठति=रहते हुए। असाध्यम=न होने योग्य। मोहयन्=मोहित करता हुआ, धोखे में डालता हुआ। वत्तनयापरिणयम्

=उसकी पुत्री का विवाह। कारयिष्यामि=करा दूँगा। कथयितव्यः=कह देना चाहिए। सबहुमानम=अत्यन्त सम्मान पूर्वक। विससर्ज=विदा किया।

भावार्थ—उस अवसर पर बारीक विचित्र कपड़े पहने हुए चमकदार मणिमय कुण्डल से शोभायमान मुण्डे हुए सिर वाले एक मनुष्य के सहित चातुर्य्य पूर्ण सुन्दर वेष से सुन्दर प्रतीत होने वाला एक ब्राह्मण दैवयोग से वहाँ आ गया। उसने चारों ओर तेजो मण्डल से शोभित राजवाहन को आशीर्वाद पूर्वक देखा। राजा ने आदर पूर्वक उसको पूछा कि आप कौन हैं और किस विद्या में निपुण हैं। उसने कहा—"मैं विद्येश्वर नाम वाला ऐन्द्रजालिक विद्या का पंडित हूँ और अनेक देशों में राजाओं के मनोरञ्जन के लिए घूमता हुआ आज उज्जयिनी में आया हूँ"। पुष्पोद्भव ने उसको कार्य का साधक समझते हुए आदर पूर्वक—"बातचीत ही सज्जनों की मित्रता का पूर्व कारण होता है अतः बहुत देर तक सुन्दर बातचीत करने वाले आप हमारे मित्र हो गये हैं। मित्रों को न बताने योग्य कौन सी बात है। इस केलिवन में वसन्त महोत्सव के लिए आई हुई मालवेन्द्र मानसार की पुत्री के तथा इस राजकुमार के आपस में अचानक एक दूसरे को देखने पर परस्पर प्रेम होगया है। निरन्तर सम्भोग की सिद्धि के उपाय के न होने से यह ऐसी बुरी अवस्था का अनुभव कर रहा है।" विद्येश्वर ने लज्जा के कारण राजकुमार की मुख की ओर देख कर मन्द मुसकान के साथ कहा—"देव ! आपके इस सेवक के रहते हुए कौन सा काम असाध्य है ? मैं इन्द्रजाल विद्या के द्वारा मालवराज मानसार को मोहित करता हुआ नगर के लोगों के सामने ही उसकी पुत्री का विवाह रचकर कन्यान्तःपुर में प्रवेश करा दूँगा। राजकुमारी की सखि के द्वारा यह समाचार पहले से ही कह देना चाहिए।" प्रसन्न हृदय राजा ने बिना कारण ही मित्र उस विद्येश्वर को अति सम्मान के साथ विदा कर दिया।

राजवाहन तथा अवन्ति सुन्दरी का विवाह

पृष्ठ ३७—अथ राजवाहन .... जनयन्ती मिरचेरुः।

शब्दार्थ—क्रियापाटवेन=कार्य कुशलता से । फलितम्=सफल। मन्यमानः=समझता हुआ। महीसुरक्रियमाणम्=ब्राह्मण के द्वारा किये जाने वाले। सङ्गमोपायम्=मिलने के उपाय को। वेदयित्वा=ज्ञान करा कर। कौतुकाकृष्ट हृदयः=उत्कण्ठित। क्षपाम्=रात को। क्षपयामि=बिताऊँ। रसभावरीतिगतिचतुरः=रसिकता की रीति में चतुर। दौवारिक निवेदित निजवृत्तान्तः=द्वारपाल को अपना वृत्तान्त बता कर। सहसोपगम्य=एकदम पास में जाकर। द्वाःस्थैः=द्वारपालों के द्वारा। विज्ञापितेन=सूचित किये गये। तद्दर्शनकुतूहलाविष्टेन=उसको दर्शनों की उत्कण्ठा से युक्त। समाहूयमान=बुलाया हुआ। कक्षान्तरम्=आङ्गन के अन्दर। परिजनताड्यमानेषु=परिजनों के द्वारा बजाते हुए। वाद्येषु=बाजों के। वदत्सु=बजते हुए। समधिकरागरंजित सामजिकमनोवृत्तिषु=दर्शकों की मनोवृत्ति को और भी अधिक अनुराग करते हुए। भ्रामयन्=घुमाया हुआ। मुकुलितनयनः=विकसित नेत्रों वाला। तदनु=उसके बाद। विषमम्=भयङ्कर। विषम्=जहर को। उल्वणम्=कै। वमन्=कै करता हुआ। फणालङ्करणः=फणों वाले। भोगिना=साँप। निश्चेरुः=घूमते रहो।

भावार्थ—इसके पश्चात् राजवाहन विद्येश्वर की कार्य कुशलता से अपने मनोरथ को सफल समझता हुआ पुष्पोद्भव के साथ अपने महल में और आदर पूर्वक बालचन्द्रिका के द्वारा अपनी प्रिया अवन्ति सुन्दरी को ब्राह्मण के द्वारा किये जाने वाले मिलन के उपाय का ज्ञान करा कर उत्कण्ठित हृदय होकर 'इस रात को कैसे बिताऊँ' यह सोचता हुआ बैठा रहा। दूसरे दिन प्रातःकाल ही रसिकता की रीति में चतुर विद्येश्वर उसी प्रकार के चतुर अपने परिजनों के साथ राजमहल के दरवाजे के पास गया और द्वारपालों को अपना वृत्तान्त सुनाया। अचानक ही प्रणाम पूर्वक "द्वारपालों के द्वारा इस प्रकार की सूचना दिया गया। उस ऐन्द्रजालिक के देखने के लिए उत्कण्ठित तथा उत्सुक परिजनों सहित मनवराज के द्वारा बुलाया हुआ विद्येश्वर आंगन के अन्दर प्रविष्ट हुआ और नम्रता पूर्वक आशीर्वाद दिया। राजा के आज्ञा देने पर

परिजनों के द्वारा बाजे बजाये जाते हुए, दर्शकों की मनोवृत्तियों के और अधिक अनुरक्त कराते हुए पिच्छिका के भ्रमणों में वह ऐन्द्रजालिक परिवार तथा परिजनों को भ्रम में डालता हुआ विकसित नेत्रों से युक्त क्षण भर बैठा रहा। इसके बाद भयङ्कर जहर की वमन कराते हुए फणों वाले साँप भय उत्पन्न करते हुए घूमते रहे।

समास—दौवारिकेभ्यो निवेदित;-निजवृत्तान्त येनासौ दौवारिकनिवेदितनिजवृत्तान्तः (बहुव्रीहि)। समधिकः रागः इति समधिकरागः (कर्मधारय) तेन रंजिताः सामाजिक मनोवृत्तयः येषु तेषु समधिकरागरंजितसामाजिकमनोवृत्तिषु (बहुव्रीहि)। मुकुलितेनयने यस्य स मुकुलितनयन (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ३८—गृध्राश्च ....आवयामास।

शब्दार्थ—गृधाः=गीध । तुण्डैः=चोचो से। अहिपतीन्=साँप को । दिवि=आकाश में । समाचरन्=घूम रहे थे। विदारणम्=फाड़ना। अभिनीय=नाटक करके। भवदात्माकारायाः=आपकी पुत्री की आकार की । निखिल लक्षणोतेतस्य=सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त। सकलमोह जनक मंजानम्=पूर्ण मोह (अज्ञान) उत्पन्न कर देने वाला अंजन । निक्षिप्य=डाल कर । परितः=सब ओर । व्यलोकयत्=देखा । साद्भुतम्=आश्चर्य के साथ । पश्यत्सु=देखते हुए । रागपल्लवितहृदयेन=प्रेमपूर्ण हृदय वाले । पूर्वसंकेतसमागताम्=पहले से निश्चित किये हुए स्थान पर आई हुई । साक्षीकृत्य=गवाह बनाकर । संयोजयमास=कर दिया। क्रियावसाने=क्रिया की समाप्ति पर। सति =होने पर। गच्छन्तु=चले जायें। भवन्तः=आप लोग। द्विजन्मनाः =ब्राह्मण से। उच्यमाने=कहने पर। यथायथम्=यथायोग्य। अन्तर्भावंगताः=अन्तर्धान हो गये। गूढोपाय चातुर्य्येण=गुप्त उपायों की चतुरता से। इन्द्रजालिक पुरुषवत्=जादूगरों की तरह। प्रवेश=प्रविष्ट हुआ, घुसा। वाडवाय=ब्राह्मण को। प्रचुरतम्=बहुत सा। वल्लभोपेता =पति सहित। ययौ=गई। दैवमानुष वलेन=दैविक तथा मानुषीय बल से । उपेतः=प्राप्त हुआ । हरिणलोचनायाः=हिरण जैसी आँखों

वाली। रहः=एकान्त में। विश्रम्भम=शान्ति, विश्वास। उपजनयन्=उत्पन्न करते हुए। संलापे=बातचीत में। तदनुलापपीयूषपानलोल:=उसकी बातचीत रूपी अमृत का पान करने का लोभी। चित्रचित्रम=अति विचित्र। श्रावयामास=सुनाया।

भावार्थ—बहुत से गीध अपनी चोचों से सर्पों को उठाकर आकाश में उड़ने लगे। इसके पश्चात् उस पूर्वज ने नृसिंह भगवान के हिरण्यकशिपु के पेट फाड़ देने का नाटक करके अत्यन्त आश्चर्य से चकित राजा को कहा—"राजन्! नाटक समाप्ति के समय आपको शुभ सूचक दृश्य देखना चाहिए। इस लिये कल्याण परम्परा की प्राप्ति के लिये आपकी पुत्री जैसे आकार वाली युवति का सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त राजकुमार के साथ विवाह करना चाहिए"। उसको देखने की उत्कण्ठा से राजा के आज्ञा देने पर उसने पूर्णरूप अज्ञान उत्पन्न कर देने वाले अंजन को आँखों में डाल कर चारों ओर देखा। सब लोगों के "यह इन्द्रजाल का ही काम है" देखते हुए प्रेम पूरित हृदय वाले राजवाहन के साथ पहले से निश्चित किये हुए स्थान पर आई हुई अवन्ति सुन्दरी को विवाह सम्बन्धि मन्त्रों के चातुर्य्य से अग्नि का साक्षी करके विवाह दिया। विवाह की क्रिया के समाप्त हो जाने पर 'इन्द्रजाल के पुरुषों! आप सब लोग चले जायें' ऐसा उस ब्राह्मण के कहने पर सब मायापुरुष यथायोग्य अन्तर्धान हो गये। राजवाहन भी पहिले से निश्चित किए छिपने के उपाय की चतुरता से इन्द्रजाल के पुरुष के पुरुष की तरह कन्यातःपुर में प्रविष्ट हो गया। मालवराज ने भी उसको अति विचित्र समझते हुए इन ब्राह्मणों को बहुत साधन देकर विद्येश्वर को 'अब अपना साधन करो' कहकर विदा कर दिया और स्वयं भी महल में अन्दर चला गया। तब अवन्ति सुन्दरी अपनी प्यारी सहचरियों के सहित अपने प्रिय के साथ सुन्दर महल में गई। इस प्रकार दैविक तथा मानुषिक बल से अपने मनोरथ की सिद्धि को प्राप्त हुआ राजवाहन धीरे-धीरे सरस तथा मधुर चेष्टाओं हिरण जैसी आँखों वाली अवन्ति सुन्दरी की लज्जा को दूर करता हुआ एकान्त में विश्वास उत्पन्न करता

हुआ बातचीत में उसके वार्तालाप रूपी अमृत का पान करने का लोभी हुआ अति विचित्र मनोमोहक चौदह भवनों का वृत्तान्त सुनाने लगा।

समास—भवत आत्मजेति भवदात्मजा (षष्ठी तत्पु०) तस्याः आकार इव आकारः यस्याः सा भवदात्मजाकारा तस्याः (बहुव्रीहि)। हरिणस्य लोचने इति हरिणलोचने (षष्ठी तत्पुरुष) हरिणलोचने इव लोचने यस्याः तस्याः हरिलोचनायाः (बहुव्रीहि) तदनुलाप एव पीयूषमिति तदनुलापपीयूषम् (कर्मधारय) तस्यपानमिति तदनुलापपीयूषमानम् (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् लोल इति तदनुलापपीयूषमानलोलः (सप्तमी तत्पुरुष)।

अपहारवर्मा के वृत्तान्त का वर्णन

पृष्ठ—ततः प्रवृत्तासु .... अगमम्।

शब्दार्थ—प्रवृत्तासु = आरम्भ होने पर। अनुवर्ण्य = वर्णन करके। सुहृदाम् = मित्रों के। श्रोतुम् = सुनने के लिए। कृतप्रस्तावः = प्रस्ताव किया हुआ। तांश्च = और उनको। तदुक्तौ = वृत्तान्त कहने में। अन्वयुङ्क्तः = नियुक्त किया। प्राहस्म = कहा। त्वयि = आपके। अवतीर्णे = उतर जाने पर। द्विजोपकाराय = ब्राह्मण के उपकार के लिये। असुरविवरम् = राक्षस के बिल में। त्वदन्वेषणप्रसृते = आपके अन्वेषण के लिए इधर-उधर चले जाने पर। महीमटन् = पृथ्वी पर घूमता हुआ। कुतश्चित् = कहीं से। संलपतः = बातचीत करते हुए। उपलस्य = प्राप्त करके। अमुतः = इससे। बुभुत्सुः = जानने का इच्छुक। त्वद्गतिम् = आपकी दशा को। तदुद्देशम् = उस स्थान को।

भावार्थ—इसके पश्चात् प्रेम पूर्ण कथाओं के आरम्भ होने पर प्रिय मित्रों के समूह से अनुयुक्त होकर अपने तथा सोमदत्त और पुष्पोद्भव के चरित्र का वर्णन करके मित्रों के वृत्तान्त को भी सुनने के लिए प्रस्ताव किया गया। उनमें से सबसे अपहार वर्मा ने कहा—"स्वामिन्! ब्राह्मण का उपकार करने के लिये आपके राक्षस के बिल में उतर जाने पर मित्र-मण्डल के आपके खोजने के लिए फैल जाने पर मैं पृथ्वी पर घूमता हुआ अङ्गदेश में चम्पा नगरी के बाहर गङ्गा के किनारे पर मरीचि नाम

के कोई महर्षि हैं ऐसा कहीं पर बातचीत करते हुए जन समाज से सुन कर (मरीचि) से आपकी दशा जानने का इच्छुक उस स्थान पर गया।

समास—सोमदत्तश्च पुष्पोद्भवश्चेति सोमदत्तपुष्पोद्भवौ तयोः सोमदत्तपुष्पोद्भवयोः (द्वन्द)।

पृष्ठ ४०—न्यशामयम्........................इत्यवादिषम्।

शब्दार्थ—न्यशामयम्=देखा। कस्यचित्=किसी। चूतपोतस्य =आम के पेड़। कमपि=किसी। अमुना=इसके द्वारा। अतिथिवत् =अतिथि की तरह। उपचरितः=सम्मान किया गया। विश्रान्तः= विश्राम किया हुआ। क्व=कहाँ। असौ=यह। उपलिप्सुः=जानने का इच्छुक। प्रसङ्गप्रोषितस्य=प्रसङ्गवश विदेश में गये हुए सुहृदः=मित्र का। आश्चर्यज्ञानविभवः=विचित्र ज्ञानरूपी सम्पत्ति वाले। मह्याम्= पृथ्वी पर। विश्रुतः=प्रसिद्धः। अवादिषम=कहा।

भावार्थ—उस आश्रम में मैंने किसी आम के पेड़ की छाया में बैठे हुए किसी भद्र रङ्ग वाले तपस्वी को देखा। इस तपस्वी के द्वारा अतिथि की तरह सत्कार किये हुए मैंने क्षणभर विश्राम किया और फिर यत भगवान मरीचि कहाँ हैं, उनसे मैं प्रसङ्गवश बाहर गये हुए अपने मित्र की दशा जानना चाहता हूँ, विचित्र ज्ञान सम्मति वाले महर्षि संसार में प्रसिद्ध है—मैंने उससे कहा।

समास—आश्चर्यं ज्ञानमेव विभवो यस्य स आश्चर्य ज्ञानविभवः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४०—अथासौ.....................अभ्यन्दिष्ट।

शब्दार्थ—आयतम्=लम्बा। निःश्वस्य=श्वाँस लेकर। अशंसत= कहा। वारयुवतिः=वैश्या। अभ्यन्दिष्ट=वन्दना की, प्रणा किया।

भावार्थ—तब उसने (तापस ने) गर्म तथा लम्बी श्वाँस लेकर कहा —'हाँ इस आश्रम में ऐसे मुनि थे। उन्हें एक दिन काममंजरी नाम की वैश्या ने निर्वेद (ग्लानि) पूर्वक आकर प्रणाम किया।

पृष्ठ ४०—तस्मिन्नेव.........................अभिप्रपन्नः इति।

शब्दार्थ—मातृप्रमुखः=माता की प्रमुखता वाला। आप्तवर्गः

महापुरुषों का समूह । सानुक्रोशम्=रोदनके साथ । अनुप्रधावित:= पीछे दौड़ा । तत्रैव=वहीं । अविच्छिन्नपातम्=निरन्तर पतन, बिना किसी रोकथाम के एकदम गिरना । आर्द्रया=दयापूर्ण । गिरा=वाणी से । आश्वास्य=आश्वासन देकर । आर्तिकारणम्=दुःख का कारण । गणिकाम्=वेश्या को । अपृच्छत्=पूछा । सव्रीडेव=लज्जित हुई सी । सविषादेव=दुःखित सी हुई । सगौरवेव=गौरवशालिनी सी । अब्रवीत् =कहा । ऐहिकस्य–सांसारिक । अभाजनम्–अनधिकारी । आमुष्मिकाय =पारलौकिक, स्वर्गीय । श्वोवसीयाय=भावी सुख के लिए । आर्तभ्य-पपत्ति वित्तयोः=दुखियों के लिए सिद्धि तथा धन देने वाले । भगवत्-पादयोः=भगवान (आप) के चरणों के । अभि-प्रपन्नः=प्राप्त हो गया, आ गया ।

भावार्थ—उसी समय माता की प्रमुखता वाला वह महापुरुषों का समूह रोदन के साथ पीछे-पीछे दौड़ता हुआ निरन्तर गति से गिर पड़ा । दयालु उस मरीचि) ने उस जनसमुदाय को अपनी दयापूर्ण वाणी से आश्वासन देकर उस वेश्या को दुःख का कारण पूछा । लज्जित सी तथा दुःखी सी हुई गौरवशालिनी की तरह उसने कहा—"श्रीमन् ! ऐहि-लौकिक सुख का अनधिकारी यह जन पारलौकिक सुख की प्राप्ति के लिए दुःखियों को सिद्धि तथा धन देने वाले आपके चरणों की शरण में आया है ।"

समास—माता प्रमुखा यस्मिन् स मातृप्रमुखः (बहुव्रीहि) ।

पृष्ठ ४०—अथ सा........................इत्युदमनायत ।

शब्दार्थ—वारयुवतिः=वेश्या । दुःखाकरः=दुःख का सागर । अप-वर्गः=मोक्ष । तयोः=उनमें से । प्रकृष्टज्ञान साध्यः=उच्चकोटि के ज्ञान प्राप्त होने योग्य । दुःसम्पादः=कठिनता से प्राप्त होने वाला । द्वितीयः= दूसरा । सुलभः=आसान । कुलधर्मानुष्ठायिन=कुल धर्म का अनुष्ठान करने वाले । अशक्यारम्भादुपरम्य=अशक्य उद्योग से विरत होकर । मतुर्मते=माता की बात । वर्तस्व=मानो । सानुकम्पम्=दयायुक्त । भगवत्पादमूलमशरणम्=आपके पास शरण नहीं मिलेगी । कृपणायाः=

दीन की। हिरण्यरेता = अग्नि। उदमनायत = विलखने लगी।

भावार्थ—इसके बाद तपस्वी ने वेश्या से कहा—भद्रे! वनवास दुःखकी खान है। उसका फलमोक्ष अथवा स्वर्ग हो सकता है। सो मोक्ष तो अतिशय प्रखर ज्ञान से ही साध्य हो सकता है और उसमें विविध प्रकार के क्लेश मिलते हैं। रही स्वर्ग की बात सो वह अपने कुल-धर्म का अनुष्ठान करने वाले सभी प्राणियों के लिए सुलभ है। अतएव तुम ऐसे अशक्य उद्योग से विरत होकर अपनी माता की बात मानो। इस प्रकार मुनि की दयामयी वाणी कहने पर वेश्या ने कहा—यदि यहाँ आपके चरणों में भी मुझे शरण नहीं मिलेगी तो मुझ अभागिन के लिये अग्निदेव ही शरण होंगे। यह कह कर वह विलखने लगी।

समास—दुखानां आकरः इति दुःखाकरः (षष्ठी तत्पुरुष) प्रकृष्टं यत् ज्ञानं प्रकृष्टज्ञानम्—(कर्मधारय) प्रकृष्टज्ञानेन साध्यप्रकृष्टज्ञानसाध्य (तृतीया तत्पुरुष) कुलञ्च धर्मश्चकुलधर्मे (द्वन्द्व) कुलधर्माणामनुष्ठानं करोति इति कुलधर्मानुष्ठायी तस्य कुलधर्मानुष्ठायिनः (षष्ठी तत्पु०)।

पृष्ठ ४१—स तु..............................स्थास्यति।

शब्दार्थ—अनुविमृश्य = विचार कर। गणिकामातरम = वेश्या की माता को। अवदत् = कहा। सम्प्रति = इस समय, अब। गच्छ = जाओ। गृहान् = घर को। प्रतीक्षस्व = प्रतीक्षा करो। कानिचिद्दिनानि = कुछ दिनों तक। यावत् = जबतक। भूयोभूयः = बारबार। अस्माभिः = हमारे से। विबोध्यमाना = समझाने से। स्थास्यति = हो जायेगी।

भावार्थ—इसके बाद कुछ विचार करके तपस्वी जी ने वैश्या की माता से कहा—इस समय तुम घर पर जाओ। और कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करो हमारे बारबार समझाने से यह प्रकृतिस्थ हो जायेगी।

समास—गणिकायाः मातरम् गणिकामातरम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४१—तथा..............................अरंजयत्।

शब्दार्थ—तथा = बहुत अच्छा। प्रतियाते = लौट जाने पर। स्वजने = कुटुम्बियों के। अलघुभक्तिः = बड़ी श्रद्धा से। नात्याहतशरीरसंस्कारा = शरीर के संस्कारों का आदर न करती हुई शरीर का शृङ्गार आदि

छोड़कर। गन्ध=चन्दन। माल्य=माला। त्रिवर्गसम्बन्धिनीभिः=अर्थ, धर्म, काम से सम्बन्ध रखने वाली। अल्पयसैव=थोड़े ही समय में। अन्वरञ्जयत्=मोह लिया।

भावार्थ—"बहुत अच्छा" कहकर जब उसके कुटुम्बी घर लौट गये तब वह वेश्या बड़ी श्रद्धाभक्ति से ऋषि की पूजा करने वाली उसने शरीर का शृङ्गार करना छोड़ दिया। वह चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नाचना गाना तथा बजाने की क्रिया में पूजा करती तथा एकान्त में अर्थ, धर्म काम से सम्बन्ध रखने वाली अथवा अध्यात्म से सम्बद्ध अनुरूप बातें करती। ऐसा करके उसने थोड़े ही समय में मुनि के मन को मोह लिया।

समास—नात्याहृतः शरीरस्य संस्कारः यया सा नात्याहृतशरीर-संस्कारा (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४१—निशम्य...न्यषीदत्।

शब्दार्थ—निशम्य=सुनकर। नियतिबलात्=भाग्य से। तत्पाटवात्=उसकी चतुरता से। स्वबुद्धिमान्द्यात्=अपनी बुद्धि मन्द पड़ जाने से। स्वनियममनादृत्य=अपने नियमों को छोड़कर। प्रासजत्=आसक्त होगया। सुदूरम्=बहुत दूर। प्रवहणेन=रथ से। नीत्वा=लेजा कर। पुरमुदारशोभया=शोभा सम्पन्न नगर। राजवीथ्या=राज वीथी से। वीथी=गली। अनैषीत्=ले गई। उत्तरेद्युः=दूसरे दिन। स्नातानुलिप्तम्=स्नान के पश्चात् तेल लगाये हुये। आरचितमञ्जुमालम्=सुन्दर माला पहने हुए। आरब्धकामिजनवृत्तम्=कामीजनों जैसा वेश बनाया। निवृत्तस्ववृत्ताभिलाषम्=अपने ऋषि जीवन की बातों से रहित। दूयमानम्=बेचैन, विह्वल। ऋद्धिमता=समृद्ध सम्पन्न। युवतिशतपरिवृत्तस्य=सैकड़ों युवतियों से घिरे हुए। राज्ञः=राजा के। सन्निधौ=समीप में। समासदत्=ले आई। निषीद=बैठो। आदिष्टा=आज्ञा प्राप्त हुई। सविभ्रमम्=भावभङ्गी के साथ। न्यषीदत्=बैठ गई।

भावार्थ—उसके ये वचन सुनकर दैवबल से, उस वेश्या के कौशल

से, अथवा बुद्धि मन्द पड़ जाने के कारण ऋषि अपने नियमों को छोड़ कर उसमें आसक्त हो गया। वह वेश्या मूढात्मा उस मुनि को रथ पर बैठा कर उत्कृष्ट शोभा सम्पन्न राजवीथी से चलकर अपने नगर के भवन में ले गई। उसी समय घोषणा हुई कि "कल कामोत्सव मनाया जावेगा" दूसरे दिन महर्षि मरीचि ने स्नान करके सुगन्धित तेल लगाया तथा पुष्पमाला पहनी। उस समय उसने कामी पुरषों जैसा अपना वेश बना लिया। अपने ऋषि नियम को त्याग देने वाले तथा उस वेश्या के एक क्षण के लिये कहीं चले जाने पर विह्वल उस ऋषि को वह वेश्या समृद्धि सम्पन्न राजमार्ग से चलकर सैंकड़ों युवतियों से आवेष्ठित राजा के पास किसी उद्यान में ले गई। हँसते हुए राजा के "भद्रे! भगवान् मरीचि के साथ बैठो। ऐसे आदेश से वह वेश्या भावभङ्गी से राजा को प्रणाम करके हँसती हुई गई।

समास—तस्याः पाटवात् तत्पाटवात् (षष्ठी तत्पु.)। स्वस्य बुद्धिमान्द्यात् स्वबुद्धिमान्द्यात् (षष्ठी तत्पु०)। आदौ स्नातः पश्चादनुलिप्तः येनासौ तम् स्नातानुलिप्तम (बहुव्रीहि)। निवृत्तः स्ववृत्तस्य अभिलाषी यस्य सः तम् निवृत्तस्ववृत्ताभिलाषम् (बहुव्रीहि)। कृतप्रणामो यया सा कृतप्रणामा (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४२—तत्र...अनुष्ठेयः इति।

शब्दार्थ—बद्धांजलि=हाथ जोड़े हुए। उत्तमाङ्गना=उत्तम श्रेणी की स्त्री। दास्यम्=दासता। अभ्युपेतम्=स्वीकार कर लिया। प्राणंसीत्=प्रणाम किया। उदजिहीतं=होने लगा। महार्हैं=बहुत कीमती। परिवर्हेण=राज्योचित पुरस्कार से, हाथी घोड़े आदि से। अनुगृह्य=सन्तुष्ट करके। विसृष्टा=विदा की। वारमुख्याभिः=श्रेष्ठ वेश्याओं से। पौरमुख्यै=पुरवासियों से। गणशः=इकट्ठे हुओं से। प्रशस्यमाना=प्रसंशा की हुई। अगत्वैव=जाये बिना ही। अभाषत=कहने लगी। अथमंजलिः=मैं हाथ जोड़ती हूँ। अनुष्ठेयः=करो।

भावार्थ—वहां पर एक उत्तम श्रेणी की स्त्री उठ खड़ी हुई और बोली—देव! इसने हमको जीत लिया है। आज से मैं इसकी दासी हो गई हूँ यह कह राजा को प्रणाम करके बैठ गई। इस पर लोगों का

विस्मय और हर्ष से भरा कोलाहल होने लगा। प्रसन्न हुए राजा ने अत्यन्त कीमती रत्न भूषण तथा राज्यपरिच्छद (हाथी घोड़े आदि) से सन्तुष्ट करके उसको विदा कर दिया। झुण्ड के झुण्ड वेश्याओं तथा पुर वासियों ने उसकी प्रशंसा की। अपने घर जाने से पूर्व ही काम-मंजरी ने मरीचि कवि को कहा—भगवान मैं हाथ जोड़ती हूँ। आपने इस दासी के ऊपर बड़ी कृपा की। अब जाकर अपना काम करिये।

समास—विस्मयश्च हर्षश्च विस्मयहर्षे मूल यस्य सः विस्मयहर्षमूलः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४२—स तु.................................चम्पायाम्।

शब्दार्थ—रागशनिहत इव=प्रेम से वज्राहत हुये की भाँति उद्-भ्राम्य=पागल से होकर, तिलमिला कर। अब्रवीत्=बोले। किमेतत् =यह क्या है। कुतः=कहाँ से। औदासीन्यम्=विराग। क्व=कहाँ। गतः=गया। तव=तेरा। मयि=मेरे में। असाधारणोनुरागः= अत्यधिक प्रेम। सस्मितम्=हँस कर। अवादीत्=बोली। मतः=मेरे से। सङ्घर्षे=विवाद में। मरीचिमावर्जितवतीव=मरीचि को वश में किये हुए की भाँति। श्लाघसे=अभिमान करती है। अधिक्षिप्ता= तिरस्कृत। दास्यपणबन्धेन=दासी बनने की शर्त से। प्रावर्तिषि= प्रवृत हुई। सिद्धार्थ=सिद्ध मनोरथ वाली। त्वत्प्रसादात्=आपकी कृपा से। अवधूतः=तिरस्कृत। कृतानुशय=पछता करके। शून्यवत्= शून्य की भाँति। न्यवर्तिट=लौट आये। मन्यस्व=जानो। स्वशक्ति-निषिक्त=अपने से अर्पित। रागम्=अनुराग को। उद्धृत्य=दूर करके। बन्धया=कुलटा ने। अर्पितम्=दे दिया। त्वदर्थसाधनक्षमः= आपका कार्य साधन करने के समर्थ। अङ्गपुर्याम्=अङ्गपुरी में। वस=रहो।

भावार्थ—प्रेमातिरेक के कारण अपनी प्रिया के कठोर वचन सुन करके महर्षि ऐसे तिलमिला उठे जैसे उनके ऊपर वज्र गिर गया हो। उन्होंने कहा—प्रिये! यह क्या तुम्हारे में इतनी उदासीनता क्यों आगई। मेरे में तुम्हारा जो असाधारण अनुराग था वह कहाँ चला गया। इसके

बाद हँस कर बोली। भगवान! जिसने आज मेरे से पराजय को स्वीकार किया है उसने मेरे और अपने आपस के विवाद में मेरा तिरस्कार किया था कि तुम तो ऐसा अभिमान करती हो जैसे मरीचि को मोहित कर लिया हो। अन्त में जब उसने मेरी दासी होने की शर्त मान ली तब मैं इस काम [आपको मोहित करने के] में प्रवृत्त हुई थी। आपकी कृपा से मेरा मनोरथ सिद्ध हो गया है। उससे इस प्रकार तिरस्कृत होने पर वह दुर्मति पछताता हुआ शून्य मन से अपने आश्रम को लौट आया। हे महाभाग! इस प्रकार उससे पाप में डूबा हुआ तपस्वी मैं ही हूँ। अपनी शक्ति से अर्पित राग को दूर करके उस कुलटा ने मुझे असाधारण वैराग्य दान किया है। शीघ्र ही मेरी आत्मा आपका कार्य साधन करने में समर्थ हो जायेगी। तब आप इस अङ्गपुरी में ही निवास करो।

समास—दास्यमेव पणस्तस्य बन्धः तेन दास्यपणबन्धेन (षष्ठी तत्पुरुष)। सिद्धः अर्थो यस्याः सा सिद्धार्था (बहुव्रीहि)। कृतं अनुशयं येनासौ कृतानुशयः (बहुव्रीहि)। स्वशक्त्या निषिक्तं स्वशक्तिनिषिक्तम् (तृतीया तत्पुरुष) त्वदर्थसाधने क्षमः त्वदर्थसाधनक्षमः (सप्तमी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४३—अनुमत..................... उदचलम्।

शब्दार्थ—अनुमतमुनिशासनः=तपस्वी की। अमुनैव=इसके साथ ही। अनुशय्य=सोकर। नीतरात्रिः=रात व्यतीत होने पर। प्रत्युन्मिषति=उदय होते हुए, उदय होने पर। उदयप्रस्थः=उदयाचल की चोटी। दावकल्पे=वन की अग्नि के समान। कल्पद्रुमकिसलयावधीरिण्यरुणार्चिषि=कल्पवृक्ष के पत्तों को तिरस्कृत करने वाले रक्तवर्ण सूर्य के। तम्=तपस्वी को। नगराय=नगर के लिये। उदचलम्= चल पड़ा।

भावार्थ—मुनि की अनुमति से ही मैंने उनके साथ सन्ध्या की तथा उनके साथ ही सोया। और तरह-तरह की बातें करते हुए रात व्यतीत की। प्रातःकाल जब दावानल के समान तथा कल्पवृक्ष की कोपलों को नीचा दिखाने वाली अरुण किरणें उदयाचल पर उदित हुई तब मैंने उनको प्रणाम किया और नगरी की ओर चल पड़ा।

समास—अनुमतं मुनिशासनं येनासौ अनुमतमुनिशासन (बहुव्रीहि)। नीतारात्रि येनासौ नीतिरात्रि (बहुव्रीहि)। उदयस्य प्रस्थः उदयप्रस्थः (षष्ठी तत्पुरुष)। कल्पद्रुमस्य किसलयानि कल्पद्रुमकिसलयानि (षष्ठी तत्पु०) अवधीरयति इति अवधीरिणी (उपपद समास)।

पृष्ठ ४३—एष्वेव.............................ममाभून्मनः।

शब्दार्थ—स्वसा=बहन। यवीयसी=छोटी। पञ्चवीर गोष्ठे= नागरिकों की सभा में। सङ्गीतकम्=नाचना गाना। अनुठास्यति= करेगी। सान्द्रादरः=गाना सुनने की इच्छा वाले। समागमन्=आते हुए। नागरजनः=नागरिक। अहन्-अपहार वर्मा। धनमित्रेण=धर्नमित्र के साथ। सन्यनिधिषि=निकट पहुँच गया। प्रवृत्तनृत्यायाम्=नाचने के लिये तैयार हुई।

भावार्थ—इन्हीं दिनों काममंजरी की छोटी बहन रागमंजरी का नागरिकों की सभा में नाच गाना होने वाला है यह सुनकर उसका गाना सुनने की इच्छा वाले बहुत से नागरिक वहाँ एकत्र होगये। मैं भी अपने मित्र धर्नमित्र के साथ वहाँ जा पहुँचा। जब वह नाच रही थी तब मेरा मन दूसरी रङ्गभूमि बन गया था।

समास—पञ्चवीराणाम् गोष्ठे पञ्चवीरगोष्ठे (षष्ठी तत्पु०)।

पृष्ठ ४३.....................................अशयिषि।

शब्दार्थ—कांचित्=कोई। काममंजर्याः=काममंजरी की। चीवर पिण्डदानादिनोपसङ्गृह्य=वस्त्र खण्डान्नदान द्वारा वश में करके। शाक्य भिक्षुकाम्=बौद्ध सन्यासिनी को। पणबन्धम्=शुल्कादि दान व्यवस्था। अजिनरत्नम्=चर्मरत्न, भस्त्रिका को। उदारकात्=धनमित्र से। मुषित्वा =चुरा कर। तुभ्यम=तुम्हें। प्रतिदा..म्=बदले में। सम्प्रतिपन्नायाम् =स्वीकार करने पर। सम्पाद्य=प्रबन्ध करके। मद्गुणोन्मादितायाः =मेरे गुणों से उन्मुग्ध [प्रफुल्लित]। करकिसलयम्=हस्त पल्लव। अग्रहीषम्=ग्रहण किया।

भावार्थ—इसके पश्चात् काममंजरी की बौद्ध सन्यासिनी धर्म- रक्षिता नाम की मुख्य दूती को वस्त्र खण्डान्न द्वारा वश में करके उसी

दूती के मुख से उस कुल । काममंजरी से पणवन्ध शुल्कादि दान व्यवस्था की। धनमित्र से चुराकर चर्मरत्न भस्त्रिका मैं तुझे दूंगा। यदि बदले में तू रागमंजरी को मुझे देगी। उस काममंजरी के स्वीकार करने पर मैंने उसके लिये चर्मरत्न भस्त्रिका का प्रबन्ध करके मेरे गुणों से उन्मुग्ध [प्रफुल्लित] रागमंजरी के पाणिपल्लव को ग्रहण किया।

समास—मद्गुणैः उन्मादितायाः मद्गुणोन्मादितायाः (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४४—अथ.......................................अवगमितः ॥

शब्दार्थ—वेशकृच्चादुत्थाय = वेश्या के व्यसन से दुःखी होकर। पुनः प्रतितप्ततपः प्रभावप्रत्यापन्नदिव्यचक्षुषमुसंगम्य = फिर तप के प्रभाव से दिव्य चक्षुत्व को प्राप्त करके। त्वद् = आपके [राजवाहन]। अवगमिः = समाचार ज्ञात हुआ।

भावार्थ—इसके बाद मैं ऐश्वर्यवान् महर्षि मरीचि मुनि के पास गया जो मरीचि वेश्या के व्यसन से दुःखी होकर फिर तप के प्रभाव से दिव्य चक्षुत्व को प्राप्त कर चुके थे उसी मरीचि मुनि से आपके [राजवाहन के] दर्शन का समाचार ज्ञात किया।

समास—वेश्यायाः कृच्छ्रात् वेशकृच्छ्रात् (षष्ठी तत्पु०)। पुनः प्रतितप्तं यत्तपः पुनःप्रतितप्ततपः (कर्मधारय) तस्य प्रभावः पुनः प्रतितप्ततपःप्रभाव (षष्ठी तत्पुरुष) तेन प्रत्यापन्नं दिव्यचक्षुतं येनासौ तम् पुनः प्रतितप्तयः प्रभावप्रत्यापन्नदिव्यचक्षुपम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४४—तेष्वेव............इत्यवध्नात्।

शब्दार्थ—सिंहवर्माधूतदुहितृप्रार्थनः = सिंहवर्मा से अस्वीकृत पुत्री की प्रार्थना वाला। [चण्डवर्मा से की गई पुत्री प्रार्थना को सिंहवर्मा से अस्वीकार कर दिया।] कुपितः = क्रुद्ध हुआ। अभियुज्य = आक्रमण करके। अवारुणत् = घेर लिया। अमर्षणः = क्रोधी। अरि = शत्रु। पारगामिकम् = दूसरे के राज्य पर अधिकार करना। आचिकीर्षति = करने की इच्छा करना। प्राकारम् = प्राचीर को, दिवार को। निर्भिद्य = तोड़ कर। प्रत्यासन्नम् = निकट आये हुए। अयसंदमाणः = प्रतीक्षा किये

विना । निर्गत्य=जा कर । अत्यधिकबलेन=बड़ी सेना से । विद्विषा=शत्रु के साथ । सम्पराये=युद्ध में । भिन्नवर्मा=कवच टूट जाने वाला । अगृहीत=पकड़ लिया । हठात्=जबरदस्ती से । परिणेतुम्=विवाह करने को । आत्मभवनम्=अपने भवन में । अनीयत=ले गया । कौतुकम=मङ्गलसूत्र । क्षपावसाने=रात बीत जाने पर । अबन्धनात्=बांध लिया ।

भावार्थ—उन्हीं दिनों सिंहवर्मा की पुत्री की विवाहार्थ प्रार्थना को सिंहवर्मा से अस्वीकृत होने पर क्रुद्ध हुये चण्डवर्मा ने आक्रमण करके सिंहवर्मा के नगर को घेर लिया। अङ्गराज सिंहवर्मा इस बात को सहन न कर सका। जब तक शत्रु चण्डवर्मा परराज्यास्कन्द नोचित विधि को करने की इच्छा कर रहा था तब स्वयं ही प्राचीर को तोड़ करके तथा अपने सहायक राजाओं की जो नगर के निकट ही आगये थे प्रतीक्षा किये विना ही बहुत बड़ी सेना वाले शत्रु से युद्ध ठान दिया। युद्ध में कवच टूटे हुये सिंहवर्मा को चण्डवर्मा ने पकड़ कर बांध लिया और अम्वालिका को जबरदस्ती पकड़ कर चण्डवर्मा विवाह के लिये अपने भवन में ले गया। रात्रि समाप्त होने पर विवाह होगा यह समझते हुये मङ्गलसूत्र भी बांध लिया।

समास—सिंहवर्मणा अवधूतादुहितृ प्रार्थना यस्यासौ सिंहवर्मावि-धूतदुहितृप्रार्थनः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४४ अहं च ....द्रक्ष्यसि इति।

शब्दार्थ—धनमित्र गृहे=धन मित्र के घर में। तद्विवाहायैव=अम्वालिका के विवाह के लिये ही। पिनद्धमङ्गलप्रतिसरः=मंगल सूत्र धारण करके। समापतितमेव=चले आ रहे हैं। चला आ रहा है। अङ्गराजाभिसरम्=अङ्गराज का सहायक। राजमण्डौलम्=राजाओं का समूह। सुगूढमेव=गुप्त रीति से। पौरवृद्धैः=पौरवृद्धों के साथ। नगर के बड़े लोगों के साथ। सम्भूय=मिल कर। उपावर्तय=लौटादो। कृत्तशिरम्=कटे हुये शिर वाले। द्रक्ष्यसि=देखोगे।

भावार्थ:—मैंने (अपहार वर्मा ने) भी धनमित्र के घर में ही उस

राजपुत्री अम्बालिका के साथ विवाह करने के निमित्त मङ्गल सूत्र धारण करके धन मित्र से कहा—मित्र ! अङ्गराज के सहायक राजागण अपने दल बल के साथ चले आ रहे हैं। अतः तुम पौरवृद्धों के साथ उन राजाओं से गुप्त रीति से मिलकर उन्हें रोकदो। और उन्हें समझा दो कि वे लोग थोड़ी देर में आवें तो शत्रु को कटे हुये शिर में पावेंगे।

समास—पिनद्धो मङ्गल प्रतिसरो येनासौ पिनद्धमङ्गल प्रतिसर (बहुव्रीही)। कृत्तम् शिर यस्य स तमकृत्तशिरम् (बहुव्रीही)।

पृष्ठ ४४—४५—तथा..........................अनुगृहीत इति

शब्दार्थ—अभ्युपगते = स्वीकार करने पर। गतायुषः = थोड़ी आयु वाला। अमुष्य = चण्डवर्मा का। उत्सवाकुलम् = उत्सव से पूर्ण। उपसमाधीयमानपरिणयोपकरणम् = विवाह की सामग्री से परिपूर्ण। प्रवेशनिर्गम प्रवृत्तलोकसम्बाधम् = लोगों के गमनागमन से प्रवेशमार्ग पर कठिनता प्रतीत हो रही थी। अलक्ष्यशस्त्रिकः—गुप्त छुरी के साथ। मंगलपाठकैः = मंगल पाठ करने वालों के। आदित्समानस्य = ग्रहण करने की इच्छा वाले। अयामिनम् = फैलाये हुये। आकृष्य = खींच कर। प्राहार्षम् = प्रहार किया। स्फुरतश्च = कुपित हुये। यमविषयमगमयम् = मार दिया, यमराज के यहां पहुँचा दिया। नवाम्बुवाहस्तनितगम्भीरेण = नूतन मेघ के गर्जन के सदृश गम्भीर स्वर से। अनुगृहीत = अनुगृहीत किया।

भावार्थ—धनमित्र से "तथा" (ठीक उसी प्रकार से करूंगा ऐसी स्वीकृति पाकर स्वल्पायुषवान् चण्डवर्मा के भवन में चला गया। वहां देखा कि राजभवन विवाहोचित अनेकों वस्तुओं से परिपूर्ण है उधर लोगों के गमनागमन से प्रवेश मार्ग पर बड़ी कठिनता प्रतीत हो रही है। मैं भी गुप्त छुरी के सहित मंगलाचरण करने वाले ब्राह्मणों के साथ उस राज भवन में चला गया वहां प्रवेश करके मैंने देखा कि— अम्बालिका कुमारी के कोमल करों को अथर्ववेद की गति से अग्नि देवता के सम्मुख साक्षी भूत कराया जा रहा है और उसका पाणिग्र-

हरण करने के लिये चण्डवर्मा ने अपने विशाल हाथ को उसी समय बढ़ाया। उसी समय मैंने चण्डवर्मा को खींच कर उसके हृदय में छुरी भोंक दी। चण्डवर्मा के विनाश जीवन क्रोध से युक्त कुछ दूसरे लोगों को भी यमराज के द्वार भेज दिया। उसी क्षण नूतन मेघ के गर्जन के सदृश गम्भीर स्वर से आपने (राजवाहन ने) मुझे अनुकम्पित किया।

समास—गतं आयुर्यस्य सः तस्य गतायुषः (बहुव्रीही)। उत्सवेन आकुलम उत्सवाकुलम् (तृतीया तत्पुरुष)। उपसमाधीयमानानि परिणयोपकरणानि यत्र तत् उपसमाधीयमानपरिणयोपकरणम (बहुव्रीही)। प्रवेशनिर्गमेषु प्रवृतः प्रवेशनिर्गमप्रवृत्तैः (सप्तमी तत्पुरुषः) प्रवेशनिर्गमप्रवृत्तलोकैः सम्वाधम् प्रवेशनिर्गमप्रवृत्तलोकसम्पाधम् (तृतीया तत्पुरुष) अलक्ष्या छूरिका यस्य सः अलक्ष्यशस्त्रिकः (बहुव्रीही) नवाम्बुवाहस्य स्तनितं नवाम्बुवाहस्तनितम् (षष्ठी तत्पुरुष) तद्वत् गम्भीरेण नवाम्बुवाहस्तनितगम्भीरेण (कर्म धारय)।

पृष्ठ ४४ श्रुत्वा.................................अभिदधे।

शब्दार्थः—श्रुत्वा = सुन कर। स्मित्वा = हंस कर। कर्कश्येन = कठोरता से। कर्णीसुतम् = चौर्य शास्त्र के प्रवर्तक को, कर्तिकेय को। अतिक्रान्त = मात कर दिया। अर्थपाल मुखे = अर्थ पाल के मुख की ओर। निधाय = करके। स्निग्धदीर्घाम् = प्रेम भरी। दृष्टिम् = नजर को आचक्ष्टाम् = बताओ। आत्मचरितम = अपना समाचार। बद्धाञ्जलि = हाथ जोड़ कर। अभिदधे = बोला।

भावार्थ—इस वृत्तान्त को सुन कर तथा मुसकरा करके देव राजवाहन ने कहा—"आपने तो कठोरता से कर्णीसुत (कार्तिकेय) को भी मात कर दिया। इस प्रकार कह कर अर्थ पाल की ओर प्रेम भरी दृष्टि करके "आप अपने समाचार को सुनाओ" यह आज्ञा दी। वह भी हाथ जोड़ कर कहने लगा।

समास—आत्मन श्चरितम् आत्म चरितम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

शब्दार्थः—सुहृद्भिः = मित्रों से। ए कर्मोमिमालिनेसि = आप के अन्वेषण में समुद्यतः। भूमितलम् = भूमण्डल में। पर्यटनम् =

घूमते हुये। उपासरम्=पहुँचा। वाराणसीम्=बनारस में। उपस्पृश्य=स्नान करके। मणिभङ्गनिर्मलाम्भसि=मणियों के टुकड़ों के समान निर्मल जल में। मणिकर्णिकायाम्=मणिकर्णिका तीर्थ में। अविमुक्तेश्वरम=काशीनाथ को। अभिप्रणम्य=प्रणाम करके। प्रदक्षिणम्=परिक्रमा। आयान्तम्=आते हुये को। अविरतरुदितोच्छूनताम्रदृष्टिम=सदा रोने से लाल लाल नेत्रों वाले। अद्राक्षम्=देखा। अतर्कयच्च=विचार किया। कार्पण्यमिव=दीनता के समान। वर्षति=बरसती है। क्षीणतारम्=कमजोर कनिका वाली। चक्षुः=नेत्र। आरम्भश्च=कार्य में। साहसानुवादी=साहसी। प्राणनिःस्पृहः=जीवन से इच्छा रहित। कृच्छ्रम=कष्ट को। प्रतिपत्स्यते=भोग रहा है। पृच्छेयम=पूछना चाहिये। सन्नाहः=समुद्योग। अवगमयति=बता रहा। गोप्यम्=छिपाने योग्य। श्रोतुम=सुनना। शोकहेतुम=शोक का कारण।

भावार्थ—देव आपके अन्वेषणार्थ सभान कर्म में सुदृढ़ मित्रों के साथ समुद्रान्त पृथ्वी मण्डल पर पर्यटन करता हुआ मैं एक बार काशीपुरी की वाराणसी में पहुँचा। मणिकर्णिक तीर्थ के मणियों के टुकड़ों के सदृश निर्मल जल में स्नान करके काशीनाथ अन्धकासुर संहारक भगवान् विश्वनाथ को प्रणाम करके परिक्रमा करते हुये निरन्तर रोने के कारण लाल लाल नेत्रों वाले आते हुये एक पुरुष को देखा और विचार किया कि यह पुरुष कठोर है इसकी आँखें दीनता को बताती हुई आँसु बहा रही हैं। कार्य में यह साहसी प्रतीत होता है। निश्चय ही यह मनुष्य अपने जीवन से निःस्पृह होकर स्वात्मीय प्रियजन के कष्टदायक क्लेश को भोग रहा है। उसे पूछना चाहिये। यदि इसको मेरी सहायता की भी कोई आवश्वकता हो सो भी पूछना चाहिये। हे भद्र! आपका समुद्योग साहस को बता रहा है यदि छिपाने योग्य नहीं हो तो मैं शोक का कारण सुनना चाहता हूँ।

समास—एक कर्म यस्यासौ एक कर्मा (बहुव्रीहि) उर्मीणां माला अस्यास्ति इति उर्मिमाली (बहुव्रीहि) उर्मिमाली नेमि यस्येतिउर्मिमालीनेमि (बहुव्रीहि)। मणीनां भंग मणिभग (षष्ठी तत्पुरुष) मणि भंगवत्

निर्मलं तोयं यस्यास्तस्याम् मणिभंगनिर्मलाम्भसि बहुव्रीहि) । अविरतं यत् रुदितं अविरतरुदितम् (कर्मधारय) अविरतं रुदितेन उच्छूने ताम्रे दृष्टि यस्य सः तम् अविरतरुदितोच्छुनताम्रदृष्टिम् (बहुव्रीहि) प्रियजनस्य व्यसनं मूलं यस्य तत् प्रियजनव्यसनमूलम् (बहुव्रीहि) शोकस्य हेतुम शोकहेतुम (तत्पुरुष) ।

पृष्ठ ४६—स...न्यवर्तिष्ट: ।

शब्दार्थ—सबहुमाम् = सम्मानपूर्वक । निर्वण्य = देखकर । करवीर-तले = कनियर के पेड़ के नीचे । निषण्ण: = बैठा हुआ । अकार्षीत् = करनी प्रारम्भ की । गृहपतिपुत्र: = ग्रामाध्यक्ष का पुत्र । प्रयत्नसंवर्धितोऽपि = प्रयत्न पूर्वक पालन करने पर भी । दैवच्छदानुवर्ती = भाग्यवश पड़ा हुआ । अर्थवर्यस्य = श्रेष्ठ बनिये के । चोरयित्वा = चोरी करके । रूपाभिग्राहित = चोरी की गई वस्तुओं के कारण पकड़ा हुआ । वध्ये = मारने योग्य । मत्तहस्ती = मत वाला हाथी । हिंसाविहारी = हिंसा में दूसरों के प्राण हरण करने वाला । राजगोपुरोपरितलाधिरूढस्य = नगर के मुख्य द्वार पर बैठे हुए । पश्यत: = देखते हुए । शासनाजकण्ठरव-द्विगुणीकृतकण्ठरव = राज्या के मनुष्यों की आवाज से दुगुणी हुई घण्टे की आवाज वाला । मण्डलितहस्तकाण्डम् = सूँड को मण्डलाकार किये हुए । अभिपत्य = समीप आकर । निर्भर्सित = तर्जना किया हुआ । भीतवत् = डरे हुए की भाँति । न्यवर्तिष्ट = लौट गया ।

भावार्थ—उस पुरुष ने सम्मानयुक्त दृष्टि से मुझे देखकर कहा—कोई दोष नहीं है सुनिये । एक कनियर के पेड़ के नीचे मेरे साथ बैठकर उसने कथा कहनी आरम्भ की । हे महाभाग ! मैं पूर्वदेश के एक स्वेच्छाचारी पूर्णभद्र ग्रामाध्यक्ष का पुत्र हूँ । पिता द्वारा प्रयत्न पूर्वक लालन-पालन करने पर भी मैं चौर्यवृत्ति करने लगा । इसके बाद इस काशीपुरी में किसी वैश्य के घर चोरी की और चोरी की वस्तुओं के साथ नागरिकों द्वारा मैं पकड़ा गया । मेरे अपराध पर मुझे मृत्यु दण्ड की सजा दी गई तथा मेरा वध करने के लिये मेरे ऊपर मृत्यु विजय नाम का हिंसा करने वाला हाथी छोड़ा गया । नागरिक समूहों की

कण्ठध्वनि से द्विगणित घण्टारव को करता हुआ वह हाथी मेरी ओर झपटा। उस समय कामपाल नामक राज्य के प्रधान मन्त्री इस नगर के मुख्य द्वार के ऊपर बैठ कर उस दण्ड का अनुशासन कर रहे थे। जब वह हाथी अपने शुण्डादण्ड को मण्डलाकार करके मेरी ओर दौड़ा तो मैंने निडर होकर उसकी बहुत तर्जना की जिससे वह डरे हुए की भाँति लौट गया।

समास—प्रयत्नेन सम्वर्धितः प्रयत्नसम्वर्धितः (तृतीया तत्पुरुष)। रूपेण अभिग्राहितः रूपाभिग्राहितः (तृतीया तत्पुरुष)। हिंसायाम् अन्य-प्राणनाशे विहरतीति हिंसाविहारी (सप्तमी तत्पुरुष)। जनानां कण्ठरवः (षष्ठी तत्पुरुष)। जनकण्ठरवेण द्विगुणितो घण्टारवो यस्य सः जन-कण्ठरवद्विगुणितघण्टारवः (बहुव्रीहि)। मण्डलितो हस्तकाण्डो यत्र तत् मण्डलितहस्तकाण्डम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४६—मन्त्रिणा .... वर्तितुम्।

शब्दार्थ—आहूय=बुला कर। अभ्यधायिषि=कहा। एवम्भूतः कृतः=ऐसी दशा कर दी। विरम्य=छोड़कर। मलीमसात्=गर्हित, निन्दित। प्रतिपद्य=करो। आर्यवृत्या=श्रेष्ठ लोगों के व्यवहार से।

भावार्थ—मन्त्री ने फिर मुझे बुला कर कहा—सौम्य! यह मृत्यु विजय नाम का हिंसा करने वाला हाथी साक्षात् यमराज ही है सो इसकी भी तुमने ऐसी दशा कर दी। अतः आप यदि उस गर्हित कर्म को छोड़ कर सदाचार युक्त कर्म करें और हम लोगों से व्यवहार करें तो उचित हो।

पृष्ठ ४६-४७—मयापि .... भवेत इति।

शब्दार्थ—पर्यश्रुणा=आँसू बहाते हुए ने। अभिहितः=कहा। गोपायित्वा=छिपाकर। तस्य=कामपालस्य। पादशुश्रूषार्थम्=सेवा करने के लिये। हस्तन्यासः=हाथों में सौंपना। उदायुधानाम्=शस्त्र ग्रहण किये हुओं को। हत्वा=मार कर। मोचयितुम्=छुड़ाने को। संकुले=जनसमूह में। भस्मनि=भस्म में। हुतमिव=होम की तरह। पातयेत्=प्रहार कर देगा।

भावार्थ—मैंने भी रोते हुए ने उनसे कहा—हे भद्र ! अब आपने छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं है। जिस बालक को यक्ष कन्या राजवाहन की सेवा के लिये महारानी वसुमती के हाथों में धर आई थी। वह कामपाल का पुत्र मैं ही हूँ। मेरे में इतनी शक्ति है कि सहस्त्रों शस्त्र सज्जित योधाओं को मार कर अपने पिता को बचा सकता हूँ। किन्तु जन समूह में यदि कोई मेरे पिता के ऊपर प्रहार कर देगा तो मेरा यह प्रयास भस्म में होम के सदृश विफल हो जायेगा।

पृष्ठ ४७—अनवसितवचन............ ....ज्ञातव्य इति।

शब्दार्थ—अनवसितवचने = वाक्य पूरा होने से पूर्व ही। महाशीविषः = सर्प, साँप। प्राकाररन्ध्रेण = दिवार के छिद्र से। उदैरयत = ऊपर किये। उदैरयाच्छिरः = ऊपर सिर किये हुए। अभिगृह्य = पकड़ कर। अब्रवम् = कहा। सिद्धम् = सिद्ध होगया। समीहितम् = अभिलषित, इच्छि। अलक्ष्यमाणः = अदृश्य हुआ। यदृच्छया = स्वेच्छा से। पातितेन = छोड़े हुए से। दर्शयित्वा = कटवा कर। स्तम्भेयम् = स्तम्भित करके, निश्चल करके। उदास्येत = उदास हो जायेंगे। मुक्तसाध्वसेन = निर्भय हुये से। वोधयितव्या = समझा देना। युष्मत्सूनु = तुम्हारा पुत्र। मुक्तत्रासया = निर्भय। प्रेषणीयम् = भेज देना, कहला देना। निरपेक्षम् = बिना विचार किये ही। निग्राह्य = दण्ड देने योग्य। चिताग्निमारोक्ष्यामि = चिता पर चढ़ूँगी, सती हूँगी। पश्चिमः = पिछला। अनुज्ञाप्य = आज्ञा दे।

भावार्थ—मेरा वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि बाहर दिवारी की दिवार के छिद्र से एक बड़े भारी साँप की सूँड दिखाई दी। उस साँप को मैंने मन्त्र और औषध के बल से पकड़ लिया और पूर्णभद्र को कहा—हे सौम्य ! अब मेरा अभिलषित मनोरथ सिद्ध होगया है। जिस समय जनसमूह एकत्र हो जायेगा उस समय मैं अदृश्य होकरके स्वेच्छा से इस साँप को अपने पिता के ऊपर छोड़कर उनको कटवा दूँगा। फिर उसके विष को स्तंभित करके पिता को मृततुल्य प्रदर्शित करूँगा जिससे सब उदास हो जायेंगे। आप निर्भय होकर मेरी माता को कह दीजियेगा

कि आपका वह पुत्र जिसे राजवाहन की परिचर्या के लिए महारानी वसुमति के हाथों में यक्षिणी सौंप आई थी इस जगह पर आगया है तथा अपने पिता की दशा, मेरे द्वारा ज्ञात करके, अपनी बुद्धि की शक्ति से ऐसा व्यवहार करेगा। आप निर्भय होकर राजा के पास यह कहला दीजिये कि यह क्षत्रियों का धर्म है कि चाहे बन्धु हो अथवा अबन्धु हो यदि वह दुष्ट है तो दण्डनीय है। और स्त्री का यह धर्म है कि चाहे पति दुष्ट हो अथवा अदुष्ट हो। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसी की गति का अनुगमन करे। अतः मैं अपने पति के साथ चिताग्नि में प्रवेश करूँगी। युवतियों के लिये श्रेयस्कर इस पिछली विधि को करने की आप मुझे आज्ञा दें।

समास—न अवसितम् अनवसितम् (नञ् समास)। अनवसितं वचनं यस्य सः तस्मिन् अनवसितवचनं (बहुव्रीहि)। युक्तं साध्वसं येनासौ तेन मुक्तसाध्वसेन (बहुव्रीहि)। हस्ते अर्पितः हस्तार्पितः (सप्तमी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४७–४८—स.................प्रस्तुता।

शब्दार्थ—निवेदित = निवेदन करने पर। नियतम् = निश्चय ही। अनुज्ञास्यसि = आज्ञा देगा। आगारमानीय = घर लाकर। काण्डपटी परिक्षप्तं = परदे के पीछे। विविक्तोद्देशे = एकांत में। सन्दर्भ संस्तरणमधिशाय्य = कुशाओं के विस्तर पर लेटा कर। कृतानुमरणमण्डनया = सती होने योग्य वेश को सजाकर। सन्निधेयम् = पास में रहना चाहिये। बाह्यकक्षागतः = बाहर के दरवाजे पर बैठे हुए। प्रवेशयिष्य = प्रवेश करा लेना। उज्जीव्य = जिला करके। चेष्टिष्यामहे = कोशिश करूँगा। तथा = बहुत अच्छा। तूर्णम् = शीघ्र। चिञ्चावृक्षम् = तिन्तिडी के वृक्ष पर। घनतर विपुल शाखम् = विशाल एवं घनी शाखाओं वाले। आरुह्य = चढ़कर। गूढ़तनूः = छिपकर। अतिष्ठम् = बैठ गया। यथायथम् = यथा योग्य। उच्चावचप्रलापा = अनेक प्रकार की बातें। प्रस्तुता = प्रारंभ होगई।

भावार्थ—ऐसा निवेदन करने पर राजा अवश्य आज्ञा दे देगा।
इसके बाद सर्प से दंशित पिता को घर लाकर पर्दे के पीछे एकान्त में

कुशाओं के आसन पर सुलाकर आप सती होने वाले योग्य वेश को सजाकर उसी स्थल के पास रहे। और मुझे बाहर के द्वार पर बैठे हुए को आप अन्दर प्रवेश करा देना। इसके पश्चात् पिता को जीवित करके उनकी इच्छा के अनुसार जो उचित यत्न होगा, करूँगा। वह पूर्णभद्र "तथा" मुझे स्वीकार है ऐसा कहकर तत्क्षण प्रसन्न वदन होकर वहाँ से चला गया। मैं घोषणा के स्थान पर विशाल तथा घनी शाखाओं वाले तिन्तिड के वृक्ष पर चढ़ कर छिपकर बैठ गया। और दूसरे स्त्री पुरुष भी यथायोग्यऊँचे २ स्थानों पर चढ़ गये। इस समय अनेक प्रकार से अनेक बातें शुरू होगई थीं।

समास—दर्भस्य संस्करणम दर्भसंस्करणम् (षष्ठी तत्पुरुष) कृतं अनुमरणस्य मंडनं यया सा तया कृतानुमरणमंडनया (बहुव्रीहि)। घोषणायाः स्थाने घोषणस्थाने (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४८—तावन्मे............................देवः इति।

शब्दार्थ—तस्करमिव=चोर की भाँति। पश्चाद्बद्धः भुजम्=पीछे बँधी हुई भुजाओं वाले को। उद्धुरध्वनि महाजनानुयातम्=पीछे लोगों के कोलाहल करते हुए। मदभ्यासे=मेरे पास ही। स्थापिता=रख कर, स्थापित करके, खड़ा करके। मातङ्ग=चाण्डाल। त्रिरघोषयत्=तीन बार चिल्लाकर कहा। राज्यलोभात्=राज्य के लोभ से। उपांशु=निर्जन में, एकान्त में। हत्वा=मार कर। पापमाचरिष्यन्=पाप का आचरण करता हुआ। विश्वासात्=विश्वास से। रहस्य भूमौ=एकान्तवास प्रदेश में। आहूय=बुलाकर। उपलभ्य=भेद करके। विवृतगुह्य=भण्डाफोड़ कर दिया। राज्य कामुकस्य=राज्य को अभिलाषा करने के। अन्धतमः प्रवेशः=मृत्यु। प्राड्विवाकः=न्ययाधीश। अक्ष्युद्धारणाय=आँख निकालने के लिये। नीयते=लेजा रहे हैं। यथार्हेण=यथायोग्य।

भावार्थ—इतने में ही भीड़ के साथ मेरे पिता को चोर की भाँति पीछे हाथ करके बाँधे हुए बड़े कोलाहल के साथ वहाँ पर मेरे पास ही लाकर खड़ा करके चाण्डाल ने तीन बार जोर से चिल्लाकर कहा—

इस मन्त्री कामपाल ने राज्य के लोभ से स्वामी चाण्डसिंह की तथा उनके बड़े लड़के चंडघोष की जहर मिले हुए अन्न से एकान्त में हत्या करदी। अब उसने पूर्ण तरुणावस्था परिव्याप्त महाराज सिंहघोष को मारने का पापाचरण किया और विश्वास दिला कर महाराज के मन्त्री शिवनाग तथा अनुचर स्थूण तथा अङ्गार वर्ष का राजा से भेदभाव करा दिया और उन लोगों से एकान्त में राजा के वधरूप रहस्य को प्रकट कर दिया परन्तु उन दोनों स्वामी भक्तों ने इस रहस्य का भण्डाफोड़ कर दिया। राज्याभिलाषी इस ब्राह्मण को घोर अन्धकार में प्रवेश करके मार डाला जाये, यही उचित है। अतः न्यायाधीश के आदेशानुसार इसकी आँखें निकालने के लिये हम लोग ले आये हैं। यदि भविष्य में कोई भी ऐसा अपराध करेगा तो वह भी इसी प्रकार का राजदण्ड पावेगा।

समास—पश्चात् बद्धौ भुजौ यस्य स तम् पश्चाद्बद्धभुजम् (बहुव्रीहि)। उद्धरः ध्वनि यस्य सः तादृशः महाजनः उद्धुरध्वनिमहाजनः (बहुव्रीहि)। तेन अनुयातम् उद्धुरध्वनिमहाजनानुयातम् (तृतीया तत्पुरुष। प्राड्विवाकस्य वाक्यात् प्राड्विवाकवाक्यात् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४८–४९—श्रुत्वैतत्............... ....प्राद्रवत्।

शब्दार्थ—श्रुत्वैतत् = यह सुनने के पश्चात्। बद्धकलकले महाजने = समूह में शोर होते हुए। पितुरंगे = पिता के शरीर पर। प्रदीप्तशिरसम् = फण उठाये हुए। व्यक्षिपम् = फेंक दिया। भीतोनाम = डरे हुए की भाँति। अवप्लुत्य = उतर कर। जनादनु = मनुष्यों के पीछे। लीनः = पीछे हुए। विहित जीयमानिनम् = राजा का अपमान करने वाले को। वियोजितः = अलग कर दिया। विधिना = ईश्वर ने। अन्वमन्यन्त = अनुमोदन करते थे। अपरे = दूसरे। रुढत्रास द्रुतलोकदत्तमार्ग = डर उत्पन्न होने के कारण लोगों के भागने से दिये गये मार्ग से। प्राद्रवत् = भाग गया।

भावार्थ—इस वृत्त को श्रवण करने के पश्चात् ज्यों ही कोलाहल प्रारंभ हुआ त्यों ही मैंने विशाल फण वाले सर्प को अपने पिता के शरीर पर डाल दिया। उतर कर मैंने उन्हीं दर्शकों की भीड़ में क्रुद्ध नाग के द्वारा दंशित

अपने पिता को मन्त्रौषधि के प्रभाव से उसी क्षण स्तम्भित कर दिया जिससे नाग का विष चढ़ने न पावे। मेरे पिता पृथ्वी पर मृतक की तरह गिर पड़े। वहाँ मैंने यह चर्चा भी कर दी कि अवश्य इस कामपाल ने अपराध किया है उसका प्रतिफल ईश्वर ने उसे दे दिया है। राजा ने तो इसे नेत्रहीन करने की आज्ञा दी थी। किन्तु दैव ने इसके प्राणों को ही हर लिया। मेरे इस कथन का कोई अनुमोदन करते थे तो कोई निन्दा करते थे। उस भयङ्कर नाग ने चाण्डाल को डस लिया और जब नाग के डर से भीड़ भागी तो रास्ता पार करके वह भी भाग गया।

समास—विहिता जीवस्य रक्षा येनासौ विहितजीवरक्षः (बहुव्रीहि) रूढो यस्त्रासः रूढत्रासः (कर्मधारय) तेन द्रुतो यो लोकरूढत्रासद्रुतलोकः (कर्मधारय) तेन दत्तो मार्गोयस्य सः रूढत्रासद्रुतलोकदत्तमार्गः (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ४६—अथ.......................भगिनीपति।

शब्दार्थ—बोधितार्था = सम्पूर्ण समाचार को जानने वाली। व्यसने = विपत्ति में। नातिविह्वला = घबराहट रहित। कुल परिजनानुयाता = कुल के परिजनों के पीछे चलती हुई। धीरमागत्य = धीरे २ आकर। उत्तमांगम् = मस्तक को। उत्संगेन = गोद में। धारयन्ती = रखती हुई। आसित्वा = बैठकर। समादिशत् = प्रार्थना की। अपकारकर्त्ता = अपकार करने वाला। दैवमेव = ईश्वर ही। जानाति = जानता है। पाणिग्राहकस्य = पति की। अननुप्रपद्यमाना = अनुशरण न करती हुई। कलङ्कयेयम् = कलङ्कित करूँ। अनुमन्तुमर्हसि = अनुमति देने योग्य। भर्त्रासह = पति के साथ। चिताधिरोहणाय = चिता पर चढ़ने के लिये। प्रीतियुक्तः = प्रेम पूर्वक। समादिक्षत = आदेश दिया। क्षितीश्वरः = राजा। पश्चिमम् = पिछला। मे = मेरे। भगिनीपति = बहन के पति, जीजा

भावार्थ—इसके बाद मेरी माता कान्तिमती जिन्हें पूर्णभद्र के द्वारा सारा वृत्त ज्ञात हो चुका था। ऐसे कष्ट के समय में भी नहीं घबरायी तथा अपने वंश के परिजनों के साथ धीरे २ पैरों से ही आकर मेरे पिता के मस्तक को गोद में रखती हुई न बैठकर राजा के पास

प्रार्थना भेजी—"यह मेरे पति आपका अपकार करने वाले हैं या नहीं ईश्वर ही जानता है" मुझे इस चिन्ता से कोई प्रयोजन नहीं है। यदि मैं पाणिग्रहण करने वाले अपने पति का अनुसरण न करूंगी तो आपके कुल को कलङ्कित करने वाली कहलाऊंगी। इसलिये आप मुझे पति के साथ चिता पर चढ़ने के लिये अनुमति देने योग्य हैं।" यह सुन कर प्रेम पूर्वक राजा ने आदेश दिया कि वंश के अनुकूल संस्कार करिये। और उत्सव के बाद कहा कि मेरी बहन के पति का अन्तिम संस्कार विधि से हो।

समास—पूर्णभद्रेण वोधितार्थ पूर्णभद्रवोधितार्था (तृतीया पुरुष। चिताया अधिरोहणाय चिताधिरोहणाय (सप्तमी तत्पुरुष)। प्रीत्या युक्तः प्रीतियुक्तः (तृतीया तत्पुरुष) क्षितेः ईश्वर क्षितीश्वरः (षष्ठी तत्पुरुष) कुले यः उचितः कुलोचितः (कर्मधारय) उत्सवस्य उत्तरम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ४६ ५०—चण्डाले.....................स्थितोऽभूत्।

शब्दार्थ—मत्प्रतिसिद्धसकलमन्त्रवादि प्रयासे—मुझे छोड़कर सब मन्त्र शास्त्रियों के प्रयास करने पर। संस्थिते=मर जाने पर। स्वमाहा-त्म्य प्रकाशनाय=अपनी उदारता दिखाने के लिये। अन्मंस्त=अनुमति दे दी। आनीतः=लाये हुए। विविक्तायाम=एकान्त में।

भावार्थ—मुझे छोड़कर सब मन्त्रशास्त्रियों ने उस दंशित चाण्डाल की झाडफूंक की परन्तु व्यर्थ सिद्ध हुई। "कामपाल को भी काल ने डस लिया है" ऐसा जान करके राजा ने अपनी उदारता दिखाने के लिए कामपाल को घर जाने की अनुमति दे दी। लोगों ने मेरे पिता को ला करके एकान्त भूमितल पर कुशा की शैया पर लिटा दिया।

समास—मया प्रतिषिद्धः मत्प्रतिसिद्धः (तृतीया तत्पुरुष)। सकलानां मन्त्र वादिना प्रयासो यस्मिन तस्मिन मत्प्रतिषिद्धसकलमन्त्रवादि प्रयासे (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ५० अथ.............................अगदत्।

शब्दार्थ—मरणमण्डनमनुष्ठाय=मृत्युकाल का वेश रचकर। सक-

रुणमकरुणा = मुक्त होकर । सखीरामन्त्रय = सखियों को बुलाकर । मुहुरभिप्रणम्य = बार बार प्रणाम करके । यत्ननिवारित परिजनाकुन्दिता = रोते हुए परिजनों को यत्नपूर्वक रोककर । प्राविक्षत् = प्रवेश किया, घुस गई । पूर्णभद्रोपस्थापितेन = पूर्ण भद्र के प्रबन्ध से । वैनस वैनतेयांगतेन = गारुडु विद्या को प्राप्त हुये से । निर्विषीकृतम् = विष रहित किये हुये । ऐक्षत् = देखा । हृष्टतमा = अत्यन्त हर्षित हुई । पादयोः = पैरों में । पय श्रुसुखी = आंसू बहाती हुई । प्राणिपत्य = पड़कर । प्रसुतस्तनी = स्तनों से दूध टपकाती हुई । परिष्वज्य = आलिङ्गन करके । अगदत = कहने लगी ।

भावार्थ—इसके बाद मेरी माता कान्तिमती ने मृत्यु काल का वेष रच करके करूणा युक्त होकर सखियों को बुलाया । भवन देवताओं को बार २ प्रणाम किया यत्न के साथ अपनी सहचरियों के विलाप को रोका तथा मेरे पिता के शयन घर में प्रवेश किया । वहाँ पर मैंने पहले से ही पूर्णभद्र के प्रबन्ध से गारुडिक विद्या द्वारा अपने पिता को विष रहित कर दिया था । माता जी ने उनके दर्शन किये । हर्षित होकर वह आँखों में आँसू भर अपने पति के पैरों में गिर पड़ी । स्तनों से दूध टपकाती हुई मेरा बार २ आलिङ्गन करके तथा हर्षासुओं से गद्‌गद् होकर बोली ।

समास—यत्नेन निवारितं परिजनस्य आकुन्दन ययासा यत्नन्निवारितपरिजनाकुन्दिता (बहुब्रीहि) ।

पृष्ठ ५० पुत्र..................................अजनिष्ट ।

शब्दार्थः— पापया = पापिन से । अतिनिर्घृणाम् = अयन्त निष्करुणा वाली को । अनुगृणासि = दया करते हो । जनयिता = पिता । युक्तम् = उचित । प्रत्यानयनम् = बचा लेना । अन्तकाननात् = यमराज के मुंह से । क्रुरा = निष्ठुर, कठोर । उपलभ्यामि = प्राप्त करके भी । तत्वतः = परिचय । असमर्प्य = न सौंप कर । भाग्यराशेर्विना = भाग्यशालिनी के बिना । कलप्रलापामृतानि अव्यक्त = भाषण रूपी सुधा को । कर्णाभ्याम = कानों द्वारा । पातुम = पीने के लिये । जिघ्रन्ती = सूंघती हुई । अङ्कमारोपयन्ती = गोद में बिठाती हुई । गर्हयन्ती = निन्दा

करती हुई। आलिङ्गयन्ती=आलिङ्गन करती हुई। आश्रुभिरभिसिञ्चती=आंसुओं से सींचती हुई। उत्कम्पिताङ्गयष्टिः=शरीर को कंपाते हुये। अजनिष्ट=हो गई।

भावार्थ—हे पुत्र! तुम क्यों अति निष्करुणा करने वाली मुझ पर करुणा करते हो। क्योंकि मुझ पापिन ने तो तुम्हें पैदा होते ही त्याग दिया था। अथवा तुम्हारे पिता कामपाल निरपराधी हैं। इनको काल के मुंह से बचा लेना योग्य ही है। तारावली यक्षिणी भी बड़ी कठोर है जिसने भगवान कुवेर के द्वारा तुम्हारा परिचय पाकर भी मुझे समर्पित न किया। अपितु देवी वसुमती को समर्पित किया जो उसी के समान योग्यधात्री है। बिना ऐसी भाग्यशालिनी के मेरे समान अल्प पुण्य वाले व्यक्ति तुम्हारे अव्यक्त मधुर भाषण रूपी सुधा को कानों द्वारा पान नहीं कर सकते। यहां आओ आलिङ्गन दो। इस प्रकार उन्होंने बार २ मेरे सिर को सूंघते हुये मुझे गोद में बिठाया। तारावली की निन्दा करते हुये मेरा आलिंगन किया। आंसुओं से मुझे भिगोया। शरीर को कपाते हुये क्षण भर के लिये अन्य की भांति हो गई।

समास—अन्तकस्य आननात् अन्तकाननात् (षष्ठी तत्पुरुष) अल्पं पुण्य यस्यासौ अल्पपुण्यः (बहुव्रीही) कलो यः प्रलापः तदेव अमृत तानि कलप्रलापा=मृतानि (कर्मधारय)। उत्कम्पिता अंयष्टिः यस्याः सा उत्कम्पितांगयष्टिः (बहुव्रीहि)

पृष्ठ ५१ जनयितापि..............................प्राब्रवीत्।

शब्दार्थ—जनयिता=पिता। मे=मेरा। तथाभूतम्=उस प्रकार के। अभ्युदयम्=उन्नति, उत्थान। आरूढ=चढगया, प्राप्त हुआ। पूर्णभद्रेण=पूर्ण भद्र से। विस्तरेण=विस्तार पूर्वक। आवेदित=निवेदन किया हुआ। मघवतः=इन्द्रके। भाग्यवन्तम्=सौभाग्यशाली। आत्मानम्=अपने आपको। अजीगणत्=माना। मनागिव=थोड़ा सा। मत्सम्बन्धम्=मेरे विषय में। आख्याय=कहकर। हर्ष विस्मितात्मनः=हर्ष से प्रसन्न आत्मा वाला। पित्रोः=माता पिता को। अकथयम्=कहा। आज्ञापयतम्=आज्ञा दीजिए। का=क्या। अद्य=

आज। प्रतिपत्तिः = कर्त्तव्य। प्राब्रवीत् = कहा।

भावार्थ—मेरे पिता भी उस प्रकार की आपत्ति से इस प्रकार उत्थान को प्राप्त हो गये जैसे नरक से स्वर्ग में चढ़ गये हों और पूर्णभद्र के द्वारा विस्तार पूर्वक जैसा हुआ था वैसा वृतान्त निवेदित किए हुए उन्होंने अपने आपको भगवान् इन्द्र से भी अधिक सौभाग्यशाली माना। थोड़ा सा अपने सम्बन्ध में बताकर हर्ष से प्रफुल्लित आत्मा वाले मैंने अपने माता पिता से कहा—"आज्ञा दीजिए कि आज हमें क्या करणीय है" तब मेरे पिता जी ने कहा—

समास—हर्षेण विस्मितः आत्मा यस्य स हर्ष विस्मितात्मनः (बहुब्रीहि)।

पृष्ठ ४१—वत्स ! गृहमेव·························मतमन्वमंसि।

शब्दार्थ—वत्स = पुत्र। अस्मदीयम् = हमारा। अतिविशाल प्राकार वलयम् = चारों ओर बहुत बड़े प्राकार वाला। अक्षय्यायुधस्थानम् = समाप्त न होने वाले शस्त्रास्त्रों वाला। अलघ्ङ्यतमा = जिसको पार न किया जा सके। गुप्ति = गुप्तस्थान, किला। उपकृताः—अहसान मन्द किए गए हैं। मया = मैंने, मेरे द्वारा। सामन्ता = मन्त्री, वीर सैनिक। प्रकृतय = प्रजा। भूयस्य = बहुत सी। व्यसनम् = आपत्ति। अनुरुध्यन्ते = अनुरोध करते हैं, रुकावट डालते हैं। सुभटानाम = वीर योद्धाओं के। अनेक सहस्त्रम = कई हजार। अस्त्येव = हैं ही। ससुहृत्पुत्रदारम = मित्रों पुत्रों तथा स्त्रियों से युक्त। कतिपयानि = कुछ। अहानि = दिन। स्थित्वा = रहकर। वाह्याभ्यन्तरान् = बाहरी तथा भीतरी। कोपान् = क्रोध को। उत्पादयिष्यामः = उत्पन्न करेंगे। कुपिताश्च = कुपित हुए। संगृह्य = इकट्ठे करके। प्रोत्साह्य = प्रोत्साहित करके। अस्य = इसके। प्रकृत्य = मित्रान् = स्वाभाविक। शत्रुओं को। उत्थाप्य = उठाकर। सहजांश्चः = स्वाभाविक। द्विषः = शत्रुओं को। दुर्दान्तम = कठिनता से दबाने योग्य। एनम = इसको। उच्छेत्स्यामः = आमूल नाश करेंगे। तथास्तु = ऐसा ही किया जाय। तातस्य = पिता के। मतम—मत को, सलाह को, राय को। अन्वमंसि = अनुमोदन किया।

भावार्थ—"पुत्र ! हमारा यह घर ही चारों ओर अतिविशाल प्राकार (चारदीवारी) से घिरा हुआ तथा समाप्त न होने वाले अनन्त शस्त्रास्त्रों से युक्त स्थान है। यहां ऐसा गुप्त स्थान है कि जिसको शत्रु पार नहीं कर सकते। मैंने बहुत से सामन्तों को अहसानमन्द कर रक्खे हैं। प्रजा बहुत अधिक ऐसी है कि जो आपत्ति में मेरा विरोध हीं करती है कई हजार मेरे ऐसे वीर योद्धा हैं कि जो मित्रों पुत्रों तथा स्त्रियों से युक्त हैं। इसलिये यहीं पर कुछ दिनों तक रहकर बाहरी तथा भीतरी क्रोध को उत्पन्न करें और कुपित हुए उनको इकट्ठा करके स्वाभाविक मित्रों को प्रोत्साहन देकर तथा स्वाभाविक द्वेषियों को उठाकर (भड़काकर) कठिनता से दमन करने योग्य इसका आमूल नाश करें।" "हां इसमें क्या दोष है। ऐसा ही किया जाय" ऐसा कहते हुए मैंने अपने पिता के मत का अनुमोदन किया।

समास—अक्षय्यानां आयुधाना स्थानमिति अक्षय्यायुधस्थानम्। (षष्ठी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ५१—तथास्मासु..............................नारीजनः।

शब्दार्थ—तथा=इस प्रकार। अस्मासु=हमारे। प्रतिविधाय=निश्चित करके। तिष्ठत्सु=बैठे हुए। विज्ञापितोदन्तः=वृत्तांत निवेदित किया हुआ। जातानुतापः=दुःखित हुआ। प्रायः=अधिकतर। प्रायुक्त=प्रयोग किए। अस्माभिः=हमारे द्वारा। प्रत्यहम्=प्रतिदिन। अहन्यन्त=मारे गये। अस्मिन्नेव=इसी। अवकाशे=बीच में, अवसर पर। राज्ञः=राजा के। शय्यास्थानम्=सोने का स्थान। अवगम्य=जानकर। तदैव=तभी। स्वादवसितमिकोणात्=अपने मकान की दीवार के कौने से। आरभ्य=आरम्भ करके। उरगास्येन=सर्प मुख से। अकार्षम्=बनाई। भूमिस्वर्गकल्पम्=भूमि पर ही स्वर्ग के समान। अनल्पकन्यकाजन=अनेक कन्या वाले। उद्देशम=स्थान। अव्यथिष्ट=व्यथित किया। दृष्ट्वैव=देखकर ही।

भावार्थ—हमारे ऐसा करके बैठ जाने पर राजा ने भी इस समाचार से विज्ञापित होकर दुःखित होकर अधिकतर पारमार्थिक प्रयोगों का

उपयोग किया। वे हमारे द्वारा प्रतिदिन मारे गये। इसी बीच में पूर्ण भद्र के द्वारा राजा के शयन का स्थान जानकर तभी मैंने अपने घर की दीवार के कोने से आरम्भ करके सर्पमुख से सुरङ्ग बनाई और वह सुरंग भूमि पर स्वर्ग के समान असंख्य कन्याओं से युक्त किसी स्थान पर चली गई और मुझे देखकर ही वे सब स्त्रियां व्यथित हो गईं।

समास—न अल्पः अनल्पः (नञ् तत्पुरुष) अनल्पः कन्यकाजनः यस्मिन् तम् अनल्प कन्यकाजनम् (बहुव्रीही)।

पृष्ठ ५२—तत्रकाचित् .... आगतोऽसि' इति।

शब्दार्थ—काचित् = कोई। इन्दुकलेव = चन्द्रमा की कला के समान। स्वलावण्येन = अपनी सुन्दता से। निह वाना = दूर करती हुई। मलयमारुतेन = मलयाचल से आई हुई हवा से। मद्दर्शनेन = मुझे देखने से। उदकम्पत = कांपने लगी। अङ्गना समाजे = स्त्रियों के समूह में। कुसुमितेन = खिली हुई, फूल आई हुई। काशयष्टिः—काश का पेड़। पाण्डुशिरसिजा = सफेद बालों वाली। स्थविरा = बुढ़िया। निपत्य = पड़कर। त्रासदीनम् = डर से घबरा कर। अब्रूत = कहा। दीयताम् = दो। अस्मा अनन्यशरणाय (अस्मै अनन्यशरणाय) = इस अन्य शरण से हीन। दनुजयुद्धतृष्णाया = राक्षसों के साथ युद्ध करने की इच्छा से। विविक्षुः = प्रवेश करने का इच्छुक। आज्ञापय = बताइये। कोऽसि = कौन हो। कस्य हेतोः = किस कारण से। आगतोऽसि = आये हो।

भावार्थ—वहां अपने सौन्दर्य से रसातल के अन्धकार को दूर करती हुई चन्द्रमा की कला के समान कान्तिमती कोई कन्या मुझे देखकर इस प्रकार कांपने लगी जैसे मलयाचल की वायु से चन्दनलता कांपने लगती है। उस स्त्रियों के समूह के भी इसी प्रकार भयभीत हो जाने पर फूले हुए काश के पेड़ के समान सफेद बालों वाली कोई बुढ़िया आकर मेरे पैरों में गिर पड़ी और भय के कारण घबराते हुए उसने कहा—"इस अनन्यशरण स्त्री समुदाय को आप अभयदान दे दें। क्या आप कोई देवकुमार हो कि जो राक्षसों के साथ युद्ध की इच्छा से रसातल में

प्रवेश करने के लिए इच्छुक हुए। बताइये, आप कौन हैं? और किस कारण से यहां आये हैं?"

पृष्ठ ५२—सातु मया............................निवसथ' इति।

शब्दार्थ—प्रत्यवादि=उत्तर दिया। सदत्यः=सुन्दर दांतों वाली स्त्रियां। मा=नहीं। भवत्यः=आप। भैषुः=डरो। द्विजातिवृषात्=ब्राह्मण। सत्यर्थे=प्रयोजनवश। उपसरन्=आते हुए। इहान्तरे=यहां बीच में। वो=तुमको। दृष्टवान्=देखा। काःस्थ=कौन हो। यूयम्=तुम सब। इह=यहां।

भावार्थ—मैंने उसे उत्तर दिया—'सुन्दर दांतों वाली स्त्रियों! घबराओ मत। मैं कामपाल नामक ब्राह्मण से कान्तिमती में उत्पन्न अर्थ पाल हूँ। प्रयोजनवश अपने घर से सुरंग के द्वारा राजा के घर में जाते हुए यहां रास्ते में मैंने तुम्हें देखा है। बताओ, तुम कौन हो और यहां क्यों रहती हो?

पृष्ठ ५२—सोदञ्जलिः..............................अगमत्।

शब्दार्थ—सोदञ्जलिः—मस्तक से अञ्जलि लगाये हुए। उदीरितवती=कहा। भाग्यवत्यः=सौभाग्यशालिनी। याः=जो। एभिरेव=इन्हीं। चक्षुर्भि=आंखों से। अनघम्=निष्पाप। अद्राक्ष्म=देखा। श्रूयताम्=सुनो। मातामहः=नाना। अपत्यद्वयम=दो सन्तान। उदपादि=उत्पन्न की। अत्यासङ्गात्=अत्यन्त आसक्ति होने के कारण। राजयक्ष्मणा=तपेदिक। सुरक्षयमगात्=मर गया। अन्तर्वत्न्याम्=गर्भवती होने पर। अमुया=इससे। प्रसूता=उत्पन्न हुई। प्रसववेदनया=जनपीड़ासे। मुक्तजीविता=जीवनसे मुक्त हुई। अन्तिकम्=पास।

भावार्थ—उसने सिर से अञ्जलि बांध कर कहा—'कुमार! हम भाग्यवती हैं कि जिन्होंने इन्हीं आंखों से तुम को देखा। सुनो चण्डसिंह नाम के जो तुम्हारे नाना थे उन्होंने इस देवी लीलावती में चण्ड घोष तथा कान्तिमती दो सन्तान उत्पन्न की थीं। युवराज चण्डघोष तो स्त्रियों में अत्यधिक आसक्त होने के कारण देवी आचारवती को गर्भवती छोड़कर तपेदिक से मर गया और इस (आचारवती) से यह

मणिकर्णिका नाम की कन्या उत्पन्न हुई। तब जनन की पीड़ा से जीवन से मुक्त होकर आचारवती भी अपने पति के पास (स्वर्ग में) चली गई।

पृष्ठ ५३—अथ देव.............................कुमारेणैव' इति।

शब्दार्थ—आहूय=बुला कर। उपह्वरे=पास में। समाज्ञापयत्=आज्ञा दी। कल्याणलक्षणा=शुभ लक्षणों वाली। विधिवत्=वेदोक्त विधि के अनुसार। वर्धयित्वा=बढ़ा कर, पालन पोषण करके। दित्सामि=देने चाहता हूँ। बिभेमि=डरता हूँ। प्रकाशावस्थापनात्=प्रकाश रूप में रखने से। अराति व्यसनाय=शत्रु से की हुई आपत्ति के समय के लिए। कारिते=बनवाये हुए। कृत्रिमशैलगर्भोत्कीर्ण नाना मण्डप प्रेक्षागृहे=बनावटी पहाड़ के बीच में अनेक मण्डपों तथा प्रेक्षागृहों वाले। प्रचुरपरिबर्हया=बहुत अधिक सेवा शुश्रूषा से। सवर्ध्यताम=पालन करो। वर्षशतेन=सौ वर्षों से। अक्षय्यम्=समाप्त न होने योग्य। द्वयङ्गुलभित्तौ=दो अंगुल दीवार में। अर्धपादम्=छेद को। उद्धृत्य=हटा कर। अस्मान्=हमको। अवीविशत्=घुसा दिया, प्रवेश करा दिया। नः=हमारे। वसन्तीनाम्=निवास करती हुई। द्वादशसमाः=बारह वर्ष। समत्ययुः=बीत गये। तरुणीभूता=जवान हो गई है। स्मरति=याद करता है। त्वदम्बया=तेरी माता ने। गर्भस्थैव=गर्भ में रहती हुई को ही। द्यूतजिता=जुए में जीत ली गई। स्वमात्रा—अपनी माता से। तवैव=तेरी ही। जायात्वेन=पत्नी रूप में। समकल्प्यत=संकल्प किया था। तदत्र=तो इस विषय में। प्राप्तरूपम्=उचित। चिन्त्यताम्=विचार किया।

भावार्थ—इसके बाद महाराज चण्डसिंह ने मुझे अपने पास बुला कर आज्ञा दी—"ऋद्धिमती! यह कन्या शुभ लक्षणों से युक्त है इसको मैं विधिवत् पालन-पोषण करके मालवराज के पुत्र दर्पसार को देना चाहता हूँ। परन्तु कान्तिमती की घटना से कन्याओं को प्रकाश रूप में रखने से मैं घबराता हूँ। अतः शत्रुओं से उत्पन्न आपत्ति के समय रक्षा के लिये बनवाये हुए बनावटी पर्वत के बीच में बहुत से मण्डपों तथा

प्रेक्षागृहों वाले महान् भूमि में अन्दर बने हुए घर में बहुत सेवा से तुम इसका पालन-पोषण करो। यहाँ पर सैंकड़ों वर्ष के भोग से भी समाप्त न होने योग्य भोग की सामग्री है।" ऐसा कह कर उसने अपने निवास के घर की दो अँगुल दीवार में छेद के ताले को खोलकर उसी दरवाजे से हम लोगों को इस स्थान में प्रवेश करा दिया। यहाँ रहते हुए हमें बारह वर्ष हो गये हैं। आज तक भी राजा हमें याद नहीं कर रहा है। इधर यह भी पुत्री जवान हो गई है। इसके बाबा ने इसको दर्पसार के लिए दृढ़ संकल्प किया था उधर तुम्हारी माता कान्तिमती ने जब यह गर्भ में ही थी तब जुए में जीत लिया था तब इसकी माता ने इसका तुम्हारे लिए ही पत्नी रूप में देने का संकल्प किया था तो अब इस विषय में जो उचित हो उसका कुमार ही विचार करें।

समास—कृतिमश्चासौ शैलः (कर्मधारय) तस्य गर्भ इति कृत्रिम-शैलगर्भः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् उत्कीर्णानि इति कृत्रिमशैलगर्भोत्-कीर्णानि (सप्तमी तत्पुरुष)। कृत्रिमशैलगर्भोत्कीर्णानि नाना मण्डप प्रेक्षागृहाणि यस्मिन् तत् कृत्रिमशैलगर्भोत्कीर्णानाना मण्डप प्रेक्षागृहम् तस्मिन् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ५२—तां पुनरवोचत......... ....बिलकथाम्।

शब्दार्थ—अवोचम्=कहा। साधयित्वा=सिद्ध करके। प्रतिनिवृत्तः =लौटा हुआ। यथार्हम्=जो उचित होगा। प्रतिपत्स्ये=करूँगा। दीप-दर्शितबिलपथेन=दीपक के प्रकाश से दिखाये हुए बिल के रास्ते से। प्रत्युद्धृत्य=खोल कर। वासगृहम=निवास का घर। विश्रब्धसुप्तम्=निश्चिन्त (विश्वास के साथ) सोये हुए। जीवग्राहमग्रहीषम=जीवित पकड़ लिया। आकृष्य=खींचकर। अहिमिव=साँप की तरह। अहि-शत्रुः=गरुड़। स्फुरन्तम्=लोचते हुए। अमुनैव=इसी। भित्तिरन्ध्र-पथेन=दीवार के छेद के रास्ते से। स्त्रैणसन्निधिम्=स्त्रियों के समुदाय के पास। अनैषम=ले आया। आनीय=लाकर। आयसनिगडसन्दित-चरणयुगलम्=लोहे के बन्धनों से बँधे हुए दोनों पैरों वाला। अव-

नमितमलिनवदनम्—म्लान मुख को नीचे किये हुये। अश्रुबहलरक्त-चक्षुषम्=आँसू बहाने से लाल आँखों वाला। जनयित्रोः=माता-पिता को। अदर्शयम्=दिखाया। बिलकथाम्=बिल की घटना।

भावार्थ—मैंने फिर उससे कहा—"आज ही राजगृह में कुछ काम सिद्ध करके लौटा हुआ मैं आपके विषय में जो उचित होगा, करूँगा"। फिर दीपक के द्वारा दिखाये गये उसी बिल के रास्ते से जाकर आधी रात के समय उसी अर्धपाद को खोलकर निवास के घर में घुस कर मैंने निश्चिन्त सोये हुए सिंहघोष को जीवित पकड़ लिया और गरुड़ जैसे साँप को पकड़ लेता है इसी प्रकार लोचते (छटपटाते) हुए उसको खींचकर उसी दीवार के छेद के रास्ते में स्त्री समुदाय के पास ले आया। वहाँ से उसे अपने भवन में लाकर लोहे के बन्धनों से बँधे दोनों पैरों वाले, लज्जा के कारण नीचे झुकाये हुए म्लान मुख वाले तथा आँसू बहाने से लाल हुई आँखों वाले उसको एकान्त में माता-पिता को दिखाया और उन्हें बिल की घटना सुनाई।

समास—आयश्चासौ निगडइति आयसनिगडः (कर्मधारय) तेन सन्दितं चरणयुगलं यस्य तम् आयसनिगडसन्दितचरणयुगलम (बहुव्रीहि) मलिन्नयत् वदनमिति मलिनवदनम (कर्मधारय) अवनमितं मलिनवदनं यस्य तम् मलिनवदनम् (बहुव्रीहि)।

पृष्ठ ५४—अथ पितरौ..................प्रणनाम।

शब्दार्थ—पितरौ=माता पिता। प्रहृष्टतरौ=अति प्रसन्न हुए। निकृष्टाशयम्=दुराशय, नीच को। निशाम्य=खींचकर। नियम्य=बाँध कर। दारिकायाः=पुत्री का। यथार्हेण=यथोचित। पाणि-मग्राहयेताम=विवाह कर दिया। अनाथम्=राजाहीन। अस्मदायत्तम् =मेरे आधीन। जातम्=होगया। प्रकृति कोपभयात=प्रकृति के क्रोध के डर से। मन्मात्रा=मेरी माता ने। मुमुक्षितः=मोक्ष की इच्छा करने वाला। न मुक्त=नहीं। अभूवम=हुआ था। भवत्पादपङ्कजरजोऽनु-ग्राह्यः=आपके चरण कमलों की धूल से अनुगृहीत होने योग्य। अभू-तिष्ठतु=करें। सर्वदुश्चरितक्षालनम्=सब पापों का प्रक्षालन। अनार्यः

=दुष्ट। प्रणनाम=प्रणाम किया।

भावार्थ—इसके पश्चात् अति प्रसन्न हुए मेरे माता पिता ने उस नीच को खींचकर बन्धन में बाँध कर उसी कुमारी का यथोक्त रीति से मेरे साथ विवाह कर दिया। राजाहीन (अनाथ) उसका राज्य भी हमारे ही आधीन हो गया। प्रकृति के कोप के भय से मेरी माता ने मोक्ष का इच्छुक होने पर भी उसको नहीं छोड़ा।

और मैं आपके चरण कमलों की धूल से अनुगृहीत होने के योग्य हूँ। वह दुष्ट सिंहघोष अब आपके चरणों म प्रणामरूप प्रायश्चित करके अपने पापों का प्रक्षालन करे ऐसा कहकर अर्थपाल ने अञ्जलि बाँध कर प्रणाम किया।

समास—भवतः पादपङ्कजौ इति भवत्पादपंकजौ (षष्ठी तत्पुरुष) तयोः रजांसि इति भवत्पादपंकजरजांसि (षष्ठी तत्पुरुष) भवत्पादपङ्कज-रजोभिः अनुग्राह्यः इति भवत्पादपंकजरजोऽनुग्राह्यः (तृतीया तत्पुरुष)।

पृष्ठ ५४—देवोऽपि..................................राजवाहनः।

शब्दार्थ—पराक्रान्तम्=पराक्रम किया। बहूपयुक्ता=बहुत उपयुक्त। अभिधाय=कहकर। भूयः=फिर। प्रीतिस्मेरः=प्रेम की मुसकान से युक्त। प्रस्तूयताम=प्रस्तुत करो। शुश्राव=सुना। उदन्तजातं=वृतान्त।

भावार्थ—महाराज राजवाहन ने भी 'बहुत पराक्रम दिखाया, बुद्धि भी बहुत उपयुक्त है बन्धन युक्त हुआ तुम्हारा श्वसुर मुझे देखे (मुझसे) मिले)" ऐसा कहकर फिर प्रमति की ओर ही देखते हुए प्रेमभरी मुस्कान के साथ 'तुम भी अपना चरित्र प्रस्तुत करो' ऐसी आज्ञा दी इस प्रकार राजवाहन ने क्रमशः उपहार वर्मा अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त तथा विश्रुत द्वारा वर्णन किया गया उनका अपना २ वृत्तान्त सुना।

दश कुमारों को राज हंस का आज्ञापत्र

पृष्ठ ५५—ततस्ते..................................अवाचयत्।

शब्दार्थ—ते=वे सब। सङ्गताः=मिल गये। उपभुञ्जानम्=उपभोग करते हुए। आनाय्य=बुलवाकर। सम्भूय=होकर। मिथः=परस्पर, आपस में। प्रमोद संवलिता=आनन्दपूर्ण। यावत्=जब तक।

विदधति=करते हैं। तावत्=तब तक। व्यजिज्ञापन्=निवेदन किया। गृह्यताम्=ग्रहण करो, लो। आकर्ण्य=सुनकर। उत्तार्य=उतार कर। उत्कील्य=खोलकर। अवाचयत्=पढ़ा।

भावार्थ—तब इकट्ठे हुए अपहार वर्मा, उपहार वर्मा अर्थपाल, प्रमति मित्रगुप्त, मन्त्र गुप्त तथा विश्रुत इन सब कुमारों ने पहले से निश्चित किए हुए संकेत स्थान पर पाटलीपुत्र में चञ्चल नेत्रों वाली भार्या के साथ युवपद के सुख का उपभोग करते हुए कुमार सोमदत्त के। सेवकों के द्वारा बुलवाकर राजवाहन के सहित इकट्ठे होकर बैठे हुए आपस में तब तक आनन्दपूर्ण कथाएं (बात चीत) कर ही रहे थे कि तब ही पुष्पपुर से राजा राजहंस का आज्ञापत्र लेकर आये हुए राजपुरुषों ने प्रणाम करके राजवाहन से निवेदन किया—"स्वामिन्! अपने पिता राजा राजहंस का यह आज्ञा पत्र लीजिए।" यह सुनकर खड़े होकर और बारबार प्रणाम करके सभा के बीच में उस आज्ञापत्र को ग्रहण किया। उसको सिर पर रखकर फिर उतार कर खोल करके राजा राजवाहन ने सबको सुनाते हुए पढ़ा।

पृष्ठ ५३—स्वस्ति.................................पेयम् इति।

शब्दार्थ—स्वस्ति=कल्याण। अधिवसतः=रहने वाले। आशास्य=आशीर्वाद देकर। प्रेषयति=भेजता है। आमन्त्र्य=आमन्त्रित करके। प्रस्थिताः=गये हुए। पथि=रास्ते में। उपशिवालयम्=शिवालय के पास। स्कन्धावारम=सेना का पड़ाव। अवस्थाप्य=स्थापित करके, डालकर। निशि=रात में। अनुपलभ्य=नपाकर। प्रणंस्यामः=प्रणाम करेंगे। त्यक्ष्यामः=त्याग देंगे! प्रतिज्ञाय=प्रतिज्ञा करके। परावर्त्य=लौटाकर। अन्वेष्टुम=खोजने के लिये। प्रत्यावृत्तानाम=लौटे हुए। दुःखोदन्वति=दुःख के सागर में। मग्नमनसौ=डूबे हुये मन वाले। युष्मज्जननी=तुम्हारी माता। विदितं विधाय=ज्ञान कराकर। त्रिकालवेदिना=भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालों के ज्ञान वाले। अस्मन्मनीषीतम्=हमारे मनोरथ को। अवबुध्य=जानकर। प्रावाचि=कहा। अज्ञायि=जान लिया। कियन्तम=कितने ही। अनेहसम्=काल, समय

को। आपदम=आपत्ति को। आसाद्य=प्राप्त करके। विक्रमेण=वीरता से विहित। दिग्विजयाः=दिग्विजय किये हुये। प्रभूतानि=बहुत से। षोडशाब्दान्ते=सोलहवें वर्ष के अन्त में। पुरस्कृत्य=आगे आगे करके। प्रत्येत्य=लौट कर। अभिवाद्य=प्रणाम करके। भवदाज्ञा विधायिनः=आपके आज्ञा पालक। विधेयम्=करना चाहिए। तत्प्रत्ययात्=उसके विश्वास से। धैर्यमवलम्ब्य=धीरज धरकर। अधप्रभृति=आज तक। विज्ञप्तिः=निवेदन। दुर्जयान्=कठिनता से जीतने योग्य। विधाय= करके। भूवलयम्=भूमण्डल को। प्रेष्यन्ताम्=भेजदो। आकारणाय=बुलाने के लिये। यूयम्=तुम लोग। विधास्यथ=करोगे। श्रोष्यथ=सुनोगे। पेयम=पीना।

भावार्थ—कल्याण। श्री पुष्पपुमार नाम की राजधानी से श्री राजहंस नाम के राजा, चम्पा नगरी में रहने वाले राजवाहन आदि कुमारों को आशीर्वाद देकर आज्ञा पत्र प्रेषित करते हैं। जो इस प्रकार है जब तुम लोग यहां से मुझे आमन्त्रित करके प्रणाम पूर्वक गये तो रास्ते में किसी वन में शिव मन्दिर के पास सेना का पड़ाव डाल कर ठहर गये। वहां पूजा के लिये रात में शिव जी के मन्दिर में बैठे हुए राजवाहन को प्रातःकाल में न पाकर शेष सब कुमारों ने 'हम राजवाहन के साथ ही राजहंस को प्रणाम करेंगे नहीं प्राण त्याग देंगे' ऐसी प्रतिज्ञा की और सेना को वापिस लौटा कर राजवाहन का खोजने के लिए अलग अलग चल दिए। इस प्रकार वहां से लौटे हुए सैनिकों के मुख से तुम्हारा वृत्तांत सुन कर दुःख के समुद्र में डूबे हुए मन वाले मैं और तुम्हारी माता दोनों "बामदेव ऋषि के आश्रम में जाकर और उन्हें इस वृत्तांत का ज्ञान कर कराकर हम दोनों अपने प्राणों का त्याग करेंगे" ऐसा निश्चय करके उस आश्रम में गये और उस मुनि वामदेव को प्रणाम करके जैसे ही बैठे तैसे तीनों कालों के ज्ञान वाले इस मुनि ने हमारे मन से अभिलाषित निश्चय को समझ कर कहा— 'हे राजन्! मैंने पहले से ही तुम्हारे मनोरथ को विज्ञान के बल से जान लिया था। ये आपके कुमार राजवाहन के लिए कुछ काल तक आपत्ति को प्राप्त करके

भाग्य का उदय हो जाने से अपने असाधारण विक्रम से दिग्विजय करके बहुत से राज्यों को प्राप्त कर विजयी राजवाहन को आगे आगे करके लौट कर सोलवें वर्ष के अन्त में तेरे तथा वसुमती के चरणों को प्रणाम करके आपके आज्ञाकरी होंगे। इसलिए उनके लिए तुम्हें कोई भी दुःसाहस नहीं करना चाहिये।" यह सुनकर उस मुनि के विश्वास से धीरज धारण करके मैं और वसुमती आज तक प्राण धारण किए हैं। अब उस सालह वर्ष अवधि के निकट होने पर वामदेव के आश्रम में जाकर मैंने फिर निवेदन किया कि स्वामिन्। आपके कथन की अवधि प्रायः पूर्ण हो गई है उनकी प्रवृत्ति आप आज भी जानते हैं। यह सुनकर मुनि ने कहा— 'राजन्! राजवाहन प्रमुख सब कुमार अनेक दुर्जय शत्रुओं को जीत कर दिग्विजय करके सम्पूर्ण भूमण्डल को वश में करके चम्पा में एकत्रित हो गये हैं। अतः अपना आज्ञापत्र लेकर उनको लाने के लिये शीघ्र सेवकों को भेज दो'। मुनि के इस वचन को सुन कर आपके बुलाने के लिये आज्ञापत्र भेजा जा रहा है। इस से आगे यदि तुम क्षण भर की बिलम्ब करोगे तो मुझको तथा अपनी माता वसुमती को कथावशेष मात्र (मृत) सुनोगे यह समझ कर तुम्हें पानी भी रास्ते में आकर ही पीना चाहिये।

पृष्ठ ५७—एवपितुः ....प्रास्थितः।

शब्दार्थ—पितुः=पिता को। मूर्ध्नि=सिर पर। विधृत्य=रख कर। गच्छेम=चले। चक्रुः=किया। वश कृतराज्यरक्षा पर्याप्तानि=वश में किए हुए राज्यों की रक्षा के लिए काफी। सैन्यानि=सैनिक। समर्थतरान्=बलवान्। आप्तान्=यथार्थ। नियुज्य=नियुक्त करके। कियता=कुछ। पराजित्य=पराजित करके। तदपि=उसको भी। नमस्यामः=प्रणाम करेंगे। स्वस्वभार्या संयुताः=अपनी अपनी पत्नियों के सहित। परिमितेन=सीमित। प्रस्थिताः=प्रस्थान कर दिया, चढाई की।

भावार्थ—इस प्रकार पिता के आज्ञापत्र को सिर पर रख कर 'चलना चाहिए' ऐसा निश्चय किया। इसके बाद जीत कर वश में किए हुए

राज्यों की रक्षा के लिए काफी सैनिकों बलवान यथार्थ पुरुषों को स्थान पर नियुक्त करके कुछ सेना से रास्ते की रक्षा करके अपने पहले शत्रु मालव देश के राजा मानसार को पराजित करके तथा उस राजा को भी वश में करके पुष्पपुर में महाराज राजहंस तथा देवी वसुमती के चरणों में प्रणाम करेंगे। ऐसा निश्चय करके अपनी अपनी पत्नियों के सहित उन सब कुमारों ने सीमित सेना के साथ मालराज पर चढ़ाई करदी।

समास—वशीकृतानि च यानि राज्यानि इति वशीकृतराज्यानि (कर्मधारय) तेषां रक्षेति वशीकृतराज्यरक्षा (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मै पर्याप्तानि इति वशीकृतराज्यरक्षा पर्याप्तानि (चतुर्थी तत्पुरुष)।

पृष्ठ ५७—प्राप्य च..................................निहतश्च।

शव्दार्थ—प्राप्य=प्राप्त करके। परिवृतेन=घिरे हुये, साथ में रहते हुए। पराजिग्ये=पराजित कर दिया। निहतश्च=और मार दिया।

भावार्थ—और शब ही उज्जयिनी पहुँच कर सहायक रूप उन कुमारों से घिरे हुए राजवाहन ने अत्यन्त बलवान होने पर भी मालव राज मानसार को क्षण भर में पराजित कर दिया और मार दिया।

पृष्ठ ५७—ततद् स्तहितरम्..................................अभिवन्दितवन्तः।

शव्दार्थ—तद् हितरम्=उसकी पुत्री को। समादाय=लेकर। कारागृहे=कैद में। रक्षितम्=रक्खे हुए। उन्मोचितम्=छुड़ाये हुए। नीत्वा=लेकर। समेत्य=आकर। अभिवन्दितवन्तः=वन्दना की, प्रणाम किया।

भावार्थ—इसके पश्चात् उसकी पुत्री अवन्ति सुन्दरी को लेकर चण्डवर्मा से इसके मन्त्री द्वारा कैद में रक्खे हुए कुटुम्ब सहित कुमार पुष्पोद्भव को कैद से मुक्त करा कर उसे अपने साथ ले लिया और मालव राज के राज्य पर भी अधिकार करके उसकी रक्षा के लिये सेना सहित पुष्पपुर में पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने राजवाहन को आगे-आगे [उसको अग्रेसर बनाकर] महाराज राजहंस तथा माता वसुमती के चरणों में प्रणाम किया।

पृष्ठ ५७—तौ च..................................आगन्तव्यम् इति।

शब्दार्थ—पुत्रसमागमम् = पुत्रसङ्गम । अधिगतौ = प्राप्त हुए । समक्षम् = आँखों के सामने । कशानपि = दशों की । विज्ञाय = जान कर । आज्ञापयत् = आज्ञा दी । आगन्तव्यम् = आजाय ।

भावार्थ—वे दोनों पुत्र के सङ्गम को प्राप्त करके अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुए । तब राजा तथा देवी वसुमती की आँखों के सामने वामदेव ने राजवाहन प्रमुख दशों कुमारों की इच्छा को जानकर उनको आज्ञा दी—"आप सब लोग एकबार जाकर अपने २ राज्यों का न्याय पूर्वक पालन करो फिर जब इच्छा हो माता पिता के चरणों में प्रणाम करने के लिये आजायें" ।

पृष्ठ ५८—ततस्ते..................आप्नुताम् ।

शब्दार्थ—शिरस्याधाय = सिर पर रखकर, आदर पूर्वक स्वीकार करके । प्रत्यागमनान्ते = लौटते समय । न्यवेदयन् = निवेदन किया । निजपराक्रमावबोधकानि = अपने पराक्रम को प्रकट करने वाले । अतिदुर्घटानि = अति गूढ़ । आप्नुताम् = प्राप्त हुए ।

भावार्थ—इसके बाद वे सब कुमार उस मुनि के उस वचन को नतमस्तक स्वीकार करके मुनि को तथा माता-पिता को प्रणाम करके चले गये और दिग्विजय करके लौटकर आकर सब ने अपना २ अलग-अलग वृत्तान्त मुनि के सामने निवेदन किया । उनके माता ने कुमारों के पराक्रम प्रकट करने वाले अति दुर्घट चरित्रों को सुनकर अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया ।

पृष्ठ ५८ ततो राजा ....अधिगतम ।

शब्दार्थ—व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया । तव = तुम्हारे । प्रसादात् = प्रसन्नता से, कृपा से । अस्माभिः = हमने । मनुजमनोरथाधिकम् = = मनुष्य की इच्छा से अधिक । अवाङ्मनसगोचरम् = वाणी और मन से अगोचर । अधिगतम् = प्राप्त किया ।

भावार्थ—तब राजाने नम्रतापूर्वक मुनि से निवेदन किया—"हे भगवान ! आपकी कृपा से हमने मनुष्य की इच्छा से अधिक तथा वाणी और मन से अगोचर सुख प्राप्त किया ।"

पृष्ठ ५६—अतःपरम्..................................स्वामिना' इति।

शब्दार्थ—स्वामिचरणसन्निधौ=स्वामी के पास में। अधिगत्य=स्वीकार करके। आत्मसाधनम्=साधना. आत्मचिन्तन। अभिषिच्य=अभिषेक करके। सम्प्रदाय=देकर। राजकुमाराज्ञाविधायिनः=राजवाहन के आज्ञाकारी। चतुरुदधिमेखलाम्=चार समुद्रों से घिरी हुई। वसुन्धराम्=पृथ्वी को। समुद्धृत्य=निकाल कर, दूर करके। कण्टकान्=काँटों को, शत्रुओं को। उपभुञ्जन्ति=भोग करें।

भावार्थ—इससे आगे अब स्वामी के चरणों में वाणप्रस्थ आश्रम को स्वीकार करके आत्मचिन्तन ही मेरे लिये उचित है अतः पुष्पपुर तथा मानसार के राज्य पर राजवाहन का अभिषेक करके अवशिष्ट राज्य नौ कुमारों को यथोचित देकर दिये जायें और ये सब कुमार राजवाहन के आज्ञाकारी होकर एक मति से रहते हुए चारों समुद्रों से घिरी हुई पृथ्वी को शत्रुओं को नष्ट करके भोग करें ऐसा स्वीकार करें।

पृष्ठ ५६—तेषाम्..................अवाप्स्यन्ति इति।

शब्दार्थ—ग्रहणोपक्रमनिषेधे=ग्रहण की तैयारी से इन्कार। भूयांसम्=बहुत अधिक। आग्रहम्=जिद। वयः समुचिते=अवस्था [उम्र] के अनुरूप। पथि=रास्ते में। कायक्लेशम्=शारीरिक कष्ट। मदाश्रमस्थ=मेरे आश्रम में स्थित। चिकीर्षुः=करने का इच्छुक। भवद्भिः=आप सब से। न निवारणीयः=रोका नहीं जाना चाहिये। अयम्=यह। उपलप्स्यन्ति=प्राप्त करेंगे।

भावार्थ—[उन कुमारों] के अपने पिता के वानप्रस्थाश्रम को ग्रहण करने उपक्रम [तैयारी] के निषेद में बहुत अधिक आग्रह को देखकर मुनि ने उनसे कहा—'हे कुमारों! यह आपका पिता अपनी आयु के अनुरूप इस मार्ग में वतमान होकर शारीरिक कष्ट के बिना ही मेरे आश्रम में स्थित वानप्रस्थ आश्रम को ग्रहण करने का इच्छुक किसी प्रकार आपको रोकना नहीं चाहिये। यहाँ पर रहता हुआ यह भगवान की भक्ति को प्राप्त करेगा। और आप लोग पिता के समीप में सुख प्राप्त नहीं करेंगे।

पृष्ठ ५६—महर्षे..............................अकुर्वन् ।

शब्दार्थ—महर्षेः=महर्षि की । अधिगम्य=स्वीकार करके । वानप्रस्थाश्रमाधिगम प्रतिषेधाग्रहम्=वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश से निषेध का आग्रह । अत्यजन्=छोड़ दिया । अवस्थाप्य=स्थापित करके । तदनुज्ञया =उसकी आज्ञा से । गतागतम्=आनाजाना, यातायात ।

भावार्थ—महर्षि वामदेव की आज्ञा मान कर उन्होंने पिता के वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने से निषेध के आग्रह को छोड़ दिया । तब राजवाहन को पुष्पपुर में स्थापित करके सभी परिजन अपने-अपने राज्यों का पालन करके इच्छानुसार माता-पिता के पास में आते जाते रहे ।

समास—वानप्रस्थाश्रमास्यधिगम इति वानप्रस्थाश्रमाधिगमः (षष्ठी तत्पुरुष) तस्मिन् प्रतिषेध इति वानप्रस्थाश्रमाधिगम प्रतिषेधः (सप्तमी तत्पुरुष) तस्य आग्रह इति वानप्रस्थाश्रमाधिगम प्रतिषेधाग्रहः (षष्ठी तत्पुरुष) ।

पृष्ठ ६०—एवमवस्थिता..............................अन्वभूवन् ।

शब्दार्थ—परिपालयन्तः=पालन करते हुए । ऐकमत्येन=संङ्गठन से । पुरन्दर प्रभृतिभिः=इन्द्र आदि देवताओं से भी ।

भावार्थ—इस प्रकार स्थित हुए वे राजवाहन प्रमुख सब कुमार राजवाहन की आज्ञा से सम्पूर्ण भूमण्डल का न्यायपूर्वक पालन करते हुए तथा आपस में एकता से रहते हुए इन्द्रादि देवताओं को भी दुर्लभ सुखों का उपभोग करने लगे ।

❀ समाप्त ❀

रघुनाथप्रसाद 'बंसल' द्वारा कमल मुद्रण सदन सहारनपुर में मुद्रित ।